# शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

https://epaper.shubhamsandesh.net

रांची, शनिवार 09 अगस्त 2025 ● श्रावण पूर्णिमा, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 123 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

# याद रहे, आदिवासियत से ही बचेगी दुनिया

सुधीर पाल

21वीं सदी के इस शोर-गुल में जहां पूरी दुनिया तकनीक, मुनाफा और विकास की रफ्तार पर सवार है—वहीं पृथ्वी की सांसें धड़कनों से तेज़ हांफ रही हैं. वायुमंडल गर्म हो रहा है, नदियां सूख रही हैं, पेड़ कट रहे हैं, और जानवरों की प्रजातियां गुम होती जा रही हैं. जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की आशंका नहीं—वर्तमान की त्रासदी है. इस विनाश के बीच अगर धरती अब भी जीवित है—तो उसका श्रेय उन लोगों को जाता है जो धरती को माता और जंगल को देवता मानते आए हैं. यही लोग हैं जिन्हें हम 'आदिवासी' कहते हैं—और जिनकी जीवनशैली में ही वह 'मंत्र' छिपा है जो आज दुनिया को बचा सकता है.

ठीक आदिवासी दिवस के करीब हजारों आदिवासी हसदेव अरण्य क्षेत्र को बचाने के लिए लड़ रहे हैं. छत्तीसगढ़ सरकार ने हसदेव अरण्य क्षेत्र में केंटे विस्तारित कोयला परियोजना को मंजूरी दे दी है. इसके लिए 1742 हेक्टेयर घने वन भूमि को नष्ट करना आवश्यक है. यह मंजूरी सरगुजा जिला वन अधिकारी द्वारा स्थल के तथाकथित निरीक्षण के बाद दी गई है. यदि यह परियोजना लागू हो जाती है, तो पहले से ही बुरी तरह प्रभावित उन क्षेत्रों में और भी ज़्यादा तबाही मच जाएगी जहां खनन कार्य चल रहा है. आधिकारिक निरीक्षण रिपोर्ट के अनुसार, कम से कम 4.5 लाख पेड़ काटे जाएंगे. ये पेड़ घने जंगल में हैं, जहां कार्बन अवशोषण के लिए महत्वपूर्ण देशी पेड़ बहुतायत में हैं. इस क्षेत्र में खुले में खनन से पहले ही हज़ारों पेड़ नष्ट हो चुके हैं, पानी और ज़मीन प्रदूषित हो चुकी है. इसके अलावा, इन परियोजनाओं को संबंधित ग्राम सभाओं की राय और संविधान व कानूनी ढांचे के उन प्रावधानों की अनदेखी करके शुरू किया जा रहा है जो ग्राम सभाओं की सहमति को अनिवार्य बनाते हैं. ओपन कास्ट माइनिंग वास्तविक परियोजना से परे एक बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र को प्रभावित करती है. इसलिए, भले ही इस विशिष्ट क्षेत्र में मानव बस्ती नगण्य हो, लेकिन क्षेत्र के बाहर के कई गांव इससे बुरी तरह प्रभावित होंगे. स्थानीय समुदायों की ओर से सरकार को 1500 से ज़्यादा लिखित आपत्तियां दी गई थीं. लेकिन इन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया गया.

विश्व आदिवासी दिवस आज



विडंबना देखिए आप जब इन पंक्तियों को पढ़ रहे होंगें, छत्तीसगढ़ सरकार विश्व आदिवासी दिवस पर एक भव्य और ऐतिहासिक जश्न मना रही है. हजारों आदिवासी अब भी नहीं समझ पा रहे हैं कि यह आदिवासी दिवस आदिवासियों के लिए है या हसदेव के जंगलों को तबाह, बरबाद करने का उत्सव है. -शेष पेज 09 पर

### आदिवासी होना क्या है?

'आदिवासी' केवल एक जनजातीय समुदाय नहीं है—यह एक जीवनशैली, एक सभ्यता और एक सोच है, जिसमें संरक्षण, सहजीवन और संवेदना के बीज छिपे हैं. जब हम कहते हैं "आदिवासियत से ही बचेगी दुनिया", तो उसका अर्थ यह नहीं कि दुनिया को आदिवासी बन जाना चाहिए, बल्कि यह कि दुनिया को आदिवासी सोच से जीना सीखना होगा. जहां पेड़ काटने से पहले उससे क्षमा मांगी जाती है. जहां हर जीव, हर नदी, हर पहाड़ एक रिश्ते के रूप में देखा जाता है. जहां 'पाया नहीं, साझा किया जाता है'—और विकास का अर्थ लूट नहीं, लय होता है.

### संख्या में छोटे, मूल्य में बड़े

भारत में लगभग 10 .5 करोड़ आदिवासी हैं—कुल जनसंख्या का लगभग 8 .6% . ये लोग 700 से अधिक जनजातियों में विभाजित हैं, लेकिन एक चीज़ इन सभी को जोड़ती है—प्रकृति से गहरा रिश्ता. ये वे लोग हैं जिनका कोई कार्बन फुटप्रिंट नहीं, फिर भी जलवायु न्याय की सबसे बड़ी कीमत ये ही चुकाते हैं. ये वो लोग हैं जिन्होंने कभी जंगल पर अधिकार नहीं जताया, लेकिन जंगलों को सबसे अधिक बचाया. इनके जीवन का सबसे बड़ा पाठ है—"हम प्रकृति के मालिक नहीं, उसके साझेदार हैं."

### जश्न नहीं, जिम्मेदारी

हर साल 9 अगस्त को मनाया जाने वाला विश्व आदिवासी दिवस दुनिया भर के उन समुदायों को सम्मानित करता है जिन्होंने संपत्ति नहीं, सहअस्तित्व को चुना. लेकिन यह दिन केवल भाषण और नाच-गाने के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि यह पूछने का दिन है— क्या हमारी विकास नीति आदिवासी जमीन और जल को लीलती जा रही है? क्या खनन, बांध और सड़क परियोजनाएं जंगलों से आदिवासी और उनके विश्वास को बेदखल कर रही हैं? क्या हमने "आदिवासी" को केवल संस्कृति तक सीमित कर दिया है, और उसके राजनीतिक अधिकारों को छीन लिया है?

## ब्रीफ न्यूज

### मंत्री सोरेन का ब्रेन काम नहीं कर रहाः इरफान

**दुमका।** दिल्ली के अपोलो अस्पताल में भर्ती स्वास्थ्य मंत्री रामदास सोरेन की हालत गंभीर बनी हुई है. उनका ब्रेन काम नहीं कर रहा. यह जानकारी स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने दी है. दुमका में अंसारी ने शुक्रवार को कहा कि अपोलो अस्पताल में ब्रेन के डॉक्टर्स सोरेन उनका इलाज कर रहे हैं. उनकी लगातार डॉक्टरों से बात हो रही है. उनकी रिपोर्ट अमेरिका भेजकर विशेषज्ञों की राय ली गयी है, जिस पर रविवार को काम होगा.

### एसआईआर के खिलाफ संसद पर प्रदर्शन जारी

**नयी दिल्ली।** इंडिया अलायंस में शामिल दलों के सांसद हर दिन बिहार एसआईआर के खिलाफ संसद भवन में प्रदर्शन कर रहे हैं. इस क्रम में शुक्रवार को भी संसद भवन परिसर में विरोध प्रदर्शन किया. विपक्षी सांसदों ने इसे वापस लेने की मांग की. साथ ही उन्होंने सदन में इस विषय पर चर्चा कराने की मांग की. बिहार एसआईआर के खिलाफ बैनर और पोस्टरों के साथ विपक्षी सांसदों ने नारे लगाये विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी भी शामिल हुई.

### 300 रुपए सिलेंडर सब्सिडी को मंजूरी

**नयी दिल्ली।** पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में शुक्रवार को कैबिनेट बैठक में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को 300 रुपए प्रति सिलेंडर सब्सिडी देने को मंजूरी दी गई है. इसके लिए 12 हजार करोड़ रुपये खर्च किये जाएंगे. फैसले की जानकारी देते हुए मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि पीएमयूवाई उपभोक्ताओं की औसत प्रति व्यक्ति खपत 2019-20 में केवल 3 रिफिल थी, जो 2022-23 में 3.68 रिफिल और 2024-25 में बढ़कर लगभग 4.47 रिफिल हो गई है.

### बेंगलुरु रैली में राहुल गांधी का चुनाव आयोग पर फिर वार, बोले-

# मुझसे एफिडेविट मांगते हैं मैंने संसद में शपथ ली है

**एजेंसियां। बेंगलुरु**

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को एक बार फिर चुनाव आयोग पर निशाना साधा. उन्होंने बेंगलुरु में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा कि वोट की चोरी संविधान के साथ धोखा है. हमें हर हाल में संविधान को बचाना है. राहुल गांधी ने फ्रीडम पार्क में वोट अधिकार रैली में कहा कि संविधान हर नागरिक को वोट देने का अधिकार देता है. लेकिन अब देश की संस्थाओं को खत्म किया जा रहा है. संविधान से छेड़छाड़ की जा रही है. पिछले चुनाव में बीजेपी, नरेंद्र मोदी और इनके नेताओं ने संविधान पर हमला किया. हिंदुस्तान की संस्थानों को खत्म करके संविधान पर हमला किया गया.

राहुल गांधी ने कहा कि चुनाव आयोग मुझसे एफिडेविट मांगता है. मैंने संसद के भीतर संविधान पर हाथ रखकर शपथ ली है. आज जब हिंदुस्तान की जनता हमारे डेटा को लेकर आयोग से सवाल पूछ रहा है तो इलेक्शन आयोग ने अपनी वेबसाइट बंद कर दी है. आयोग ने राजस्थान और बिहार में अपनी वेबसाइट बंद कर दी है क्योंकि वे जानती है कि अगर हिंदुस्तान की जनता ने इसी डेटा को लेकर सवाल पूछना शुरू कर दिया तो उनकी पोल खुल जाएगी.

कांग्रेस नेता ने कहा कि हमारी मांग है कि आयोग हमें इलेक्ट्रॉनिक वोटर लिस्ट दे. कल मैंने साबित किया है कि देश में वोटों की चोरी हुई है. अगर चुनाव आयोग हमें इलेक्ट्रॉनिक वोटर लिस्ट दे दें तो हम साबित कर देंगे कि हिंदुस्तान का प्रधानमंत्री वोट चोरी कर प्रधानमंत्री बना है. उन्होंने कहा कहा कि कि आपको याद होगा कर्नाटक की सरकार चोरी की गई थी. पैसा देकर चोरी की गई थी. मैं आपसे 100 फीसदी सबूत के साथ कह रहा हूं कि लोकसभा भी चोरी की गई है. बीजेपी की विचारधारा संविधान के खिलाफ है. लेकिन हर कांग्रेस पार्टी का कार्यकर्ता और नेता संविधान की रक्षा करेगा.

**जादू से 1 करोड़ लोग आ गए :** राहुल गांधी ने महाराष्ट्र और कर्नाटक का जिक्र करते हुए कहा कि हमने पता लगाया तो पता चला की 1 करोड़ नए लोग वोट डालने निकल आए. उन्होंने कहा, जो लोग लोकसभा में वोट डालने नहीं आए थे, वे 1 करोड़ लोग जादू से वोटिंग करने आ गए. इन बढ़े हुए वोट के सहारे इन्होंने चुनाव जीता. हमें पता था कि दाल में कुछ काला है. कर्नाटक में भी हम लोकसभा चुनाव में 16 सीटों पर जीत रहे थे, लेकिन हम केवल 9 सीट जीते. यह भी फर्जी तरीके से हुआ था. हमने पता लगाया है, लेकिन चुनाव आयोग कोई जवाब नहीं दे रहा है.

**देश के गुनहगार सुन लें- वक्त बदलेगा, सजा मिलेगी:** इससे पहले लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक वीडियो साझा किया. उन्होंने लिखा, वोट चोरी सिर्फ एक चुनावी घोटाला नहीं, ये संविधान और लोकतंत्र के साथ किया गया बड़ा धोखा है. देश के गुनहगार सुन लें- वक्त बदलेगा, सजा जरूर मिलेगी.



### राहुल गांधी को चुनाव आयोग की दो टूक

### शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करें या फिर देश से माफी मांगें

इस बीच, चुनाव आयोग के सूत्रों ने कहा कि अगर कांग्रेस सांसद और विपक्ष के नेता अपने विश्लेषण पर विश्वास करते हैं और मानते हैं कि चुनाव आयोग पर उनके आरोप सही हैं, तो उन्हें शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए. अगर राहुल ऐसा नहीं करते हैं, तो इसका मतलब होगा कि उन्हें अपने विश्लेषण, निष्कर्षों और बेतुके आरोपों पर विश्वास नहीं है. ऐसी स्थिति में उन्हें देश से माफी मांगनी चाहिए. इसलिए उनके पास दो विकल्प हैं- या तो घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करें या चुनाव आयोग पर बेतुके आरोप लगाने के लिए देश से माफी मांगें.

### खरगे ने भी मोदी सरकार पर साधा निशाना

### 2019 में कांग्रेस फर्जी वोटों के चलते ही हारी

**बेंगलुरु।** कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शुक्रवार को बंगलूरू के फ्रीडम पार्क में आयोजित वोट अधिकार रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा पर जोरदार हमला बोला. उन्होंने वोट चोरी का आरोप लगाते हुए कहा कि 2019 का लोकसभा चुनाव भी फर्जी वोटों के कारण हारा था. खरगे ने कहा कि मोदी सरकार चोरी की सरकार है. देश को फर्जी वोटों से रुला रही है. मैंने 2019 में कहा था कि कांग्रेस फर्जी वोटों के चलते हारी. अब वो बात सच साबित हो रही है. उन्होंने दावा किया कि चुनाव आयोग पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के इशारे पर काम करता है. खरगे ने कहा कि बंगलरू की महादेवपुरा विधानसभा सीट पर 6.6 लाख वोटों का सत्यापन हुआ है और यह धोखेबाज चुनाव था. उनका आरोप है कि चुनाव आयोग तय करता है कि कहां वोट कम हों और कहां ज्यादा, ताकि भाजपा को फायदा मिले. खरगे ने कहा कि महाराष्ट्र, कर्नाटक और 2024 के लोकसभा चुनावों में भी भाजपा ने गैरकानूनी तरीके से जीत हासिल की है. उन्होंने चेतावनी दी कि यह सरकार ज्यादा दिन नहीं चलेगी, हम जनता के बीच जाकर उन्हें सबक सिखाएंगे. इसके साथ ही खरगे ने बताया कि 11 अगस्त को इंडिया गठबंधन के सांसद दिल्ली में चुनाव आयोग के दफ्तर तक मार्च करेंगे और वोटिंग प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग करेंगे.



### मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन खेतों में उतरे, धनरोपनी का किया अवलोकन, कहा

# कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़

**बोले मुख्यमंत्री**

- खेती हमारी अस्मिता, संस्कृति और परंपरा की भी पहचान
- सरकार किसानों को खुशहाल व सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है
- किसान सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से जुड़ें और उसका लाभ उठाएं
- किसान खुशहाल होंगे, तभी राज्य और देश सशक्त बनेगा

**शुभम संदेश। नेमरा**

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का खेती-किसानी से लगाव जगजाहिर है. इसकी बानगी शुक्रवार को एक बार फिर देखने को मिली, जब रामगढ़ के नेमरा स्थित अपने पैतृक आवास से निकल कर वह खेतों की मेड़ से होते धनरोपनी करते किसानों के बीच पहुंचे. मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि न सिर्फ अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि हमारी पहचान, अस्मिता, संस्कृति और परंपरा की भी वाहक है. किसान खुशहाल होगा, तभी देश- राज्य समृद्ध होगा. हमारी सरकार किसानों को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है.

### किसानों से जानी समस्याएं निराकरण का दिया भरोसा

मुख्यमंत्री को खेत में अपने बीच देखकर किसानों के चेहरे खिल उठे। उनकी खुशियां देखते ही बन रही थीं. इस दौरान मुख्यमंत्री ने किसानों से सीधा संवाद किया और उनकी परेशानियां तथा समस्याओं को जाना. उन्होंने कहा कि किसानों का कल्याण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है. आपके लिए सरकार कई कल्याणकारी योजनाएं चला रही है. आप इन योजनाओं से जुड़ें और अपने को सशक्त बनाएं. मैं आपके लिए हमेशा खड़ा हूं. आपको जो परेशानी हो, बताएं, उसका निराकरण निश्चित तौर पर होगा.

- **धनरोपनी करती गांव की महिलाओं से रू-ब-रू हुए मुख्यमंत्री :** बारिश का मौसम है और खेतों में धनरोपनी हो रही है. मुख्यमंत्री ने खेतों में जाकर धान की रोपाई कर रही स्थानीय ग्रामीण महिलाओं से संवाद करते हुए खेती-किसानी के ताजा हालात से रूबरू हुए. मुख्यमंत्री ने कहा कि खेतों की हरियाली किसानों की कड़ी मेहनत को दर्शाता है. जब फसलें लहलहाएंगी, तो यह उनके चेहरे की मुस्कान बनेगी.

# पीएम मोदी ने पुतिन से की फोन पर बात

### एक दिन पहले ब्राजील के राष्ट्रपति लूला से भी की थी लंबी बातचीत

**एजेंसियां। नयी दिल्ली**

पीएम नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को रूस के राष्ट्रपति पुतिन से बात की है. इस फोन कॉल के दौरान रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन से संबंधित हाल के घटनाक्रमों से मोदी को अवगत कराया. प्रधानमंत्री ने संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान के लिए भारत के दृढ़ रुख को दोहराया.

दोनों नेताओं ने भारत-रूस विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और प्रगाढ़ करने की प्रतिबद्धता दोहराई. मोदी ने राष्ट्रपति पुतिन को इस वर्ष के अंत में 23वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए भारत आने का निमंत्रण दिया. पीएम मोदी ने अभी इस बातचीत के बारे में एक्स पर पोस्ट कर लिखा, मेरे मित्र राष्ट्रपति पुतिन के साथ बहुत अच्छी और विस्तृत बातचीत हुई. मैंने यूक्रेन पर नवीनतम घटनाक्रम साझा करने के लिए उनका धन्यवाद किया. हमने अपने द्विपक्षीय एजेंडे में प्रगति की भी समीक्षा की और भारत-रूस विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई. मैं इस वर्ष के अंत में राष्ट्रपति पुतिन की भारत में मेजबानी के लिए उत्सुक हूं. बता दें कि गुरुवार को ही ब्राजील के राष्ट्रपति लूला ने पीएम मोदी को फोन किया था. इसकी जानकारी भी खुद पीएम मोदी ने ट्वीट कर जानकारी थी.

### आखिर चल क्या रहा?

दरअसल, अमेरिकी राष्टपति के टैरिफ वॉर से पूरी दुनिया में हड़कंप है. सबसे ज्यादा टैरिफ और प्रतिबंध रूस पर लगे हैं. मगर, अब ट्रंप ने आयात-निर्यात में डिस्बैलेंस की बात करते-करते रूस से तेल खरीद को लेकर भी देशों को धमकाना शुरू कर दिया है. भारत और ब्राजील पर 50-50% टैरिफ लगा दिया है. चीन पर 30% टैरिफ लगाने की घोषणा की है. ऐसे में ब्रिक्स देश एक-दूसरे के करीब आते दिख रहे हैं. पीएम मोदी के एससीओ समिट में चीन जाने की भी बात कही जा रही है. पुतिन भी भारत आने वाले हैं. टैरिफ के दौर में ब्रिक्स देश एक-दूसरे के साथ खड़े होकर दुनिया को संदेश दे रहे हैं. हालांकि अभी भारत और अमेरिका की ट्रेड डील पर बात चल रही है. आने वाले कुछ महीने दुनिया की कुटनीति के लिए काफी अहम माने जा रहे हैं.

### धर्म और आस्था : तमिलनाडु पुलिस की लापरवाही पर भड़का कोर्ट, लगाई फटकार, कहा

# हिंदू भगवान का आप नहीं कर सकते अपमान

**एजेंसियां। चेन्नई**

मद्रास हाईकोर्ट ने कहा है कि किसी को भी अधिकार नहीं है कि वह हिंदू भगवान और देवी-देवताओं का अनादरपूर्ण चित्रण करे. कोर्ट ने तमिलनाडु पुलिस को फटकार लगाते हुए यह टिप्पणी की है. यह मामला एक फेसबुक पोस्ट से जुड़ा है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की तस्वीर को अपमानजनक भाषा वाले कैप्शन के साथ पोस्ट किया गया था और पुलिस ने पोस्ट करने वाले पर न तो कोई कार्रवाई की और केस भी बंद कर दिया.

बार एंड बेंच की रिपोर्ट के अनुसार जस्टिस के मुरली शंकर की बेंच ने 4 अगस्त को मामले पर सुनवाई करते हुए पुलिस को फिर से जांच करने और तीन महीने के अंदर रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया है. कोर्ट शिकायतकर्ता पी. परमसिवन की याचिका पर सुनवाई कर रहा था, जिन्होंने ट्रायल कोर्ट के फैसले को चुनौती दी है.

इस फेसबुक पोस्ट पर तमिल में दो कमेंट भी किए गए थे, जिसमें लिखा है, कृष्ण जयंती ऐसे व्यक्ति का उत्सव है, जो नहाते समय लड़कियों के कपड़े छिपाता था. कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा, हिंदू भगवान को अपात्तिजनक तरीके से चित्रित करना और जानबूझ कर लाखों लोगों की आस्था को ठेस पहुंचाए जाने को उचित नहीं ठहराया जा सकता है. इस तरह के कृत्य देश में नफरत और धार्मिक आक्रोश फैला सकते हैं, सामाजिक व्यवस्था को बिगाड़ सकते हैं और सांप्रदायिक सद्भाव को नुकसान पहुंचा सकते हैं. धार्मिक देवताओं और प्रतीकों के प्रति लोगों में अपार सम्मान होता है और ऐसी चीजें समाज के एक बड़े हिस्से को दुख पहुंचा सकती हैं और सामाजिक अशांति का कारण भी बन सकती हैं. इसलिए ऐसे चित्रण को संवेदनशीलता से देखना जरूरी है. सरकार को भरोसा दिलाना चाहिए कि फ्रीडम ऑफ स्पीच का मतलब धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना न बने. रिपोर्ट के अनुसार कोर्ट ने कहा कि भगवान कृष्ण के गोपियों के कपड़े छिपाने की कहानी को एक प्रतीकात्मक कहानी के तौर पर देखा जाता है, जिसकी कई व्याख्याएं हैं.

इसमें ये भी शामिल है कि यह गोपियों की परीक्षा थी कि क्या उनकी भक्ति सांसारिक आसक्तियों से परे थी. कोर्ट ने कहा कि यह कहानी आध्यात्मिक खोज और वैराग्य के महत्व पर प्रकाश डालती है. इस मामले में पी परमसिवन ने एफआईआर करवाई थी, लेकिन फरवरी में पुलिस ने निगेटिव रिपोर्ट पेश की और कहा कि मेटा से उन्हें पोस्ट करने वाले यूजर की जानकारी नहीं मिल पाई है. इसके बाद मार्च में ट्रायल कोर्ट ने पुलिस की रिपोर्ट स्वीकार कर ली और मामले को अनडिटेक्टेड करार देते हुए बंद कर दिया. कोर्ट ने पुलिस की इस लापरवाही पर नाराजगी जताई और कहा कि बेहद गंभीर मामले को पुलिस ने बहुत ही लापरवाही के साथ हैंडल किया है. कोर्ट ने कहा कि पुलिस ने जांच को सिर्फ फेसबुक से यूजर की जानकारी प्राप्त करने तक ही सीमित रखा, जबकि यूजर की प्रोफाइल पर मौजूद पर्सनल डिटेल्स से उसको ट्रेस करके, उसका पता लगाया जा सकता था. कोर्ट ने कहा कि जांच पूरी लगन से नहीं की गई. कोर्ट ने कहा कि यूजर ने अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर पोस्ट में हदें पार कर दी हैं.



- किसी को अधिकार नहीं कि वह हिंदू देवी-देवताओं का अनादरपूर्ण चित्रण करे

### मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पुत्र धर्म के साथ-साथ निभा रहे राजधर्म

# नेमरा आवास से निपटा रहे सारे सरकारी कामकाज

शुभम संदेश। रांची/नेमरा

एक तरफ बाबा के परलोक गमन की असहनीय पीड़ा, तो दूसरी तरफ राज्य के प्रति जिम्मेदारियों को निभाने की चिंता. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन आज अपनी जीवन के सबसे कठिन समय से गुजर रहे हैं. बाबा के निधन का शुक्रवार को चौथा दिन है. पर, दुःख - दर्द और आंसू थम नहीं रहा है. दिल- दिमाग बेचैन, विचलित और व्यथित है. लेकिन, ऐसे विषम हालात में भी वे पुत्र धर्म के साथ राजधर्म निभा रहे हैं. वे रामगढ़ जिला के नेमरा स्थित पैतृक आवास में एक ओर स्मृति शेष पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन के उपरांत के रस्म रिवाज को पारंपरिक विधि- विधान से निभा रहे हैं, तो दूसरी तरफ शासन-प्रशासन चलाने का भी फर्ज बखूबी निभा रहे हैं, ताकि राज्य के विकास की गति में कोई अवरोध नहीं हो.

**राज्यहित से जुड़े विषयों को लेकर संवेदनशील :** मुख्यमंत्री शोक की इस घड़ी में भी राज्यहित से जुड़े विषयों को लेकर पूरी तरह संवेदनशील हैं. व्यक्तिगत भावनाओं और दुःख-दर्द को सीने में दबाकर वे सरकारी कामकाज को बेहतर तरीके से निभाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं. जरूरी संचिकाओं का निष्पादन करने के साथ सभी वरीय पदाधिकारियों के साथ नियमित संवाद बनाए हुए हैं. सरकार की गतिविधियों की निरंतर जानकारी लेने के साथ-साथ उन्हें निदेशित किया है कि वे अपने कार्यों में तत्परता व निरंतरता बनाए रखें और इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आमजनों की समस्याओं का तत्काल निराकरण हो. कहीं भी, किसी भी कार्य में कोताही नहीं होनी चाहिए. उन्होंने वरीय पदाधिकारियों से यह भी कहा कि वे उन्हें हर पल अद्यतन सूचनाओं से अवगत कराते रहें तथा आवश्यकतानुसार निर्देश प्राप्त करें.

**बड़ी बात**

- बाबा का साया उठने से दुःख-दर्द और पीड़ा में हैं मुख्यमंत्री, लेकिन शासन- प्रशासन सुचारू रूप से चलता रहे, अधिकारियों को दे रहे हैं जरूरी निर्देश
- मुख्यमंत्री ने कहा- बाबा के निधन पर जिस तरह राज्य की जनता मेरे परिवार के साथ खड़ी रही, उसी से मुझे राज्य के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने की मिली हिम्मत
- बाबा के निधन से मुख्यमंत्री के आंखों से नहीं थम रहा आंसू, पर उनसे किए वादे और वचन को इस विषम हालात में भी पूरा करने का है प्रयास

**बाबा को दिए वचन और वादों को निभा रहा हूं**

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा हमेशा कहा करते थे- सार्वजनिक जीवन में हमेशा आम जनता के लिए खड़ा रहना. वे संघर्ष की मिसाल थे. उन्होंने कभी झुकना नहीं सीखा. इस राज्य के लिए हमेशा लड़ते रहे. उन्होंने कभी भी अपने व्यक्तिगत हितों को तरजीह नहीं दी. संसद से सड़क तक इस राज्य के लिए संघर्ष करते रहे. आज झारखंड है, तो यह दिशोम गुरु की देन है. लेकिन, अब उनका साया हमारे ऊपर से उठ चुका है. पर, वे हम सभी के लिए पथ प्रदर्शक और मार्गदर्शक रहेंगे. उन्होंने इस राज्य की खातिर मुझसे कई वचन लिए थे. मैं उनसे किए वादों को पूरा करने का हर संभव प्रयास कर रहा हूं.

**वीर शहीद निर्मल महतो को किया नमन**

दूसरे पोस्ट में सीएम हेमंत सोरेन ने वीर शहीद निर्मल महतो को नमन किया. उन्होंने लिखा कि वीरों और क्रांतिकारियों की वीर भूमि है हमारा झारखंड. इसी वीर भूमि के वीर माटी पुत्र, महान झारखंड आंदोलनकारी, अमर वीर शहीद निर्मल महतो जी के शहादत दिवस पर शत-शत नमन. वीर शहीद निर्मल महतो अमर रहें. झारखंड के वीर अमर रहें.

**मुख्यमंत्री ने चौथे दिन निभाई धार्मिक मान्यता**

दिवंगत दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के पारंपरिक श्राद्ध कर्म का चौथा दिन है. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने धार्मिक मान्यताओं, संस्कारों और स्थानीय परंपराओं के अनुरूप सवेरे बाबा को भोजन परोसे जाने की रस्म निभाई. दरअसल यह एक ऐसा रस्म -रिवाज है, जिसमें दिवंगत व्यक्ति की आत्मा की शांति और मोक्ष के लिए श्राद्ध कर्म के दौरान हर दिन स्थानीय विधि- विधान और परंपरा के अनुरूप इसे निभाया जाता है.

**15 को दशकर्म, 16 को होगा एकादश संस्कार**

इधर दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के बाद उनके परिवार और अनुयायियों ने पारंपरिक तरीके से तीन कर्म का आयोजन किया. अब 15 अगस्त को दशकर्म और 16 अगस्त को एकादश संस्कार होगा. जिला प्रशासन ने देशभर से आने वाले अनुयायियों और गणमान्य व्यक्तियों के लिए व्यापक तैयारियां शुरू कर दी है.

**विषम परिस्थितियों में दायित्व निभाने की जनता से मिली हिम्मत**

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन के बाद दुःख और मुसीबत की घड़ी में जिस तरह राज्य की जनता मेरे पूरे परिवार के साथ खड़ी रही, उसी से मुझे यह हिम्मत मिली कि मैं इन कठिन परिस्थितियों में भी इस राज्य के प्रति अपने दायित्वों को निभा सकूं.

**हेमंत ने किया भावुक पोस्ट**

सीएम हेमंत सोरेन अपने पिता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के हर पल को यादों में संजोए हुए हैं. उन्होंने सोशल मीडिया में एक भावुक पोस्ट किया है. लिखा है कि बाबा दिशोम गुरु के हर सपने को पूरा करेगा उनका बेटा. हमारे वीर पुरुखों का संघर्ष और बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाएगा.

### झामुमो ने उठाई केंद्र सरकार से मांग

## भारत रत्न की उपाधि के हकदार हैं दिशोम गुरु

शुभम संदेश। रांची

झामुमो ने भारत सरकार से अपील है कि वह झारखंड राज्य के निर्माता, सामाजिक न्याय के अप्रतिम योद्धा और दिशोम गुरु के नाम से समूचे आदिवासी समाज में शिबू सोरेन जी को भारत रत्न देने पर गंभीरता से विचार करे. गुरुजी का जीवन संघर्षशील, प्रेरणादायी और जन-सरोकारों से ओतप्रोत रहा है.

झामुमो प्रवक्ता विनोद पांडेय ने कहा कि गुरुजी शिबू सोरेन न केवल एक राजनेता थे, बल्कि वे आदिवासी चेतना के वाहक, शोषित-वंचित वर्ग के सशक्त प्रवक्ता और सामाजिक क्रांति के प्रतीक थे. उन्होंने नशाखोरी और महाजनी प्रथा के खिलाफ जबरदस्त आंदोलन खड़ा किया, जिससे झारखंड के दूर-दराज़ गांवों में चेतना फैली. शिक्षा के क्षेत्र में भी गुरुजी ने अनेक पहल की, ताकि आदिवासी समाज ज्ञान के माध्यम से सशक्त हो सके. झारखंड को अलग राज्य बनाने के आंदोलन से लेकर केंद्र और राज्य सरकारों में मंत्री व मुख्यमंत्री रहते हुए गुरुजी ने सदैव जनहित को प्राथमिकता दी. उनका जीवन त्याग, संघर्ष और सेवा की मिसाल है. ऐसे महापुरुष को भारत रत्न से सम्मानित करना केवल उनके प्रति श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि देश की लोकतांत्रिक और सामाजिक चेतना को भी गौरवान्वित करना होगा. केंद्र सरकार को इस पर अविलंब निर्णय लेना चाहिए.

### कल्पना सोरेन ने शिबू सोरेन के नाम लिखा भावुक पोस्ट, कहा

## आपके बिना जीना मुश्किल है

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने अपने पिता समान ससुर शिबू सोरेन को याद करते हुए एक भावुक पत्र लिखा है, जिसने हर झारखंडी की आंखें नम कर दी हैं. कल्पना सोरेन ने अपने इस भावनात्मक पत्र में सिर्फ एक बहू के रूप में नहीं, बल्कि एक बेटी के रूप में दिशोम गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा, प्रेम और कृतज्ञता को व्यक्त किया है. यह पत्र शुक्रवार को सोशल मीडिया और आम जनमानस के बीच गहरी संवेदना पैदा कर रहा है.

**उन्होंने लिखा**

प्रिय बाबा,
जब पूरा देश आपको अश्रुपूरित नेत्रों से विदा कर रहा है,
मैंने एक कोना पकड़ लिया है,
अपनी आधी जिंदगी जिस वटवृक्ष के साये में महफ़ूज़ हो कर काटी - आज आपके जाने से वह बेटी-सी बहू अपनी टूटी हुई हिम्मत बटोरने का साहस नहीं कर पा रही है.
मैं जानती हूं,
आप सिर्फ मेरे ससुर नहीं थे,
आप झारखंड के बाबा थे
हर उस बच्चे के,
जिसने जंगलों की गोद में जन्म लिया,
और संघर्ष को पहली सांस में महसूस किया.
जब मैं पहली बार इस परिवार में आई,
तो आपके व्यक्तित्व पर गौरव हुआ.
आपकी सादगी,
आपकी आवाज़ में ठहराव,
और सबसे ज़रूरी
आपका सुनना.

आप सुनते थे
हर किसान की चिंता,
हर औरत का दर्द,
हर मां की खामोशी
हर झारखंडी के अरमान.
आपने राजनीति को घर की तरह जिया
जहां सत्ता नहीं,
संबंधों का सम्मान होता है.
आपके पास बड़ी डिग्रियों से भी बड़ी - दृष्टि दूरदर्शी थी.
आपने केवल झारखंड को खड़ा नहीं किया
हम सबको आत्मनिर्भर होने का हौसला दिया.
जब आप "झारखंड" कहते थे,
तो वो शब्द भूगोल नहीं,
संवेदना बन जाता था.
बाबा, मैंने आपको कभी पिता की तरह देखा,
कभी एक संत की तरह,
और कभी एक तपस्वी की तरह
जो न सत्ता चाहता था, न वाहवाही
बस अपनी माटी की, अपने लोगों की इज्जत चाहता था.
आज आप नहीं हैं,
पर आपकी चाल की गूंज हर गांव के रास्ते पर है.
आपकी चप्पलों की खामोशी हर विधानसभा में गूंज रही है.
बाबा, आपने झारखंड को छोड़ा नहीं है
आप तो हर उस बेटी की आँख में हैं,
जो अपने जंगल, अपने खेत, अपने सपनों को बचाना चाहती है.
आप हर उस मां की सांस में हैं,
जो चाहती है कि उसके बेटे भी एक दिन आपकी तरह "गुरु" एवं सच्चे इंसान बने.
आपका सपना, अब हमारी जिम्मेदारी है.
मैं, एक बहू नहीं
आपकी बेटी,
आपसे वादा करती हूं:
"आपका नाम सिर्फ इतिहास में नहीं रहेगा
वो हर लड़की के साहस में,
हर गांव के संघर्ष में,
और झारखंड की हर सांस में जिंदा रहेगा."
आपको झारखंड की हर बेटी का नम्र प्रणाम.
आप हमारे संस्कार बन गए हैं.
आपके बिना जीना मुश्किल है,
पर आपके सपनों को जीना अब हमारा धर्म है."

### राज्यपाल पहुंचे अपोलो अस्पताल

## शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के स्वास्थ्य की जानकारी ली

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने शुक्रवार को दिल्ली स्थित अपोलो अस्पताल पहुंचकर झारखंड सरकार के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्री रामदास सोरेन के स्वास्थ्य की जानकारी ली. राज्यपाल ने अस्पताल में मौजूद डॉक्टरों एवं प्रबंधन टीम से सोरेन के चिकित्सकीय उपचार की प्रगति और वर्तमान स्थिति के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की. उन्होंने मंत्री रामदास सोरेन के परिवारजनों से भी भेंट की और उन्हें ढांढस बंधाया.

**हम सभी ईश्वर से प्रार्थना करें**

राज्यपाल ने कहा कि हम सभी ईश्वर से रामदास सोरेन के शीघ्र पूर्ण स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं. राज्य को उनकी आवश्यकता है और हम जल्द ही उन्हें स्वस्थ देखकर सेवा में वापस देखना चाहते हैं. ज्ञात हो कि मंत्री रामदास सोरेन पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे हैं और दिल्ली के अपोलो अस्पताल में उनका इलाज जारी है. उनकी स्थिति को लेकर सरकार और जनता दोनों ही चिंतित हैं, लेकिन चिकित्सकों के अनुसार उनकी तबीयत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है.

## फोरलेन ग्रीनफील्ड सड़क निर्माण का मामला उठा संसद में

**रांची।** पलामू सांसद विष्णु दयाल राम ने गढ़वा से मझिआंव होते कांडी पंडुका ब्रिज फोरलेन ग्रीनफील्ड सड़क निर्माण कराने संबंधित मामले को शुक्रवार को लोकसभा में उठाया. सांसद ने कहा कि उनके संसदीय क्षेत्र के चहुंमुखी विकास और सुगम आवागमन के लिए गढ़वा से मझिआंव होते हुए कांडी पंडुका ब्रिज (झारखंड सीमा के अन्त) ग्रीनफील्ड सड़क निर्माण की मांग की जा रही है. इसके निर्माण हो जाने से बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ से कनेक्टिविटी और मजबूत होगी. यह क्षेत्र बिजनेस कॉरिडोर के रूप में विकसित होगा. दक्षिण बिहार के इस इलाके का सीधा संपर्क झारखंड राज्य के कई शहरों से हो सकेगा. पंडुका पुल का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर गढ़वा के मझिआंव, कांडी विशुनपुरा, बरडीहा, भवनाथपुर प्रखंड के लोगों को वाराणसी जाने के लिए 80 किलोमीटर कम दूरी तय करनी पड़ेगी.

# अति कमजोर जनजातियों की सत्ता में भागीदारी, समानता के लिए साक्षरता व जागरूकता जरूरी

गंगानाथ झा

संविधान के मूल में समानता की बात समाहित है. समानता के लिए जनजातियों को संवैधानिक संरक्षण प्रदान किया गया. सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित करने के साथ-साथ इनकी सांस्कृतिक और आर्थिक विकास के लिए विभिन्न योजनाओं का निर्माण कर उसे क्रियान्वित किया गया. आजादी के 78वें वर्ष में इनके बीच विकास और परिवर्तन को देखा जा सकता है. भारत में कुल 705 जनजातियां हैं, जो देश की कुल आबादी का 8.6% है. इनमें 75 जनजातियां ऐसी हैं, जिन्हें विशेष रूप से कमजोर जनजाति की श्रेणी में रखकर उनके विकास के लिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है. पार्टिकुलरली वलनरेबल ट्राईबल ग्रुप्स (पीवीटीजी) जो कभी भोजन के लिए खाद्य संग्रह , शिकार और अपने परंपरागत ज्ञान पर निर्भर करती थी, उन्हें अब डाकिया योजना के माध्यम से अनाज उपलब्ध कराया जा रहा है. इन जनजातियों के लिए पीएम जनमन योजना द्वारा आवास, सड़क, पानी,स्वास्थ्य सेवाएं, पोषण,शिक्षा और स्थायी जीविका से जोड़ा जा रहा है.

झारखंड में कुल 32 प्रकार की जनजातियां हैं, जिनकी अपनी-अपनी विशिष्ट संस्कृति है. इनकी आबादी झारखंड की कुल जनसंख्या का 26% है. झारखंड में निवास करने वाली 32 प्रकार की जनजातियों में से 8 जनजातियां असुर, बिरजिया, कोरबा, बिरहोर, परहिया, सौरिया पहाड़िया, माल पहाड़िया और सबर जनजातियां

**विश्व आदिवासी दिवस 9 अगस्त पर विशेष**

| नाम | जनसंख्या | साक्षरता दर |
|---|---|---|
| 1. बिजजिया | 6276 | 40 % |
| 2. सबर | 9688 | 27 % |
| 3. सौरिया पहाड़िया | 46222 | 31.60 % |
| 4. कोरबा | 35608 | 29 % |
| 5. असुर | 22459 | 37 % |
| 6. परहिया | 25585 | 25.57 % |
| 7. माल पहाड़िया | 135799 | 31.35 % |
| 8. बिरहोर | 10726 | 26.40 % |
| कुल | 292363 | |

स्रोत – 2011

इसी पीवीटीजी के अंतर्गत आती हैं. ये जीवकोपार्जन के लिए जंगल पर आश्रित रहने के साथ-साथ अपने परंपरागत ज्ञान से अपना जीविकोपार्जन करती हैं. बिरहोर जंगली चचोप छाल और प्लास्टिक से रस्सी बनाकर बाजार में बेचने के साथ-साथ जंगल से जड़ी -बूटी संग्रह कर स्थानीय जनजाति हाट में बेचा करते हैं. सबर जनजाति कांसी घास से विभिन्न प्रकार की डेकोरेटिव घरेलू चीजें बनाकर बाजार में बेचती हैं. असुर और बिरजिया जैसी जनजातियां कभी लौह अयस्क को गला कर लोहा निकालती थीं और फिर घरेलू और कृषि औजार बनाती थी, लेकिन अब यह परंपरागत कार्य इन लोगों ने पूर्ण रूप से छोड़ दिया है. झारखंड के राजमहल की पहाड़ियों में निवास करने वाली सौरिया और माल पहाड़िया कंदमूल इकट्ठा करने के साथ झूम खेती किया करती थी. यह जनजाति भी अब पत्थर उद्योग, कृषि मजदूरी के साथ-साथ अन्य रोजगार को अपना रही है. समय के साथ हालात में परिवर्तन आया है. अब इनके मुद्दे और चुनौतियों में बदलाव आए हैं. शिक्षा और जागरूकता की कमी इनके विकास में मुख्य बाधक बनकर खड़े हैं.

झारखंड की सबर और बिरहोर जैसी जनजातियां कुपोषण से जूझ रही है. झारखंड के राजमहल की पहाड़ियों से घिरे दामिनी-ई -कोह क्षेत्र में निवास करने वाली सौरिया और माल पहाड़िया जनजातियां महाजनी प्रथा से कर्ज में डूबी हुई हैं. असुरक्षित क्रेशर उद्योग में मजदूरी करने से सांस रोग और टीवी से ग्रसित हैं. इन जनजातियों के बीच मद्यपान की समस्या, अंधविश्वास और जागरूकता की कमी है. इन कारणों से इनकी स्थिति काफी दयनीय है.

झारखंड में पीवीटीजी के बीच साक्षरता दर की स्थिति बहुत ही भयावह है. झारखंड के पीविटीजी के अंतर्गत आने वाली जनजातियों के बीच साक्षरता की गंभीर स्थिति इस प्रकार है- बिरजिया 40%, कोरबा 29%, असुर 37%, बिरहोर 26.40%, सबर 26.93%, माल पहाड़िया 31.35%, सौरिया पहाड़िया 31.60% और परहिया के बीच सबसे कम मात्र 25.57% है.इनके बच्चों के लिए आंगनबाड़ी से लेकरआवासीय विद्यालय जरूर है लेकिन व्यवस्था और गुणवत्ता की भारी कमी है. इन जगहों पर उनकी संस्कृति के अनुकूल कुछ भी नहीं है. जागरूकता के अभाव में यह समाज अपने अधिकारों से अवगत नहीं है. समय पर योजनाओं का लाभ नहीं ले पा रहे हैं . इनके लिए खोले गए स्कूलों और आंगनवाड़ी के साथ-साथ सभी योजनाओं का मूल्यांकन जरूरी है तभी जाकर इनका सर्वांगीण विकास संभव होगा.

https://epaper.shubhamsandesh.net

# शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

**आज रक्षाबंधन**

इस रक्षाबंधन पर भद्रा का कोई प्रभाव नहीं है, इसलिए दिनभर राखी बांधेंगे. राखी बांधने का शुभ समय सुबह 5:47 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक रहेगा. सुबह 5:56 बजे तक आयुष्मान योग, और उसके बाद दिनभर सौभाग्य योग रहेगा. श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तिथि 8 अगस्त को दोपहर 1:42 बजे शुरू होकर 9 अगस्त को दोपहर 1:24 बजे तक रहेगी. दोपहर 3:30 बजे तक श्रवण नक्षत्र और उसके बाद घनिष्ठा नक्षत्र रहेगा.

रांची, शनिवार 09 अगस्त 2025 I श्रावण पूर्णिमा, संवत 2082 I रांची एवं पटना से प्रकाशित I वर्ष : 3, अंक : 123 I मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

## सदर अस्पताल में आज

| | | |
|---|---|---|
| मेडिसिन | - | डॉ पीपी पांडेय, डॉ ईपिल टोपनो |
| हड्डी रोग | - | डॉ हरेंद्र कुमार |
| सर्जरी | - | डॉ प्रभात कुमार |
| नेत्र रोग | - | -- |
| दंत रोग | - | डॉ स्नेहा केशरी |
| शिशु रोग | - | डॉ राजेन्द्र कुमार |
| मनोरोग | - | डॉ मिनाक्षी दुबे |
| स्त्री एवं प्रसूति रोग | - | डॉ रुमा प्रसाद |
| फिजियोथेरेपी | - | डॉ मिनाक्षी दुबे |
| ईएनटी स्पेशलिस्ट | - | -- |

**गायनी इमर्जेंसी**

| | | |
|---|---|---|
| सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक | - | डॉ सुमन |
| दोपहर 2 से रात 8 बजे तक | - | डॉ सुरभी |
| रात 8 से सुबह 8 बजे तक | - | डॉ अंजना कुमारी |

**जेनरल इमर्जेंसी**

| | | |
|---|---|---|
| सुबह 9 से दोपहर 3 बजे तक | - | डॉ राकेश रंजन |
| दोपहर 3 से रात 9 बजे तक | - | डॉ निलम बाला |
| रात 9 से सुबह 9 बजे तक | - | डॉ मासूम आलम |

### झारखंड में शिक्षकों की बड़ी भर्ती का रास्ता साफ

# हाईकोर्ट ने जेएसएससी को भी भेजा नोटिस

शुभम संदेश। रांची

झारखंड उच्च न्यायालय में राज्य के विश्वविद्यालयों में नियमित असिस्टेंट प्रोफेसरों और शिक्षकेतर कर्मियों की नियुक्ति को लेकर दायर जनहित याचिका पर शुक्रवार को अहम सुनवाई हुई. याचिका अनिकेत ओहदार समेत अन्य द्वारा दायर की गई थी, जिसकी सुनवाई मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान और न्यायमूर्ति राजेश शंकर की खंडपीठ में हुई. खंडपीठ ने झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) को भी इस मामले में प्रतिवादी बनाते हुए नोटिस जारी किया है. कोर्ट ने निर्देश दिया है कि जेएसएससी विश्वविद्यालयों में तृतीय श्रेणी के शिक्षकेतर कर्मियों की नियुक्तियों को लेकर अपना जवाब दाखिल करे.

जेपीएससी ने दी नियुक्तियों की स्थिति की जानकारी : सुनवाई के दौरान झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) की ओर से अधिवक्ता अभय प्रकाश ने अदालत को अवगत कराया कि रांची विश्वविद्यालय से कुल 468 पदों की अधियाचना प्राप्त हुई है. इनमें से:

- **431 पद नियमित नियुक्तियों के हैं**
- **37 पद बैकलॉग से संबंधित हैं**

जेपीएससी ने कोर्ट को भरोसा दिलाया कि दो माह के भीतर बहाली प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी, और इसके लिए जल्द ही विज्ञापन जारी किया जाएगा.

**संविदा नियुक्तियों पर सवाल**

याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत में यह दलील दी गई कि वर्षों से संविदा आधारित नियुक्तियां हो रही हैं, जो कि नियमानुसार नहीं हैं. इससे न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता पर असर पड़ता है, बल्कि विश्वविद्यालयों में स्थायित्व और पारदर्शिता भी प्रभावित होती है.

**2018 के लंबित पदों पर भी होगी नियुक्ति :** जेपीएससी ने यह भी बताया कि वर्ष 2018 के विज्ञापन संख्या 04/2018 और 05/2018 के तहत निकले गए 400 पदों की बहाली प्रक्रिया को भी अब जल्द पूरा किया जाएगा.

**मामले की अगली सुनवाई 22 अगस्त को :** खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई की तिथि 22 अगस्त 2025 तय की है. उससे पहले जेएसएससी को अपना पक्ष अदालत में प्रस्तुत करना होगा.

### भाषा शिक्षक भर्ती परीक्षा परिणाम जारी

## 1059 अभ्यर्थी सफल घोषित

शुभम संदेश। रांची

झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) ने प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा-2023 के अंतर्गत भाषा विषय का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया है. राज्य के सरकारी मध्य विद्यालयों (कक्षा 6 से 8) में भाषा शिक्षकों के 4991 रिक्त पदों को भरने के लिए यह परीक्षा आयोजित की गई थी. जारी परिणाम के अनुसार कुल 1059 अभ्यर्थी इस परीक्षा में सफल घोषित किए गए हैं. जेएसएससी परीक्षा विभाग के अनुसार, परीक्षा से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी आयोग की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी गई है. उम्मीदवार वेबसाइट पर जाकर अपने परिणाम देख सकते हैं.

**गैर-पारा अभ्यर्थियों का प्रदर्शन बेहतर :** सफल घोषित 1059 अभ्यर्थियों में से 959 गैर-पारा शिक्षक हैं, जबकि 100 पारा शिक्षक उम्मीदवार सफल हुए हैं. इससे स्पष्ट होता है कि गैर-पारा अभ्यर्थियों का प्रदर्शन इस बार अपेक्षाकृत बेहतर रहा है. परिणाम में पलामू जिला से सर्वाधिक 97 उम्मीदवारों ने सफलता प्राप्त की है. इसके बाद रांची और गिरिडीह जिलों के उम्मीदवारों का प्रदर्शन सराहनीय रहा.

## ब्रीफ खबरें

### घरेलू विवाद में महिला ने खुद को लगाई आग

धनबाद। शुक्रवार की शाम धनबाद थाना क्षेत्र के तेलीपाड़ा के दामोदरपुर स्थित सोम नगर में घरेलू विवाद के बाद मामुनी देवी ने खुद पर केरोसिन छिड़ककर आग लगा ली. जिससे महिला बुरी तरह झुलस गई है. घटना के बाद अफरा-तफरी मच गई. स्थानीय लोगों की तत्परता से गंभीर रूप से झुलसी महिला को तत्काल एसएनएमएमसीएच ले जाया गया. उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे रांची रिम्स रेफर कर दिया गया.

### तिरंगा यात्रा को लेकर भाजपा की कार्यशाला

**झरिया।** अवधेश साहू के अध्यक्षता में शुक्रवार को झरिया स्थित बिहार बिल्डिंग कार्यालय में तिरंगा यात्रा को लेकर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया. जहां हर घर तिरंगा महापुरुषों के प्रतिमाओ कि साफ सफाई एवं माल्यार्पण का कार्यक्रम किये जाने को लेकर चर्चा कि गयी. तिरंगा यात्रा झरिया नगर में निकाली जाएगी. झरिया नगर के प्रभारी जिला महामंत्री मानस प्रसुन्न, प्रदेश कार्यसमिति समिति सदस्य राजकुमार अग्रवाल, जिला उपाध्यक्ष विष्णु त्रिपाठी, श्रीराम यादव आदि थे.

### मुनिडीह कोलियरी में हृदय व नेत्र जांच शिविर

**पुटकी।** बीसीसीएल, अशर्फी हॉस्पिटल एवं शार्प साइट आई हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में डब्ल्यू जे एरिया के मुनिडीह कोलियरी में शुक्रवार को निःशुल्क हृदय और नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया. शिविर में 100 से अधिक कर्मियों ने स्वास्थ्य जांच करवाई. कार्यक्रम का उद्घाटन परियोजना पदाधिकारी सुनील कुमार पांजा ने फीता काटकर किया. इस अवसर पर डॉ सुरोजीत मंडल (मुनिडीह), डॉ ज़फर (अशर्फी हॉस्पिटल), डॉ विशाल कुमार (शार्प साइट आई हॉस्पिटल) की टीम ने कर्मियों के हृदय और नेत्र की जांच की. स्वास्थ्य जांच के साथ ही स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सलाह भी दी गई.

### नीरज सिंह हत्याकांड में पूर्व विधायक संजीव सिंह को सुप्रीम कोर्ट से मिली जमानत

# संजीव अब आएंगे जेल से बाहर

शुभम संदेश। रांची/धनबाद

नीरज सिंह हत्याकांड मामले में आठ वर्षों से जेल में बंद झरिया के पूर्व भाजपा विधायक संजीव सिंह को बड़ी राहत मिली है. भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने उन्हें जमानत प्रदान कर दी है. इस फैसले के बाद अब संजीव सिंह की जल्द ही जेल से रिहाई संभावित है. संजीव सिंह के अधिवक्ता मो. जावेद ने जानकारी दी कि सर्वोच्च न्यायालय की तीन-न्यायाधीशों की पीठ-मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति बीआर गवई, न्यायमूर्ति विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एनबी अंजारिया ने यह आदेश जारी किया है. सुनवाई के दौरान वरीय अधिवक्ता सन्नी चौधरी ने संजीव सिंह की ओर से दलीलें पेश की थीं.

**पूर्व में जमानत याचिकाएं खारिज :** संजीव सिंह की जमानत याचिका पूर्व में तीन बार निचली अदालत और तीन बार उच्च न्यायालय से खारिज हो चुकी थी. परंतु इस बार, सर्वोच्च न्यायालय में यह दलील दी गई कि इस केस में शामिल अन्य कई आरोपियों को पहले ही जमानत मिल चुकी है.

**हत्या का मामला और पृष्ठभूमि :** यह मामला 21 मार्च 2017 की शाम का है, जब धनबाद के सरायढेला थाना क्षेत्र में कांग्रेस नेता नीरज सिंह, उनके अंगरक्षक मुन्ना तिवारी, ड्राइवर घोल्टू और सहयोगी अशोक यादव की गोलीबारी में हत्या कर दी गई थी. इस घटना के बाद नीरज सिंह के भाई अभिषेक सिंह उर्फ गुड्डू सिंह के बयान पर सरायढेला थाना में प्राथमिकी (कांड संख्या 48/17) दर्ज की गई थी. इसमें संजीव सिंह समेत 10 से अधिक लोगों को आरोपी बनाया गया था.

**चार्जशीट और ट्रायल की स्थिति :** पुलिस ने इस मामले में 28 जून 2017 को चार्जशीट दाखिल की थी. 3 जनवरी 2019 को अदालत ने संजीव सिंह समेत छह आरोपियों के खिलाफ आरोप तय किए थे. वर्तमान में बचाव पक्ष की ओर से अदालत में बहस चल रही है. पूर्व विधायक संजीव सिंह की ओर से बहस करते हुए सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता एमए नियाजी ने कहा कि नीरज हत्याकांड की जांच सरकार की दो एजेंसियों, सीआईडी और स्थानीय पुलिस, ने की थी. इस मामले में तीन अनुसंधानकर्ताओं ने जांच की. इसके बावजूद, सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को जानबूझ कर अदालत से छुपाया गया, ताकि पूरे मामले को अपने अनुसार मोड़ा जा सके और संजीव सिंह को फंसाया जा सके. अधिवक्ता नियाजी ने अपनी दलील में कहा कि घटना की सबसे पहली जांच सराढेला थाना प्रभारी अरविंद कुमार ने की थी. उन्होंने 26 तारीख तक जांच की.

(शेष पेज-11 पर)

**अन्य आरोपियों को पहले जमानत**

इस केस में आरोपी पिंटू सिंह, संजय सिंह, धनजी सिंह, चंदन सिंह और कुर्बान को पहले ही सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल चुकी है, जबकि रिंकू सिंह और डबलू मिश्रा को उच्च न्यायालय से जमानत प्राप्त हो चुकी है. अब इसी आधार पर संजीव सिंह को भी राहत मिल गई है.

**स्वास्थ्य के आधार पर मिली राहत**

अधिवक्ता मो जावेद के अनुसार, संजीव सिंह सात प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हैं और लंबे समय से मुकदमा लंबित है. सुनवाई पूरी न होने के चलते उनका संवैधानिक अधिकार भी प्रभावित हो रहा था. यह तर्क सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष प्रभावी रहा.

**असत्य पर सत्य की जीत हुई : रागिनी**

पूर्व विधायक संजीव सिंह को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिलने के बाद झरिया की वर्तमान विधायक रागिनी सिंह ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा, यह असत्य पर सत्य की जीत है. हमें न्यायपालिका पर पूर्ण विश्वास था, जो आज सच साबित हुआ है. सावन के इस पावन महीने में भोले बाबा ने कृपा की है. रागिनी सिंह ने कहा कि यह फैसला कोयलांचल के हर मां, बहन और भाई की प्रार्थनाओं का परिणाम है. उन्होंने समर्थकों और क्षेत्र की जनता का आभार प्रकट करते हुए कहा कि इस संघर्ष के समय में सबका साथ बना रहा, जो संजीव सिंह के लिए ताकत का स्रोत बना. संजीव सिंह की जमानत को लेकर झारखंड की राजनीति में नई हलचल देखी जा रही है. कोयलांचल की राजनीति में उनका प्रभाव पूर्व से रहा है.

**बेटा निर्दोष, सच्चाई सामने आयी : कुंती सिंह**

पूर्व विधायक और संजीव सिंह की मां की आंखें कोर्ट के फैसला सुनते ही नम हो गयी थी. उन्होंने नम आंखों से कहा कि हमें हमेशा विश्वास था कि सच्चाई सामने आएगी. मेरा बेटा निर्दोष है. हमने भगवान से बार-बार प्रार्थना की थी कि वह बेक़सूर है, तो देवी-देवता उसे ज़रूर बाहर लाएँगे. वही हुआ. झूठ के सामने सच्चाई की जीत हुई है. उसे राजनीतिक साजिश के तहत फंसाया गया था. कोर्ट के फैसले से परिवार को नई उम्मीद मिली है.

**राखी पर यह बड़े उपहार से कम नहीं : किरण सिंह**

संजीव सिंह की बहन किरण खबर सुनते ही भावुक हो गयी. बोली कि संजीव सिंह सिर्फ मेरी नज़र में नहीं, बल्कि धनबाद की हर माँ, हर बहन और हर भाई के दुआओं के केंद्र थे. रक्षाबंधन के मौके पर यह ज़मानत हमारे लिए बड़े उपहार से कम नहीं है. जिन लोगों ने कष्ट दिए, उनकी सच्चाई सामने आ गई है. माता रानी ने शक्ति दी और धनबाद की जनता ने हर कदम पर साथ दिया.

### नीरज हत्याकांड की बहस में चौथे दिन संजीव के वकील ने कहा

## रंजय के रहते ही उसकी हत्या का बदला के लिए संजीव पर लगा षड्यंत्र का आरोप

**धनबाद।** झरिया के पूर्व भाजपा विधायक संजीव सिंह के विरुद्ध अभियोजन ने यह साक्षी लाया है कि संजीव सिंह का करीबी माना जाने वाला रंजय सिंह के जीवन काल में ही उसकी हत्या का बदला लेने के लिए संजीव सिंह अपने सहयोगियों के साथ षड्यंत्र रचा था. अनुसंधानकर्ता ने अदालत के समक्ष अपने बयान में ऐसा कहा है कि 18 दिसंबर 16 को संजीव सिंह का अन्य लोगों के साथ मोबाइल लोकेशन उत्तर प्रदेश के एक ही स्थान पर मिला है. इस मोबाइल लोकेशन को आधार बनाकर अनुसंधान करता संजीव सिंह को षड्यंत्रकारी का आरोपित कर दिया जबकि उसे समय रंजय सिंह जीवित था और उसके डेढ़ माह के बाद रंजय सिंह की हत्या होती है. अदालत में अनुसंधानकर्ता ने ना तो मोबाइल का टावर लोकेशन दिया है ना ही उसे जगह का नाम बताया है. यहां तक की मोबाइल का सीडीआर भी उसे तिथि से पहले का दिया गया है. संजीव सिंह को फसाने के चक्कर में रघुकुल तथा अनुसंधानकर्ता के खिलाफ कई साक्ष्य अदालत के समक्ष आ चुके हैं. उक्त बातें संजीव सिंह की ओर से बहस करते हुए सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता एम ए नियाजी, मोहम्मद जावेद, आलोक कुमार एवं अरुण कनवा ने अदालत के समक्ष दस्तावेज की साक्ष्य का हवाला देते हुए बताया.

**नीरज की हत्या से फायदा रघुकुल को**

एमपी एमएलए मामलों के विशेष न्यायाधीश दुर्गेश चंद्र अवस्थी की अदालत में संजीव सिंह की ओर से शुक्रवार को छठे दिन भी बहस जारी रखी. बचाव पक्ष की ओर से अदालत को बताया गया कि संजीव सिंह के जेल जाने से रघुकुल को फायदा हुआ है. नीरज सिंह के भाई अभिषेक सिंह को नीरज सिंह का ट्रेड यूनियन में स्थान मिला, रघुकुल द्वारा अपने पैतृक संपत्ति की बिक्री की जाने लगी तथा नीरज सिंह की पत्नी चुनाव में जीत कर विधायक बनी. बचाव पक्ष में अभियोजन द्वारा हत्या के लिए बताए गए मोटिव के संबंध में तर्क देते हुए कहा कि संजीव सिंह घटना के समय झरिया के विधायक थे तथा जनता मजदूर संघ में महामंत्री, हिंद मजदूर संघ मैं उपाध्यक्ष तथा जेबीसीसीएल में सदस्य थे तो नीरज सिंह की लोकप्रियता संजीव से कैसे अधिक थी. उल्टे नीरज सिंह से ज्यादा संजीव सिंह की लोकप्रियता बढ़ रही थी. इसलिए संजीव सिंह को इस मामले में फसाया गया और इसका साक्षी भी उपलब्ध है. अभियोजन यह भी साक्ष्य नहीं ला पाया कि रंजय सिंह का श्राद्ध कैमूर में हुआ था और अदालत में जितने भी मोबाइल नंबर दिए गए हैं उनमें से किसी का भी टावर लोकेशन अनुसंधानकर्ता द्वारा नहीं दिया गया है और बिना टावर लोकेशन के यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि किस स्थान पर किसने षड्यंत्र रची थी. रंजय सिंह की हत्या का इल्जाम एकलव्य सिंह तथा अभिषेक सिंह पर नहीं लगा है ऐसा उन लोगों ने अपने बयान में भी नहीं कहा तो फिर संजीव रंजय सिंह की हत्या का बदला नीरज सिंह से क्यों लेगा. जहां तक जैनेंद्र सिंह की बात है तो मुकेश सिंह एवं एकलव्य सिंह के मामले में जैनेंद्र सिंह गवाह बना था और उसका सिंह मेंशन से पारिवारिक संबंध है था इसलिए जैनेंद्र सिंह को इस मामले में घसीटा गया. मामले की सुनवाई सोमवार को करने का अदालत ने आदेश दिया है.

**जमानत मिली पर धनबाद सशर्त आने की अनुमति**

नई दिल्ली/धनबाद। सुप्रीम कोर्ट ने झरिया के पूर्व विधायक संजीव सिंह को सत्र ट्रायल नंबर 276/2017 से जुड़े मामले में सशर्त जमानत दे दी है. अदालत ने कहा कि मुकदमा अपने अंतिम चरण में है, सभी गवाहों की गवाही पूरी हो चुकी है और अब गवाहों को प्रभावित करने या सबूतों से छेड़छाड़ की कोई संभावना नहीं है. कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट को निर्देश दिया कि वह उचित शर्तें और नियम तय करे. विशेष शर्त के तहत आरोपी ट्रायल की कार्यवाही के अलावा धनबाद जिले में प्रवेश नहीं कर सकेगा. अदालत ने यह भी दोहराया कि लंबे समय से जेल में बंद व्यक्ति को बिना ट्रायल पूरा किए कैद में रखना न्यायसंगत नहीं है. इसके साथ ही लंबित सभी अधीनस्थ याचिकाओं को निस्तारित मान लिया गया है.

# रक्षाबंधन पर बहनों को झारखंड सरकार का उपहार

## 3 लाख 53 हजार 199 बहनों को मिली जुलाई महीने की सम्मान राशि

शुभम संदेश। धनबाद

राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के तहत जुलाई 2025 में धनबाद जिले की कुल 3,53,199 बहनों को सम्मान राशि (2500 रुपए प्रति लाभुक) का सीधे उनके बैंक खातों में आधार-बेस्ड भुगतान कर दिया गया है. इस संबंध में उपायुक्त आदित्य रंजन ने बताया कि इसमें कुल 88 करोड़ 29 लाख 97 हजार 500 रूपये की राशि अंतरण की गई है. साथ ही योजना अंतर्गत जिला के लाभुकों को जून महीने में सम्मान राशि का भी भुगतान किया गया है. उन्होंने बताया कि यह योजना राज्य सरकार द्वारा महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी और सम्मानित जीवन देने के उद्देश्य से शुरू की गई है, जिसके अंतर्गत लाभुक महिलाओं को हर माह 2500 रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जाती है. प्रखंड एवं शहरी क्षेत्र के लाभुकों की संख्या (जुलाई 2025 माह के लिए) निम्न है.

1. प्रखण्ड कार्यालय, बाघमारा - 46032
2. अंचल कार्यालय, बाघमारा - 7395
3. प्रखण्ड कार्यालय, बलियापुर - 21917
4. अंचल कार्यालय, बलियापुर - 1159
5. प्रखण्ड कार्यालय, धनबाद - 7237
6. अंचल कार्यालय, धनबाद - 35011
7. प्रखण्ड कार्यालय, एग्यारकुण्ड - 16904
8. अंचल कार्यालय, एग्यारकुण्ड - 5251
9. प्रखण्ड कार्यालय, गोविन्दपुर - 50976
10. अंचल कार्यालय, गोविन्दपुर - 848
11. अंचल कार्यालय, झरिया - 44733
12. प्रखण्ड कार्यालय, कलियासोल - 20123
13. प्रखण्ड कार्यालय, निरसा - 24272
14. प्रखण्ड कार्यालय, पूर्वी टुण्डी - 9860
15. अंचल कार्यालय, पुटकी - 17792
16. प्रखण्ड कार्यालय, तोपचाँची - 26976
17. प्रखण्ड कार्यालय, टुण्डी - 16713

| | |
|---|---|
| कुल लाभुकों की संख्या | 3,53,199 |
| कुल राशि | 88,29,97,500 |

उपायुक्त ने कहा कि जिन लाभुकों का आवेदन स्वीकृत हो चुका है लेकिन उनके बैंक खाते आधार से लिंक नहीं हैं, वैसे लाभुकों को योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है. सभी लंबित लाभुकों से शीघ्र आधार सीडिंग कराने की अपील की है ताकि उन्हें यथाशीघ्र योजना का लाभ मिल सके. वर्तमान में जिला स्तर पर लाभुकों का भौतिक सत्यापन कार्य भी तीव्र गति से जारी है. सत्यापन उपरांत योग्य पाए गए लाभुकों को भी योजना का लाभ प्रदान किया जाएगा. जिन लाभुकों का भौतिक सत्यापन अब तक नहीं हो पाया है, वे आंगनबाड़ी सेविका से संपर्क कर सत्यापन प्रपत्र प्राप्त करें और आवश्यक प्रक्रिया पूरी करने के बाद उन्हें योजना का लाभ मिल पायेगा.

# धनबाद जिले के 130 शराब दुकानों के लिए आवेदन शुरू

## नई शराब नीति के तहत निजी स्तर पर होगा संचालन

शुभम संदेश। धनबाद

झारखंड सरकार की नई शराब नीति शुक्रवार से लागू हो गई. इसके तहत, 1 सितंबर से धनबाद ज़िले में सभी 130 देसी और विदेशी शराब की दुकानों का संचालन निजी स्तर पर किया जाएगा. इन दुकानों का आवंटन एक पारदर्शी ई-लॉटरी प्रक्रिया के माध्यम से होगा.

**ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया :** सहायक उत्पाद आयुक्त रामलीला रवानी ने शुक्रवार को एक प्रेस वार्ता में बताया कि इच्छुक आवेदक 8 अगस्त की सुबह 11:00 बजे से 20 अगस्त 2025 की शाम 7:00 बजे तक आधिकारिक वेबसाइट https://exciselottery.jharkhand.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. यह बंदोबस्ती 1 सितंबर 2025 से 31 मार्च 2030 तक की अवधि के लिए होगी. आवेदन के साथ निर्धारित धरोहर राशि और आवेदन शुल्क का भुगतान क्रेडिट/डेबिट कार्ड या नेट बैंकिंग के माध्यम से करना होगा. यह भुगतान 20 अगस्त की रात 11:59 बजे तक बैंक खाते में जमा होना अनिवार्य है, अन्यथा आवेदक ई-लॉटरी में हिस्सा नहीं ले पाएँगे.

(शेष पेज-11 पर)

**आवश्यक दस्तावेज और समय-सीमा**

ई-लॉटरी में सफल होने वाले आवेदकों को 25 अगस्त 2025 तक स्व-सत्यापित दस्तावेज़, प्रतिभूति राशि और वार्षिक अनुज्ञप्ति शुल्क ज़िला उत्पाद कार्यालय में जमा करना होगा. इसके अलावा, 29 अगस्त तक दुकान के लिए आपत्ति-रहित परिसर का विवरण और अग्रिम उत्पाद परिवहन कर की राशि भी जमा करनी होगी.

## श्मशान घाट की जमीन के अतिक्रमण के विरूद्ध चलाया जागरुकता अभियान

शुभम संदेश। तेतुलमारी

खेपचाटांड स्थित श्मशान घाट की जमीन की जबरन घेराबंदी कर शेड बनाने को लेकर शुक्रवार को छोटानगरी के ग्रामीणों ने जागरूकता अभियान चलाया गया. ग्रामीणों को समस्या से अवगत कराया. ग्रामीणों ने कहा कि खेपचाटांड की श्मशान घाट की जमीन को एक हार्डकोक भट्ठा के मालिक व कुछ भू माफिया के द्वारा कब्जा किया जा रहा है. ग्रामीण नरेश महतो ने कहा कि इसे बचाने को लेकर जिला प्रशासन से लेकर प्रखंड स्तर तक के पदाधिकारी को पत्र के माध्यम से अवगत करा दिया गया है. जिला प्रशासन की ओर से समस्या का समाधान करने की बात कही गई है. शीघ्र जिला प्रशासन समस्या का समाधान नहीं कराती हैं तो हमलोग आंदोलन पर उतरेंगे. नरेश महतो, पंसस अमृत रवानी, संगीता महतो, बसंत सिंह, संतोष महतो,गणेश रवानी, सुभाष महतो, गोविंद ठाकुर,लोकनाथ महतो, खोखन हजाम, राजकुमार सिंह, सुनीता देवी, बबीता देवी, रीना देवी, सीमा देवी, पार्वती देवी, प्रमिला देवी, सबीता देवी आदि शामिल थे.

# खरखरी खूनी संघर्ष मामले में अभियुक्त को पकड़ने गई पुलिस से हुई नोक झोंक

शुभम संदेश। मधुबन

मधुबन थाना व धर्माबांध ओपी सिमा क्षेत्र बाबुडीह जंगल में बीते 9 जनवरी को हिलटॉप आउटसोर्सिंग कंपनी में वर्चस्व स्थापित करने को लेकर हुए खूनी संघर्ष मामले में फरार चल रहे नामजद अभियुक्त प्रकाश यादव पिता कामेश्वर यादव को शुक्रवार को उसके आशाकोठी स्थित घर से शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया गया. पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि फरार चल रहा प्रकाश यादव दोपहर के समय अपने घर पर है. जिसके बाद कतरास थाना प्रभारी असित कुमार सिंह के नेतृत्व में एक टीम गठित की. धर्माबांध ओपी प्रभारी मनोज कुमार पांडे, सोनारडीह ओपी प्रभारी दिलीप पॉल, मधुबन थाना के एसआई शिबू सोरेन दल बल के साथ पुलिस आशाकोठी स्थित उसके आवास पहुंची. पुलिस को देखकर वह भागने लगा. पुलिस ने पूरे क्षेत्र की नाकाबंदी कर रखी थी. पुलिस ने चारों तरफ से घेरकर उसको पकड़ लिया. हालांकि उसने भागने की पूरजोर कोशिश की. इस दौरान पुलिस के साथ नोक झोंक होने की भी खबर है. फिलहाल पुलिस उसे महफूज जगह पर रख कर पूछ ताछ कर रही है.

## निरसा ओसीपी में अवैध खनन के दौरान चाल धंसने से एक की मौत

निरसा बाजार (शुभम संदेश)। ईसीएल मुग्मा क्षेत्र अंतर्गत राजा कोलियरी स्थित निरसा ओसीपी में शुक्रवार को अवैध कोयला खनन के दौरान चाल धंसने से बिरसिंहपुर डांगा पाड़ा निवासी एक युवक की मौत हो गई, जबकि एक अन्य युवक घायल हो गया. हालांकि निरसा पुलिस और ईसीएल की तरफ से ऐसी किसी घटना की पुष्टि नहीं हो पायी है। लोगों का कहना है घायल युवक को परिजन तुरंत इलाज के लिए अस्पताल ले गए. मृत युवक को कड़ी मशक्कत के बाद पोकलेन मशीन और ग्रामीणों की सहायता से चाल के मुहाने से निकाला गया. इसके बाद परिजन मृतक को लेकर वहां से चले गए. निरसा मुखिया संघ के अध्यक्ष दिनेश सिंह ने कहा कि यह पहला मामला नहीं है. इससे पहले भी तीन ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें स्थानीय युवकों की जान गई है. कोलियरी प्रबंधन और निरसा प्रशासन की ओर से अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है.

## ब्रीफ खबरें

### कर्मी की मौत के बाद पुत्र को मिला प्रोविजनल नियोजन

**बाघमारा।** बीसीसीएल ब्लॉक दो क्षेत्र के अंतर्गत मधुबन वाशरी में कार्यरत कर्मी फिटर सह ऑपरेटर गिरधारी महतो की असामयिक मृत्यु के बाद उनके आश्रित को नियोजन और मुआवजे की मांग को लेकर श्रमिक प्रतिनिधियों और प्रबंधन के बीच वार्ता हुई. इस वार्ता में मृतक कर्मी की पत्नी कौशल्या देवी की अनुशंसा पर उनके पुत्र आनंद महतो को तत्काल प्रोविजनल नियोजन देने पर सहमति बनी. वार्ता में प्रमुख रूप से श्रमिक प्रतिनिधि जेके झा, गोपाल मिश्रा, धनंजय महतो, तुलसी साव, गोपाल गोप, जगदीश साव, रंजीत महतो, उत्तम पांडे आदि शामिल थे.

### प्राथमिक विद्यालय चैनपुर में रक्षाबंधन

**गोविंदपुर।** प्राथमिक विद्यालय चैनपुर में शुक्रवार को बालिकाओं के बीच राखी बनाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई. उत्कृष्ट राखी बनाने वाली बालिकाओं को मुखिया गोविंद प्रसाद साव ने सम्मानित किया. प्रधानाध्यापक चंद्रदेव यादव एवं सहायक अध्यापक शंकर कुमार सिंह ने कहा कि बालिकाओं की प्रतिभा निखारने एवं रक्षाबंधन के महत्व को समझाने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

### डीएवी की छात्राओं ने जवानों को बांधी राखी

**पुटकी।** सामाजिक एकता,प्रेम, सद्भाव, सम्मान व सुरक्षा के संदेश को राखियों के माध्यम से जन-जन पहुंचाने का प्रयास किया. स्कूल के छात्र-छात्राओं ने स्व हस्त निर्मित राखी का निर्माण किया. मुनीडीह कोलियरी, ओपी जाकर पुलिस अधिकारी, सीआईएसएफ, मजदूरों एवं कर्मचारियों के कलाई में राखी बांधी. स्कूली छात्राओं से राखी बंधवा कर वे सभी खुश थे. डीएवी मुनीडीह के विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए स्नेह स्वरूप उपहार चाकलेट्स, मिठाइयां दी. इस कार्यक्रम में कविता श्रीवास्तव, सरिता सिंह, मिस शैफाली, तुशी नन्दी, नूतन कुमारी, एचके शास्त्री, कृष्णा प्रसाद, आर केएस यादव एवं आरएम पटेल शामिल हुए. प्राचार्या इंदू प्रसाद ने मुनीडीह के अधिकारी, मजदूर, कर्मचारी एवं पुलिस जवानों को रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामना का संदेश भेजा.

# नवाटांड के डुकूडीह गांव में डेढ़ महीने से पसरा है अंधेरा

**ग्रामीणों की गुहार के बाद भी नहीं बदला जला हुआ ट्रांसफार्मर, 70 परिवार प्रभावित**

शुभम संदेश। टुंडी

फतेहपुर पंचायत अंतर्गत नवाटांड गांव के डुकूडीह टोला में पिछले डेढ़ महीने से बिजली का ट्रांसफार्मर जला हुआ है, जिससे गांव में अंधेरा पसरा हुआ है. करीब 70 परिवार बिजली की सुविधा से वंचित हैं. इस कारण स्कूली बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है और ग्रामीणों का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है. ग्रामीणों ने बताया कि ट्रांसफार्मर जलने की सूचना सहायक विद्युत अभियंता को समय पर दे दी गई थी, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है. मोबाइल चार्ज करने के लिए लोगों को दूसरे गांव जाना पड़ रहा है, जिससे परेशानी और बढ़ गई है. सामाजिक कार्यकर्ता सुनील कुमार महली ने बताया कि बिना बिजली के ग्रामीणों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है. वहीं, झामुमो के वरिष्ठ नेता और टुंडी विधानसभा क्षेत्र के सक्रिय कार्यकर्ता रतिलाल टुडू ने बिजली विभाग के अधिकारियों से फोन पर बात कर अविलंब नया ट्रांसफार्मर लगाने की मांग की है.

## ट्रांसफार्मर उड़ने से 500 की आबादी 48 घंटे से अंधेरे में

**लोयाबाद।** लोयाबाद हटिया गोलाई की करीब 500 की आबादी मंगलवार से अंधेरे में है. बिजली विभाग के मुताबिक,यहां का ट्रांसफार्मर जल चुका है. मेंटेनेंस कर्मियों ने दो बार फॉल्ट चेक करने के बाद इसकी पुष्टि की. स्थानीय निवासियों का कहना है कि ठेकेदार नई तार और पोल बदलने का काम कर रहा था, जिसके चलते दिनभर बिजली काटी जाती रही. मंगलवार शाम बिजली बहाल करने के प्रयास में फॉल्ट हुआ और ट्रांसफार्मर खराब हो गया. उपभोक्ताओं ने इसे विभाग की सीधी लापरवाही बताते हुए संबंधित जेई को जिम्मेदार ठहराया. लोगों ने यह भी आरोप लगाया कि जेई और एसडीओ फोन नहीं उठाते और जनता की परेशानी से कोई सरोकार नहीं रखते. चेंबर के सचिव सुनील पांडे ने कहा कि तार और पोल बदलने के नाम पर उपभोक्ताओं को परेशान किया जा रहा है. अधिक लोड से ट्रांसफार्मर जला है,यहां 500 केवीए का ट्रांसफार्मर लगाना जरूरी है. विभाग के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर शिवेंद्र कुमार ने कहा कि शुक्रवार रात तक नया ट्रांसफार्मर बदल दिया जाएगा.

## आरटीआई कार्यकर्ता का पुतला दहन कार्यक्रम स्थगित

बाघमारा (शुभम संदेश)। भीमकनाली मार्ग पर भीमकनाली अंडरपास के पास क्षतिग्रस्त सड़क की मरम्मत न होने के विरोध में हॉस्पिटल कॉलोनी, डुमरा के आरटीआई कार्यकर्ता महेश कुमार द्वारा प्रस्तावित पुतला दहन कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है. 13 अगस्त को आद्रा रेल मंडल के डीआरएम और पथ निर्माण विभाग, धनबाद के कार्यपालक अभियंता का पुतला जलाने के लिए निर्धारित था. पथ निर्माण विभाग, धनबाद के कार्यपालक अभियंता ने बताया कि महेश कुमार की शिकायत (04 अगस्त 2025) के आधार पर रेलवे अभियंताओं के साथ अंडरपास के पास सड़क का निरीक्षण किया गया. यह अंडरपास आद्रा रेल मंडल के अंतर्गत है और इसका रखरखाव रेलवे द्वारा किया जाता है. जलजमाव के कारण सड़क क्षतिग्रस्त हो रही थी, जिसे 05 अगस्त को अस्थायी रूप से ठीक कर यातायात सुगम बनाया गया. विभाग ने स्थाई समाधान के लिए 10 लाख रुपये की स्वीकृति (पत्रांक-2661(S), 09 जुलाई 2025) प्राप्त की है, लेकिन यह राशि अपर्याप्त होने के कारण 64,06,422/- रुपये का प्राक्कलन तैयार कर (पत्रांक-1340/अनु, 31 जुलाई 2025) स्वीकृति के लिए भेजा गया है. स्वीकृति मिलने पर स्थाई समाधान किया जाएगा. आश्वासन के बाद महेश कुमार ने पुतला दहन कार्यक्रम स्थगित कर दिया.

## न्यूज अपडेट

### महुदा में पंचायत मैत्री अभियान, मुखिया ने सेविकाओं को दिए निर्देश

**महुदा (शुभम संदेश)।** जिला पंचायती राज पदाधिकारी के निर्देश पर महुदा क्षेत्र के पंचायत प्रतिनिधियों ने सशक्त पंचायती मैत्री अभियान के तहत आयोजित तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया. शिविर में सेविकाओं ने भाग लिया. पदुगोड़ा पंचायत सचिवालय में मुखिया महेश कुमार पटवारी ने सेविकाओं से कहा आप सब अपने अपने पोषक क्षेत्र में पेंशनधारी वृद्ध वृद्धा की सूचि बनायें. जो जीवित है और जिसकी मृत्यु हो चुका है वह सूचि प्रखण्ड स्तर में पंचायती राज कार्यालय में जमा करें. शिविर में मौके पर मुखिया महेश कुमार पटवारी, पंचायत सचिव जलेश्वर गोप,रोजगार सेवक मोहसीम अख्तर, सेविका कुमारी शशी सरिता, भारती पाण्डे, सुमित्रा देवी, रेणु गुप्ता, गुडिया देवी, नमन कुमार पटवारी, संजय दास, भोला दास, मुर्ताज अन्सारी, ज्योति राय, आदी मौजुद थेI इसके अलावे काण्डरा में मुखिया रिंकु देवी, सिंगड़ा मे मुखिया सुर्यकान्त महतो, हाथुडीह मे मुखिया संगीता घोषाल, छत्रुटाँड मे मुखिया नन्दीनी देवी, लोहापट्टी मे मुखिया सुनिता देवी, तेलमोचो मे मुखिया मीरा कुमारी, महुदा में मुखिया बदरूद्दीन अन्सारी, तेतुलिया-2 में मुखिया गुड़िया देवी, सहित क्षेत्र के अन्य पंचायतो में भी शिविर लगाया गया.

### अंबेडकर एकेडमी स्कूल में पौधरोपण

**लोयाबाद (शुभम संदेश)।** अंबेडकर एकेडमी स्कुल में शुक्रवार को पौधरोपण किया गया. जिसमे स्कुल के बच्चे सहित सभी शिक्षक शामिल रहे. प्राचार्य बिनोद रस्तोगी ने बताया कि देश में जनसंख्या बढ़ती जा रही है.वृक्ष कटते जा रहे हैं.जिससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है. पर्यावरण संतुलन बनाने के लिए पौधा रोपण जरूरी है. उन्होंने सभी से मां के नाम एक पौधा लगाने का आह्वान किया है.कहा कि कोलियरी क्षेत्र मे रहने वाले चारों तरफ से निकल रही जहरीले गैस से प्रभावित है. पर्यावरण पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है. पर्यावरण संतुलन बिगड़ने का सीधा प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर रहा है .लोग अपने-अपने घरों के आस-पास मां के नाम एक पेड़ पौधा जरूर लगाए.मौके पर एसएस प्रसाद सुनीता राउत,कामिनी भंडारी, चैताली दत्ता ,राजनंदनी सिंह ,रितिका राउत प्रतिमा देवी पूजा कुमारी, राखी देवी, मालविका मुखर्जी ,रंजीत राजवंशी, सुनील कुमार, आलोक कुमार आदि मौजूद थे.

### भाजपाई 13 को गोविंदपुर में निकालेंगे तिरंगा यात्रा

**गोविंदपुर (शुभम संदेश)।** भाजपा गोविंदपुर मंडल अध्यक्ष तालेश्वर साव की अध्यक्षता में गोविंदपुर पूर्वी मंडल की बैठक हरदेव राम स्मृति भवन में हुई. तिरंगा यात्रा कार्यक्रम प्रभारी भाजपा के जिला उपाध्यक्ष राजेश चौधरी उपस्थित हुए. मंडल अध्यक्ष ने सभी शक्ति केन्द्र के प्रभारियों को हर घर में तिरंगा लगे इसके लिए बूथ स्तर पर जनसंपर्क अभियान चलाने का आग्रह किया. 13 अगस्त को तिरंगा यात्रा में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आह्वान किया. इस दौरान नवल किशोर चौधरी को दूरसंचार विभाग में सलाहकार समिति का सदस्य बनाए जाने पर भाजपा नेता ओमप्रकाश बजाय ने अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया. बैठक को जगू साव तथा गोविंद राय ने संबोधित किया. संचालन जगन्नाथ हरि एवं धन्यवाद ज्ञापन अवधेश कुमार ने किया. मौके पर गौतम मंडल, तुफान दा, मन्नू सेन, प्रशान्त मंडल, हराधन मोहली, देबेन मंडल, उज्जवल मंडल, शिबा गोस्वामी फूलचंद महतो, षष्टी मंडल, बिनोद पाण्डे, तारकेश्वर महतो, पशुपतिनाथ मंडल आदि उपस्थित हुए.

### स्वामी विवेकानंद स्कूल में पेरेंट्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम

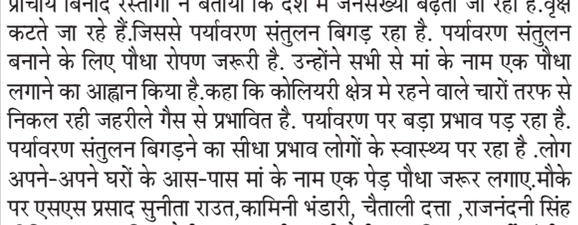

**चिरकुंडा (शुभम संदेश)।** स्वामी विवेकानंद स्कूल चिरकुंडा में शुक्रवार को पेरेंट्स ओरिएंटेशन कार्यक्रम (बाल वाटिका विभाग) का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य नए शैक्षणिक सत्र में अभिभावकों को विद्यालय की कार्यप्रणाली, नई शिक्षा पद्धति को अपनाने (एनईपी), एवं शैक्षणिक गतिविधियों से अवगत कराना था. कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के निदेशक विवेक कुमार सिंह के स्वागत भाषण से हुआ. उन्होंने विद्यालय की शिक्षण पद्धति, सह- पाठयक्रम गतिविधियों और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला. मुख्य रिसोर्स पर्सन मिली बरधान ने नई शिक्षा पद्धति (एनईपी) के ऊपर सभी अभिभावकों के साथ विस्तृत रूप से चर्चा किया. विभागवार शिक्षकों ने अभिभावकों से परिचय किया और कक्षा में अपनाये जाने वाली शिक्षण तकनीकी की जानकारी दी. अभिभावकों को बच्चों की दिनचर्या, अनुशासन ,होमवर्क नीति और परीक्षाओं की रूपरेखा के बारे में बताया गया. साथ ही विद्यालय द्वारा आयोजित होने वाली खेल और सामाजिक गतिविधियों के महत्व पर भी चर्चा हुई. कार्यक्रम के अंत में प्रश्न उत्तर सत्र रखा गया, जिसमें अभिभावकों ने अपने जिज्ञासाओं का समाधान पाया तथा विद्यालय प्रबंधन ने सभी अभिभावकों का उनकी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया.

### बीएड छात्राओं ने मनाया सावन महोत्सव

**गोविंदपुर (शुभम संदेश)।** तैयब मेमोरियल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज सरकारडीह में शुक्रवार को प्रशिक्षु छात्राओं ने सावन महोत्सव एवं राखी बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया. इसमें छात्राओं ने सावन के गीत प्रस्तुत किये और राखी बनाकर अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया. प्राचार्य डॉ रीना भारती ने सावन उत्सव और रक्षाबंधन के बारे में विस्तार से बताया. उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को कॉलेज के सचिव डॉ नसीम अहमद ने पुरस्कृत किया. मौके पर प्रबंध निदेशक अब्दुस समद, मो शाहिद समेत सभी शिक्षक मौजूद थे.

## भाजपा की तिरंगा यात्रा जिप मैदान से कम्बाइंड बिल्डिंग तक 10 को

शुभम संदेश। धनबाद

भाजपा धनबाद महानगर के अंतर्गत बरटांड मंडल के सामुदायिक भवन, हाउसिंग कॉलोनी में पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत 'तिरंगा यात्रा' की सफलता के लिए एक कार्यशाला बैठक आयोजित की गई. शुक्रवार को हुई बैठक में सर्वसम्मति से भव्य तिरंगा यात्रा आयोजित करने और घर-घर तिरंगा फहराने का निर्णय लिया गया. आगामी 10 अगस्त को सुबह 10 बजे जिला परिषद मैदान से कंबाइंड बिल्डिंग तक तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी. कार्यशाला के प्रभारी पूर्व जिला अध्यक्ष चंद्रशेखर सिंह ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आम जनता में भी तिरंगा यात्रा को लेकर देशभक्ति की भावना प्रबल है. सभी उत्साहपूर्वक तिरंगा यात्रा में भाग लेंगे. बैठक में पूर्व जिला अध्यक्ष चंद्रशेखर सिंह, राजकुमार मंडल, जगबंधु मंडल, मंडल अध्यक्ष किशोर मंडल, महामंत्री रिंकु सिन्हा, महामंत्री टुन्ना सिंह, पुष्पा राय, भोला पांडे, संजीत सिंह, मनोज सिंह, अमरजीत कुमार, सरोज शुक्ला, बबलू फरीदी, हुलास दास, प्रमोद अग्रवाल, बेबी यादव, राम शर्मा सहित कई अन्य लोग उपस्थित थे.

## चासनाला में पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को दी गई श्रंद्धाजलि

शुभम संदेश। चासनाला

चासनाला स्थित बीसीकेयू कार्यालय चासनाला में शुक्रवार को झामुमो के संस्थापक, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया. सभा की अध्यक्षता बीसीकेयू के केंद्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सुन्दरलाल महतो तथा संचालन केंद्रीय सचिव जोगिंदर महतो ने किया. इस दौरान सर्वप्रथम स्व. शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उनकी याद में 2 मिनट का मौन रखा गया. तत्पश्चात श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित सभी लोगों ने दिशोम गुरु के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की. श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए सुंदरलाल महतो ने कहा कि शिबू सोरेन आदिवासी अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले नेता थे. जिन्होंने झारखंड में गरीबों और आदिवासियों के शोषकों और उनकी जमीन हड़पने वाले सूदखोर महाजनों के खिलाफ 70 के दशक में प्रभावी जन आंदोलन संगठित किया था. उन्हें झारखंड के एक जुझारू और लोकप्रिय जन नेता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा. सभा को बारी बारी से केंद्रीय सचिव कामरेड जोगिंदर महतो, सीपीएम सिंदरी बलियापुर लोकल कमेटी सचिव विकास कुमार ठाकुर, ठेका मजदूर यूनियन सिंदरी के महामंत्री गौतम प्रसाद, जनवादी महिला समिति के नेत्री रानी मिश्रा, मजदूर नेता कार्तिक ओझा समीर मंडल ने संबोधित किया. मौके पर चंद्रनाथ घोष, महेश महतो, रजप अंसारी, जितेंद्र मिश्रा, एसडी सिंह, नारायण बाउरी, संजीव महतो, कंचन महतो, धनंजय ओझा, सहित सैकड़ो की संख्या में मजदूर उपस्थित थे.

## मारवाड़ी महिला समिति ने जैप-3 के जवानों को बांधी राखी

शुभम संदेश। गोविंदपुर

मारवाड़ी महिला सम्मेलन, गोविंदपुर शाखा द्वारा शुक्रवार को झारखंड सशस्त्र पुलिस (जैप) वाहिनी-3 के जवानों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया गया. इस अवसर पर सम्मेलन की राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण प्रमुख रेणु दुदानी ने कहा कि देश और समाज की सुरक्षा के लिए घर-परिवार से दूर रहने वाले इन जवानों को भी बहनों के स्नेह की आवश्यकता होती है. रक्षाबंधन जैसे पर्व पर उन्हें भाई जैसा अपनापन देना हमारा नैतिक कर्तव्य है. शाखा अध्यक्ष सीमा सरिया ने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट प्रेम और विश्वास का प्रतीक है. हमारे जवान हर समय देश की रक्षा के लिए तैयार रहते हैं, ऐसे में यह पर्व उनके प्रति सम्मान और अपनत्व प्रकट करने का माध्यम बनता है. इस अवसर पर मीना बंसल, निर्मला अग्रवाल, सीमा अग्रवाल, रागिनी शर्मा सहित अन्य सदस्य भी मौजूद रहीं. कार्यक्रम के दौरान जवानों ने भी महिलाओं के इस स्नेहिल कार्यक्रम के प्रति आभार व्यक्त किया.

# नगरकियारी प्लस टू हाई स्कूल में मनाया गया विश्व आदिवासी दिवस

**सांस्कृतिक कार्यक्रम में दिखी आदिवासी संस्कृति की झलक**

शुभम संदेश। गोविंदपुर

प्लस टू हाई स्कूल, नगरकियारी में शुक्रवार को विश्व आदिवासी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने आदिवासी संस्कृति से जुड़े रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिसे उपस्थित शिक्षकों और विद्यार्थियों ने सराहा. विद्यालय प्रांगण आदिवासी परंपरा और गौरव के रंग में रंगा नजर आया. विद्यालय की प्राचार्या डॉ. मीरा सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विश्व आदिवासी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि झारखंड के आदिवासियों ने न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजा है, बल्कि देश की आजादी में भी उनका अमूल्य योगदान रहा है. आदिवासी वीरों के संघर्ष और बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता. कार्यक्रम की शुरुआत झारखंड आंदोलन के प्रणेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन की तस्वीर पर श्रद्धासुमन अर्पित कर की गई. इस दौरान विद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहे और कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया.

## बाढ़ से कई गांवों का जिला मुख्यालय से संपर्क कटा

### ग्रामीण नजरबंद की हालत में, कई वर्षों से कर रहे हैं एक पुल की मांग

**खास बात**

- लोगों को आने-जाने में होती है काफी दिक्कत
- नाव से आने-जाने के लिए देना पड़ रहा है शुल्क

सुबोध सिंह

**साहिबगंज।** सदर प्रखंड के आधा दर्जन से अधिक गांवों के ग्रामीण पिछले चार-पांच दिनों से अपने ही गांवों में नजरबंद की हालत में ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं. गंगा नदी में आई बाढ़ के कारण लाल बथानी, मूसहरी टोला, किशन प्रसाद के कई टोले, दक्षिण मखमलपुर

और उत्तर मखमलपुर पंचायत के कई गांवों का संपर्क जिला मुख्यालय से कट गया है. दरअसल, किशन प्रसाद और लाल बथानी को जोड़ने वाली सड़क पर लगभग 100 मीटर की दूरी तक 10 मीटर ऊंचा बाढ़ का पानी बह रहा है. इस वजह से ग्रामीण बहुत परेशान हैं. लोगों को आने-जाने में सबसे ज़्यादा दिक्कत हो रही है. इस मजबूरी में, गांव के लोगों को नाव से आने-जाने के लिए शुल्क देना पड़ रहा है. यहां के कई ग्रामीणों ने बताया कि किशन प्रसाद से लाल बथानी पंचायत को जोड़ने वाली इस मुख्य सड़क पर बाढ़ के समय लगभग हर साल ऐसी स्थिति बन जाती है. बाढ़ का पानी सड़क पर आ जाने से उनके गांवों का संपर्क जिला मुख्यालय से कट जाता है.

#### गंगा में आई बाढ़ से लोग परेशान

ग्रामीणों ने बताया कि इस जगह पर एक पुल की मांग कई सालों से की जा रही है. पुल के इंतजार में कई लोग यहां दुर्घटना का शिकार हो गए और कई बूढ़े होकर गुजर गए. झारखंड के तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम, क्षेत्रीय सांसद और विधायक के तमाम आश्वासनों के बाद भी यह जरूरी मांग जस की तस है. समस्या का समाधान न होने के कारण हर साल बाढ़ के समय लगभग दो महीने तक लोगों को आवागमन में परेशानी होती है. इस बार भी गंगा नदी में आई बाढ़ ने इस इलाके के लोगों की मुसीबत एक बार फिर बढ़ा दी है. ग्रामीणों का कहना है कि यहां 2-3 छोटे पुलियों की नहीं, बल्कि एक लंबे पुल की जरूरत है. हालांकि, सरकार की तरफ़ से पिछले साल पुलिया बनाने के लिए टेंडर किया गया था, लेकिन इसका निर्माण अब तक नहीं हो सका है. ऐसे में, इलाके के ग्रामीणों की परेशानी कई सालों से वैसी ही बनी हुई है.

## सड़क हादसे में एक की मौत उग्र लोगों ने की सड़क जाम

शुभम संदेश। गिरिडीह

डुमरी-गिरिडीह मुख्य मार्ग पर कोलडीहा के पास शुक्रवार की सुबह हुए एक सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए. घायलों का इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है. तीनों युवक मुफस्सिल थाना क्षेत्र के पहाड़ीडीह गांव के रहने वाले थे और सुबह गिरिडीह स्टेडियम से लौट रहे थे. तभी डुमरी की तरफ से आ रहे एक ओवरलोड 12 चक्का ट्रक ने पीछे से कुर्बान अंसारी (22) की स्कूटी को टक्कर मार दी. इस हादसे में कुर्बान की मौके पर ही मौत हो गई. बताया जा रहा है कि कुर्बान पुलिस सेवा में जाने के लिए सुबह स्टेडियम में दौड़ का

अभ्यास करने गया था. घटना के बाद स्थानीय लोगों ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कुछ देर के लिए सड़क जाम कर दिया और प्रशासन से ओवरलोड वाहनों पर सख्त कार्रवाई की मांग की. घटना की सूचना मिलते ही सदर प्रखंड विकास पदाधिकारी गणेश रजक, मुफस्सिल थाना और नगर थाना की पुलिस मौके पर पहुंची . उन्होंने आक्रोशित लोगों को समझा-बुझाकर शांत कराया और सड़क जाम हटवाया. पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है. फिलहाल, पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है.

### ब्रीफ खबरें

#### स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों की समीक्षा

**दुमका।** समाहरणालय सभागार में शुक्रवार को आयुक्त लालचन्द डाडेल की उपस्थिति में उपायुक्त अभिजीत सिन्हा ने आगामी स्वतंत्रता दिवस के सफल आयोजन के लिए एक व्यापक समीक्षा बैठक की. बैठक में स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों, सुरक्षा व्यवस्था, सजावट और अन्य जरूरी इंतजामों का पूरा जायजा लिया गया. उपायुक्त ने सभी विभागों को समय-सीमा का पालन करते हुए तेजी से काम करने के निर्देश दिए. उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस का आयोजन देशभक्ति और एकजुटता की भावना के साथ भव्य रूप से किया जाना चाहिए,

#### नए अंचलाधिकारी ने संभाला पदभार

**बेंगाबाद (गिरिडीह)।** बेंगाबाद प्रखंड सह अंचल कार्यालय में मो. अमीर हमजा ने 42वें अंचलाधिकारी (सीओ) के रूप में पदभार ग्रहण किया. पदभार संभालने के बाद उन्होंने शायराना अंदाज में अपनी बात रखी, हम नए हैं, ये शहर नया है, हादसे सिखाएंगे काम कैसे करना है. इस कथन से उन्होंने अपने कार्यकाल की शुरुआत को सहज और सकारात्मक बनाते हुए एक भावनात्मक संदेश दिया. नए सीओ मो. हमजा इससे पहले दुमका जिले के पालोजोरी प्रखंड में प्रखंड विकास पदाधिकारी के पद पर कार्यरत थे. बेंगाबाद में सीओ प्रियंका प्रियदर्शी के तबादले के बाद उन्होंने यह पदभार संभाला है. पदभार ग्रहण समारोह के दौरान, पूर्व सीओ प्रियंका प्रियदर्शी ने पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया और उन्हें शुभकामनाएं दीं.

#### सविमं में राखी, मेहंदी और रंगोली प्रतियोगिता

**ललमटिया।** रक्षाबंधन के अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर ललमटिया में राखी, मेहंदी और रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा चौथी से दसवीं तक के छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। प्रत्येक कक्षा के विजेता छात्रों को ग्रामीण बैंक के शाखा प्रबंधक आर्यन वर्णवाल और विद्यालय के सचिव निशु टिबड़ेवाल ने पुरस्कृत किया। कार्यक्रम के बाद, बहनों ने भाइयों को अपनी बनाई हुई राखियां बांधी। मुख्य अतिथि आर्यन वर्णवाल ने बच्चों से स्वदेशी और हस्तनिर्मित राखियों का उपयोग करने का आग्रह किया, जिससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके। इस कार्यक्रम में विद्यालय के कई आचार्य और अन्य लोग भी उपस्थित थे।

#### डीसी ने सुनी फरियादियों की समस्याएं

**बोकारो।** उपायुक्त अजय नाथ झा ने शुक्रवार को साप्ताहिक जनता दरबार लगाकर आम जनता की समस्याओं को सुना और उनके समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए. जनता दरबार में जिले के दूर-दराज के क्षेत्रों से आए फरियादियों ने व्यक्तिगत, सामाजिक और प्रशासनिक मुद्दे रखे. जनता दरबार में जमीन पर अवैध कब्जा, 'अबुआ आवास योजना' और 'मंईयां सम्मान' की राशि का भुगतान, पेंशन और लंबित मानदेय का भुगतान, अंचल कार्यालय से जुड़े मामले, दाखिल-खारिज और भूमि अतिक्रमण, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, सिविल सर्जन कार्यालय और डीसीएलआर चास से संबंधित मामले, जिला आपूर्ति पदाधिकारी से जुड़े अन्य मामले आये. उपायुक्त अजय नाथ झा ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि जनता दरबार में मिले आवेदनों की जांच प्राथमिकता के आधार पर करें और उनका जल्द से जल्द समाधान सुनिश्चित करें. उन्होंने स्पष्ट किया कि हर शिकायत पर समय पर कार्रवाई होनी चाहिए और शिकायतकर्ता को उसकी जानकारी भी दी जानी चाहिए. जनता दरबार में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए 60 से ज़्यादा लोगों ने अपनी समस्याएं उपायुक्त के सामने रखीं.

## रिम्स वार्ड बॉय निकला गृहभेदन गिरोह का सरगना, दो गिरफ्तार

### बोकारो पुलिस ने किया एक साथ आठ मामलों का खुलासा

शुभम संदेश। बोकारो

बोकारो शहर में लगातार बढ़ रही गृहभेदन की घटनाओं का सरगना रिम्स का वार्ड बॉय विनोद सोरेंग निकला. गृहभेदन में उसका सहयोगी झोपड़ी कॉलोनी, बोकारो का रहने वाला महेश कुमार उर्फ लल्ला था. पुलिस ने इन दोनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है. इनकी गिरफ्तारी के साथ ही पुलिस को आठ मामलों का खुलासा करने में सफलता मिली है. इसकी जानकारी पुलिस मुख्यालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित प्रेस वार्ता में पुलिस कप्तान हरविंदर सिंह ने दी. पुलिस कप्तान ने बताया कि बीते एक महीने से सेक्टरों में गृहभेदन के मामले बढ़ गए थे. इन घटनाओं को रोकने, उनका खुलासा करने और अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए उन्होंने और पुलिस उपाधीक्षक (नगर) आलोक रंजन के संयुक्त नेतृत्व में एक विशेष छापेमारी दल का गठन किया था.

**रांची से हुई गिरफ्तारी**

इस दल ने कार्रवाई करते हुए जांच के दौरान विनोद सोरेंग उर्फ रघु मुंडा को रांची के बरियातू थाना अंतर्गत देसवाली टोली से गिरफ्तार किया. विनोद रांची स्थित रिम्स में वार्ड बॉय के रूप में काम करता था. विनोद ने अपने बयान में बोकारो शहर में लगातार हो रही चोरी की घटनाओं में अपनी संलिप्तता स्वीकार की. उसकी निशानदेही पर देसवाली टोला स्थित उसके किराए के मकान से चोरी का सामान बरामद किया गया. उसने यह भी बताया कि चोरी करने और सामान बेचने में झोपड़ी कॉलोनी, बोकारो का रहने वाला सुनार महेश कुमार उर्फ लल्ला उसका सहयोग करता था. महेश चोरी के सामान को गलाकर नया रूप देकर बाजार में बेचता था.

#### गिरफ्तार आरोपियों से बरामद सामान

पुलिस टीम ने झोपड़ी कॉलोनी में छापेमारी कर महेश कुमार उर्फ लल्ला को भी गिरफ्तार किया. उसने भी चोरी की घटनाओं में शामिल होने की बात स्वीकार की और उसकी निशानदेही पर उसके घर से चोरी का सामान बरामद किया गया. आपको बता दें कि विनोद सोरेंग उर्फ रघु मुंडा पहले भी बोकारो में रह चुका है और सेक्टर-6 एवं बीएस सिटी थाना से जेल जा चुका है. इनसे बरामद सामान में सोने जैसी कान की बालियां, हीरे जैसी अंगूठी, सोने जैसी चेन और ब्रेसलेट, नाक की नथ, चांदी जैसे ग्लास, चांदी जैसी कटोरी, चांदी जैसी 9 जोड़ी पायलें और चांदी जैसी चेन व साड़ी पिन शामिल हैं. छापेमारी दल में पुलिस निरीक्षक सुदामा कुमार दास (थाना प्रभारी, बीएस सिटी), पुलिस निरीक्षक संजय कुमार (थाना प्रभारी, सेक्टर-4), उपनिरीक्षक जितेश कुमार, उपनिरीक्षक महती बोयपाय, उपनिरीक्षक पिंटू महथा, सहायक उपनिरीक्षक पंकज कुमार, हवलदार सुरेंद्र राम और आरक्षी सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह शामिल थे.

#### संस्था ने आयोजित किया 'वृक्ष राखी' कार्यक्रम

**बोकारो(शुभम संदेश)।** स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण संस्थान के पर्यावरण प्रहरियों ने रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर शुक्रवार शाम 4:30 बजे बोकारो के पर्यावरण-मित्र चौक स्थित पर्यावरण-मित्र वाटिका में 'वृक्ष राखी कार्यक्रम' मनाया. इस दौरान सैकड़ों वृक्षों को रक्षा-सूत्र बांधकर उनके प्रति आभार व्यक्त किया और उनकी रक्षा का संकल्प लिया. इस अवसर पर संस्थान के महासचिव शशि भूषण ओझा 'मुकुल' ने कहा कि संस्थान दशकों से यह 'वृक्ष राखी' कार्यक्रम आयोजित कर सभी को वृक्षों की रक्षा की शपथ दिलाता है. उन्होंने कहा कि सभी जानते हैं कि वृक्ष न सिर्फ जीवनदायी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि घातक प्रदूषण से भी हमारी रक्षा करते हैं. साथ ही, वे जड़ी-बूटियों और फल-फूल देकर हमारे स्वास्थ्य की भी रक्षा करते हैं. मुकुल ने ज़ोर देकर कहा कि पेड़ों के कारण ही धरती पर जीवन है और पेड़ों की रक्षा से ही सृष्टि बचेगी. उन्होंने झारखंड में कुछ भू-माफियाओं द्वारा वन भूमि पर अतिक्रमण करने, जंगलों को काटने और आग लगाने की घटनाओं पर चिंता जताई. उन्होंने सरकार और वन विभाग से इन दोषियों पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई करने का आग्रह भी किया. इस वृक्ष राखी कार्यक्रम में शशि भूषण ओझा 'मुकुल', बबलू पांडेय, लक्ष्मण शर्मा, मृणाल कांत चौबे, प्रीति कुमारी, वीरेंद्र चौबे, विजय त्रिपाठी, अर्जुन पांडेय, सुनील कुमार, अनुराग मिश्र, उमा शंकर, विनय पांडेय और कुमार गौरव सहित कई पर्यावरण प्रहरी उपस्थित थे.

### न्यूज अपडेट

#### बच्चों ने सीआरपीएफ जवानों को बांधी राखी

**बोकारो (शुभम संदेश)।** राखी के पावन पर्व पर, डीएवी सेक्टर-4 के बच्चों ने भाई-बहन के इस अटूट बंधन को और भी मजबूत करने के लिए अपने हाथों से रंग-बिरंगी और सुंदर राखियां बनाईं. इन राखियों को बनाने का उद्देश्य भारत माता के वीर सपूतों और देश के सजग सिपाहियों के प्रति अपना सम्मान, आदर, और स्नेह व्यक्त करना था. डीएवी सेक्टर-4 के बच्चे बड़े उत्साह के साथ डीआईजी ऑफिस, सीआरपीएफ के जवानों से मिले और उन्हें राखी बांधकर उनके प्रति आभार व्यक्त किया. सभी बच्चों ने मां भारती के इन पूजक सैनिकों के त्याग, बलिदान और समर्पण के लिए उनका आभार जताया और देश की रक्षा में उनके योगदान को याद किया. इस अवसर पर, डीआईजी सीआरपीएफ अमित कुमार सिंह ने कहा कि देश के वीर सैनिकों के प्रति बच्चों का यह प्रेम और कोमलता से भरा भाव बहुत प्रेरणादायक है. उन्होंने कहा कि अपने परिवार से दूर अपनी कर्मभूमि पर तैनात होने पर भी, इन बच्चों की उपस्थिति और उनका स्नेह हमें अपने परिजनों जैसा सुख और उत्साह दे रहा है. यही हमारा आत्मबल है जो हमें दुश्मनों से लोहा लेते समय ऊर्जा, जोश और अपनी मां-बहनों की रक्षा के लिए मर मिटने की प्रेरणा देता है. इस मौके पर विद्यालय के प्राचार्य एस.के. मिश्रा ने कहा कि वतन की रक्षा में दिन-रात तत्पर इन जवानों को राखी बांधकर विद्यालय के बच्चे स्वयं भी राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझते हैं और उनसे प्रेरणा लेकर अपनी मातृभूमि पर सब कुछ न्योछावर करने का भाव धारण करते हैं. बच्चों ने इस अवसर पर भारत माता की जय और जय हिंद के नारों से पूरे परिसर को गूंजायमान कर दिया.

#### सेवानिवृत्त शिक्षक ने बंजर भूमि को बनाया हरा-भरा

**जमुआ (शुभम संदेश)।** जमुआ प्रखंड के चितरडीह गांव के सेवानिवृत्त शिक्षक जय सिंह ने अपनी बंजर जमीन पर बागवानी करके उसे हरा-भरा बना दिया है. उन्होंने सरकार की बिरसा मुंडा आम बागवानी योजना के तहत लगभग तीन सौ पौधे लगाए हैं, जिससे अब उनकी पूरी जमीन हरियाली से लहलहा रही है. सेवानिवृत्त शिक्षक ने बताया कि पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उन्होंने साल 2024 में सरकार की इस महत्वाकांक्षी बागवानी योजना के तहत पौधरोपण किया था. इस बागवानी में उन्होंने आम, अमरूद, महोगनी, शीशम, सागवान और कटहल के अलावा मकई, पपीता, अरहर, बैंगन, मिर्च और टमाटर के पौधे भी लगाए हैं. उन्होंने यह भी बताया कि जहाँ छाया रहती है, वहाँ उन्होंने हल्दी के पौधे लगाए हैं. जय सिंह ने कहा कि 60 वर्ष की उम्र तक उन्होंने शिक्षा की अलख जगाई और अब वे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पेड़-पौधे लगा रहे हैं. उन्होंने गुरुवार को भी महोगनी के दस और पौधे लगाए. ग्रामीण सरताज आलम ने सेवानिवृत्त शिक्षक के इस कार्य की सराहना करते हुए कहा कि सभी किसानों को जय सिंह से प्रेरणा लेकर इस तरह की आम बागवानी करनी चाहिए और इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ उठाना चाहिए.

#### 20 विद्यार्थी इंटरनेशनल ओलंपियाड में टॉप पर

**बोकारो (शुभम संदेश)।** डीपीएस चास के 20 विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड 2024-25 में शानदार प्रदर्शन किया है. साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन (एस.ओ.एफ.) द्वारा आयोजित इस परीक्षा में, विद्यालय के विद्यार्थियों ने जोनल टॉपर रैंक हासिल कर विद्यालय का मान बढ़ाया है. प्रथम स्थान पहली कक्षा के रतन सिंह (अंग्रेजी) और तनुश्री (गणित), द्वितीय स्थान तीसरी कक्षा की अन्वेषा गोस्वामी (हिंदी), तृतीय स्थान पहली कक्षा के अनंत आशीष (अंग्रेजी) रहे. इन टॉपर्स को पदक और 1000 रुपए का नकद पुरस्कार दिया गया. इसके अलावा 16 अन्य विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 500 रुपए के उपहार वाउचर और प्रमाण-पत्र दिए गए. इनमें अंग्रेजी में शिवांश कुमार सिंह और अनुष्का कुमारी, कंप्यूटर साइंस में अरफा परवीन, और गणित में अभिनव कुमार और रौनक कुमार जैसे विद्यार्थी शामिल हैं. विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस. मोहन और निदेशिका डॉ. मनीषा तिवारी ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की.

#### शहीद निर्मल महतो को दी गई श्रद्धांजलि

**तलगड़िया (शुभम संदेश)।** झारखंड आंदोलन के महानायक और युवाओं के प्रेरणा स्रोत शहीद निर्मल महतो की 38वीं शहादत दिवस आज इलेक्ट्रो स्टील वेदांता चौक, अलकुशा में श्रद्धापूर्वक मनाई गई. इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय लोग, सामाजिक कार्यकर्ता और आंदोलनकारी नेता मौजूद थे. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आजसू के जिलाध्यक्ष सचिन महतो ने कहा कि निर्मल बाबू ने जल, जंगल, जमीन और झारखंड की अस्मिता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी. उनका सपना था कि झारखंड की जनता खुशहाल और आत्मनिर्भर बने. हमें उनके विचारों को अपनाकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करना होगा. निर्मल महतो ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू) के संस्थापक थे. उन्होंने छात्र शक्ति को संगठित करके झारखंड आंदोलन को नई ऊर्जा दी थी. 8 अगस्त, 1987 को जमशेदपुर में उनकी शहादत हुई, जिसने आंदोलन को और भी ज़्यादा तेज कर दिया. कार्यक्रम का समापन शहीद निर्मल महतो की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने और उनके विचारों को आत्मसात करने के संकल्प के साथ हुआ. शहीद निर्मल महतो स्मारक समिति के अध्यक्ष ज्योति लाल महतो ने बताया कि हर साल शहादत दिवस पर यह आयोजन इसलिए किया जाता है, ताकि आने वाली पीढ़ी उनके संघर्ष से प्रेरणा ले सके. इस कार्यक्रम में सियालजोरी पंचायत के मुखिया सीताराम महतो, मुखिया रोहित रजक, मुखिया प्रदीप कुमार, मिथिलेश महतो, बासुदेव रजवार, जिला परिषद सदस्य सुशैन रजवार, सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे.

## वीएचएसएनडी सत्र का सिविल सर्जन ने किया औचक निरीक्षण

शुभम संदेश। साहिबगंज

सिविल सर्जन-सह-मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. रामदेव पासवान ने आज उधवा प्रखंड के पहाड़ गांव उत्तर स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में आयोजित ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण दिवस (वीएचएसएनडी) सत्र का औचक निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान, टीकाकरणकर्मी रूना लैला अपनी ड्यूटी पर मौजूद थीं और टीकाकरण का काम नियमित रूप से चल रहा था. निरीक्षण के बाद डॉ. रामदेव पासवान ने जिले के सभी वीएचएसएनडी सत्र स्थलों पर कार्यरत टीकाकरण कर्मियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बात की और उन्हें जरूरी निर्देश दिए. उन्होंने साफ निर्देश दिया कि प्रत्येक टीकाकरण केंद्र को टीकाकरण के दिन सुबह 9:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक अनिवार्य रूप से खुला रखा जाए, ताकि सभी लाभार्थियों को समय पर स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें. सिविल सर्जन ने यह भी बताया कि वीएचएसएनडी सत्रों के माध्यम से लाभार्थियों को नियमित टीकाकरण, एएनसी जांच, पोषण परामर्श, शिशु के वजन की निगरानी और अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं दी जाती हैं. उन्होंने चेतावनी दी कि इन सत्रों में किसी भी तरह की लापरवाही बिलकुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी. उन्होंने स्वास्थ्यकर्मियों को निर्देश दिया कि वे समुदाय के साथ बेहतर तालमेल बनाकर वीएचएसएनडी सत्रों को प्रभावी ढंग से चलाएं, ताकि मां और शिशु के स्वास्थ्य में सुधार सुनिश्चित किया जा सके.

## भू-माफियाओं के बढ़ते आतंक के खिलाफ एकजुट हों : राजेश यादव

### फॉरवर्ड ब्लॉक ने की प्रतिवाद सभा कर चरणबद्ध आंदोलन की शुरुआत

शुभम संदेश। बेंगाबाद (गिरिडीह)

बेंगाबाद के पूर्व जिला परिषद सदस्य और ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक के जिला संयोजक राजेश यादव ने भू-माफियाओं के बढ़ते आतंक पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भू-माफियाओं का आतंक हद से ज़्यादा बढ़ चुका है. वे किसी भी जमीन का एग्रीमेंट लेकर सरेआम गुंडों के साथ जमीन पर कब्जा करने उतर जाते हैं. इससे गरीब और कमजोर लोगों के अधिकार छीने जा रहे हैं. उन्होंने कहा कि कई मामलों में रैयतों (जमीन मालिकों) को न चाहते हुए भी अपनी जमीन छोड़नी पड़ती है. यादव ने आरोप लगाया कि इन भू-माफियाओं को कुछ तथाकथित नेताओं, समाजसेवियों और यहां तक कि प्रशासन तथा पुलिस के कुछ लोगों का भी प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग मिलता है. उन्होंने इस अन्याय के खिलाफ आम जनता को एकजुट होने का आह्वान किया.

#### चरणबद्ध आंदोलन की घोषणा

राजेश यादव ने कहा कि इस सभा का आयोजन 4 अगस्त को हुई घटना के विरोध में किया गया था, जहाँ भू-माफियाओं ने बाहरी गुंडों के साथ मिलकर एक गरीब यादव परिवार को उसकी जमीन से बेदखल करने की नाकाम कोशिश की थी. श्री यादव ने कहा कि इस मुद्दे पर स्थानीय लोग चुप नहीं बैठेंगे, बल्कि एकजुट होकर इस आतंक और किसी भी नाजायज गतिविधि का विरोध करेंगे. उन्होंने पीड़ित परिवार द्वारा थाने में दिए गए आवेदन और मौजूद सबूतों के आधार पर सभी दोषियों को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग की. इस सभा को स्थानीय मुखिया प्रतिनिधि महेंद्र चौधरी, पंचायत समिति सदस्य बासुदेव पासी, वार्ड सदस्य गाजो पंडित, छोटू पासी, शंकर यादव, संजय चौधरी, सुखदेव गोस्वामी आदि ने भी संबोधित किया और घटना के दोषियों को तत्काल गिरफ्तार करने की मांग की. प्रतिवाद सभा के बाद, बोरोटांड़ से महुआर चौक तक एक जुलूस निकाला गया.

## विस्थापित गांवों में पंचायत गठन के लिए उपायुक्त से मिलीं विधायक

**खास बात**

- बीएसएल द्वारा अधिग्रहीत भूमि का म्यूटेशन जल्द कराने की मांग

शुभम संदेश। बोकारो

विधायक श्वेता सिंह ने विस्थापितों के साथ बोकारो के उपायुक्त अजय नाथ झा से मुलाकात की. उन्होंने उपायुक्त को लोकहित में काम करने के लिए शुभकामनाएं दीं और उनसे कहा कि वे डीपीएलआर से विस्तृत प्रस्ताव तैयार करवाएं. विधायक ने उपायुक्त से आग्रह किया कि, बीएसएल (बोकारो स्टील लिमिटेड) द्वारा अधिग्रहित भूमि का पंजी-2 में म्यूटेशन (नामांतरण) और डीपीएलआर कार्यालय में उपलब्ध दस्तावेजों का डिजिटलीकरण जल्द से जल्द पूरा करवाया जाए, ताकि पंचायत गठन का काम तेजी से हो सके.

#### प्रशासन विस्थापितों की समस्याओं के प्रति गंभीर

विधायक श्वेता सिंह लगातार विधानसभा में विस्थापित क्षेत्रों को पंचायत में शामिल करने के लिए आवाज उठाती रही हैं. इसका परिणाम यह हुआ है कि जिला प्रशासन ने विस्थापितों की वर्तमान स्थिति, अधिकार, पुनर्वास और पंचायत गठन जैसे मुद्दों पर विस्तार से जांच करके राज्य सरकार को रिपोर्ट सौंपने की प्रक्रिया शुरू कर दी है. उपायुक्त अजय नाथ झा ने इस पर कहा कि विस्थापितों की समस्याओं को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह गंभीर है. औद्योगीकरण के कारण जिन लोगों को विस्थापित होना पड़ा है, उनके अधिकारों की रक्षा और जीवन-स्तर में सुधार करना प्रशासन की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है.

#### पंचायत गठन से गांव का होगा विकास

विधायक ने कहा कि इन क्षेत्रों में पंचायतों का गठन होने से विकास के

कामों में तेजी आएगी. राज्य सरकार की योजनाओं को लागू करने में पारदर्शिता बढ़ेगी और स्थानीय लोगों को प्रशासन से सीधे जुड़ने में आसानी होगी. इससे स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, सड़क और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएं भी गांवों तक तेज़ी से पहुंचाई जा सकेंगी. विधायक ने उपायुक्त से कहा कि 19 विस्थापित गांवों को ध्यान में रखकर पंचायत गठन के लिए जल्द से जल्द एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार करवाया जाए. इस प्रस्ताव में पंचायतों की भौगोलिक सीमा, जनसंख्या, बुनियादी ढांचे की जरूरतें और प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़ी पूरी जानकारी शामिल हो. इस अवसर पर विधायक के साथ उत्तरी विस्थापित क्षेत्र के प्रतिनिधि राजकुमार सिंह, शुक्र केवट, धीरेन मंडल, बादल तुरी, अब्दुल अंसारी, शक्ति मुर्मू, काली बेसरा, विनोद राय, महेंद्र राय, पवन सिंह, संतोष मुर्मू, मोहन सोरेन, इम्तियाज अंसारी, दुखन दे और दुर्गा दे भी मौजूद थे, जिन्होंने उपायुक्त को शुभकामनाएं दीं.

#### विस्थापितों ने किया विधायक का स्वागत

**बोकारो।** बोकारो विधानसभा के 19 विस्थापित गांवों को शामिल करते हुए 6 नई पंचायतों का गठन किया जाएगा. इस अवसर पर बोकारो विस्थापित क्षेत्र के पचौरा, वैद्यमारा, कनफट्टा और वास्तेजी जैसे गांवों से आए प्रतिनिधिमंडल ने विधायक श्वेता सिंह के आवास पर पहुंच कर उन्हें गुलदस्ता भेंट किया और उनका आभार जताया. प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि आजादी के बाद, साल 1961 में बोकारो के विकास के लिए हम सभी विस्थापितों ने अपनी जमीन सेल प्रबंधन को दे दी थी. उस समय कुछ आबादी को तो बसाया गया, लेकिन ज्यादातर लोग पुनर्वास से वंचित रह गए थे. उसके बाद से लगातार विस्थापितों के हितों की अनदेखी की जा रही थी. उन्होंने विधायक की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान विधायक ने लगातार विस्थापितों के हित में सदन में आवाज़ उठाई और अथक प्रयास किए, जिससे विस्थापितों में एक नई उम्मीद जगी. इसी क्रम में, 19 विस्थापित गांवों के लिए 6 नई पंचायतों के गठन पर झारखंड राज्य सरकार ने इस गंभीर मामले का संज्ञान लिया है. प्रतिनिधिमंडल ने यह भी कहा कि विस्थापितों की समस्याओं के समाधान को लेकर राज्य सरकार और जिला प्रशासन गंभीर है. बोकारो विधायक श्वेता सिंह ने विस्थापितों का आभार स्वीकार करते हुए कहा कि विस्थापितों के दुख-दर्द और उनकी समस्याओं को दूर करना एक जनप्रतिनिधि के तौर पर मेरी पारिवारिक जिम्मेदारी है. उन्होंने इस बहुप्रतीक्षित मांग पर संज्ञान लेने और आगे की कार्रवाई शुरू करने के लिए राज्य सरकार, बोकारो जिला प्रशासन और क्षेत्र के विस्थापितों को धन्यवाद दिया.

## पीके राय कॉलेज की छात्राओं ने दिव्यांग बच्चों को बांधी राखी

**धनबाद (शुभम संदेश।** पीके राय मेमोरियल कॉलेज, धनबाद की एनएसएस इकाई द्वारा रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया. शुक्रवार को कॉलेज की छात्राएं बस्ताकोला झरिया स्थित गौशाला मोड़ पर संचालित जीवन नामक आवासीय शिक्षण संस्थान पहुँचीं, जहां मंदबुद्धि और दिव्यांग बच्चों संग रक्षा बंधन मनाया. छात्राएं मनीषा कुमारी, राखी कुमारी, काजल कुमारी, साक्षी कुमारी, रिया, प्रियंका और पायल ने इन बच्चों को राखी बाँधकर मिठाइयाँ खिलाईं और उन्हें प्रेम व स्नेह का एहसास कराया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांग बच्चों के मनोबल को बढ़ाना और समाज में समरसता का संदेश देना था. कार्यक्रम जीवन संस्था के संस्थापक अनिल कुमार सिंह के सहयोग से एवं कॉलेज की एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर शर्मिला कुमारी और सभा खातून की निगरानी में संपन्न हुआ. इस अवसर पर एनएसएस वॉलंटियर्स केशव कुमार, इरशाद तथा संस्था के सदस्य डॉ. इरशाद, सुनील सिंह, मनीष कुमार, समेत अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे.

# हुजूर... गोचर जमीन को बेच रहे भू-माफिया

- सरकारी जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराने की ग्रामीणों ने लगाई गुहार

**शुभम संदेश। धनबाद**

उपायुक्त आदित्य रंजन ने शुक्रवार को अपने कार्यालय कक्ष में जनता दरबार का आयोजन किया. जनता दरबार में टुंडी, पूर्वी टुंडी, राजगंज, निचितपुर, भेलाटांड़, गोविंदपुर, बाघमारा सहित अन्य क्षेत्र से आए लोगों ने विभिन्न समस्याओं से संबंधित आवेदन दिए. इसमें पूर्वी टुंडी, शंकरडीह के ग्रामवासियों ने बताया कि शंकरडीह में 7 एकड़ 94 डिसमिल सरकारी जमीन (गोचर भूमि) है. इसको अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए पूर्व में आवेदन दिया था. जिसमें से लगभग 35 से 40 डिसमिल जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराया गया. जबकि वहां सरकारी जमीन का बोर्ड भी है. ग्रामीणों ने बताया कि उक्त सरकारी भूमि की खरीद बिक्री की जा रही है. इसे रोकने का प्रयास करने पर दबंगों द्वारा ग्रामवासियों को धमकी मिलती है. ग्रामवासियों ने उपायुक्त से सरकारी जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराने की गुहार लगाई. वहीं पूर्वी टुंडी के एक अन्य व्यक्ति ने बताया कि उनकी एकमात्र मकान सह दुकान की जमीन का राष्ट्रीय राजमार्ग 419 में अधिग्रहण किया जा रहा है. इसमें उनका 2 डिसमिल रैयती जमीन बचा हुआ है. परंतु पंजी 2 में जमीन का रकवा 0 हो गया है. सुधार के लिए अंचल कार्यालय में 21 मार्च 2025 और 24 जुलाई 2025 को ऑनलाइन और ऑफलाइन सुधार के लिए आवेदन दिया है. लेकिन अब तक पंजी 2 में सुधार नहीं हुआ है. इसके अलावा जनता दरबार में बाघमारा के खोनाठी में पीसीसी सड़क बनाने, अबुआ आवास की द्वितीय किस्त का भुगतान करने, दबंगों द्वारा निजी जमीन पर मकान बनाने में बाधा उत्पन्न करने, गलत कुर्सीनामा बनाकर मुआवजा की राशि लेने, एनएच 2 चौड़ीकरण के लिए तोपचांची में अधिग्रहित भूमि का मुआवजा नहीं मिलने, प्रोजेक्ट अफेक्टेड पर्सन का प्रमाण पत्र के बाद भी बीसीसीएल द्वारा नियोजन नहीं देने सहित अन्य आवेदन प्राप्त हुए. उपायुक्त ने आमजनों की समस्या का समाधान करने के लिए संबंधित पदाधिकारी को निर्देशित किया. जनता दरबार में जन शिकायत कोषांग के प्रभारी पदाधिकारी नियाज अहमद भी मौजूद थे.

## प्राइवेट स्कूलों के आर.टी.ई. मान्यता को लेकर आवेदनों की हुई स्क्रुटनी

- जिला प्रारंभिक शिक्षा समिति की बैठक सपन्न

**धनबाद ।** उपायुक्त आदित्य रंजन की अध्यक्षता में शुक्रवार को जिला प्रारंभिक शिक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई. इसमें के.के. पब्लिक स्कूल, गोविन्दपुर, रायल हाई स्कूल जोड़ापोखर, फागु महतो हाई स्कूल, बाघमारा, इलिट पब्लिक स्कूल, चिरकुण्डा, गुरुकुल पब्लिक स्कूल, गोविन्दपुर, गुरुकुल पब्लिक स्कूल, दलुडीह, बाघमारा, रायल पब्लिक स्कूल, निरसा तथा डी.वाई. पाटिल इंटरनेशनल स्कूल धनबाद के आर.टी.ई. मान्यता को लेकर आवेदनों की स्क्रुटनी की गई. स्क्रुटनी के दौरान समिति को आवेदनों में त्रुटि मिली. इसके बाद समिति ने जिला शिक्षा अधीक्षक को सभी विद्यालयों से त्रुटि दूर करके पुनः आवेदन प्राप्त करने का निर्देश दिया. वहीं उपायुक्त ने सभी विद्यालयों से उनके यहां कार्यरत शिक्षकों का विगत एक वर्ष का स्टेटमेंट आफ अकाउंट आवेदन के साथ संलग्न करने तथा राज्य सरकार से प्राप्त प्रारूप के अनुसार आवेदन समर्पित करने का निर्देश दिया. बैठक में उपायुक्त आदित्य रंजन, धनबाद के विधायक राज सिन्हा, निरसा के विधायक अरूप चटर्जी, जिला शिक्षा अधीक्षक आयुष कुमार, कार्यपालक दंडाधिकारी नारायण राम, झरिया के विधायक के प्रतिनिधि नवीन कुमार, सिंदरी के विधायक के प्रतिनिधि हराधन चौधरी, धनबाद के विधायक के प्रतिनिधि मनोज मालाकार, प्लस टू हाई स्कूल धनबाद के राजेश कुमार मौजूद थे.

## पुटकी में अंचल स्तरीय खनन टास्क फोर्स की बैठक संपन्न

**धनबाद।** उपायुक्त आदित्य रंजन द्वारा जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक में दिए गए निर्देश के आलोक में शुक्रवार को पुटकी के अंचल अधिकारी विकास आनंद की अध्यक्षता में पी.बी. एरिया स्थित गेस्ट हाउस में बीसीसीएल के महाप्रबंधक व पदाधिकारी, सीआईएसएफ के पदाधिकारी, थाना व ओ.पी प्रभारी के साथ अंचल स्तरीय खनन टास्क फोर्स की बैठक आयोजित की गई. इसमें कोयला, बालू के अवैध खनन, परिवहन व भंडारण की रोकथाम पर विस्तृत चर्चा की गई. वहीं अंचल अधिकारी ने बीसीसीएल के पदाधिकारियों को छोड़ दी गई माइंस को सही तरीके से बंद करने, अवैध खनन के हॉट स्पॉट की ड्रोन से नियमित निगरानी करने, अवैध मुहाने की भराई करने का निदेश दिया. साथ ही पुलिस पदाधिकारियों को अवैध खनन की सूचना मिलते ही त्वरित करवाई व एफआईआर दर्ज करने, कोयला परिवहन मार्गों पर वाहनों की सघन जांच करने का निर्देश दिया. इसके अतिरिक्त बीसीसीएल पदाधिकारियों को हाइवा के परिवहन के लिए निर्धारित मार्गो का इस्तेमाल करने, हाइवा का अनियंत्रित संचालन, ओवरलोड, कम उम्र के चालक व बिना सहचालक के चालक के संबंध में उनके अधीनस्थ ट्रांसपोर्टेशन कंपनी को परिवहन से संबंधित नियमों का पालन करवाने व नियमित निगरानी का निर्देश दिया. साथ ही बीसीसीएल पदाधिकारियों को खनन कार्य या ओ.बी. डंप अपने अधिग्रहित भूमि पर ही करने तथा बिना सीएनटी की धारा 49 की अनुमति के पूर्व भूमि की खरीद बिक्री नहीं करने का निर्देश दिया गया. बीसीसीएल पदाधिकारियों को वर्तमान में बारिश के कारण भू-धसान व गैस रिसाव वाले स्थानों का निरीक्षण करवाने तथा प्रभावित लोगों की सहायता के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का भी निर्देश दिया गया.

## आईएसएम में पहला कदम स्कूल ने लगाया राखी स्टॉल

**शुभम संदेश। धनबाद**

नारायणी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित पहला कदम विशेष विद्यालय के बच्चों ने रक्षाबंधन के अवसर पर आईआईटी आईएसएम परिसर में राखी स्टॉल का आयोजन किया. इस अवसर के मुख्य अतिथि आईआईटी आईएसएम के रजिस्ट्रार एवं सचिव प्रबोध पांडेय और सिक्योरिटी हेड राम मनोहर थे, जिन्होंने दीप प्रज्वलन कर स्टॉल का उद्घाटन किया. उन्होंने बच्चों के उत्साह और रचनात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि इनकी मुस्कान ही सबसे बड़ा उत्सव है. यह आयोजन न केवल त्योहार की खुशियां मनाने का माध्यम बना, बल्कि यह भी साबित करता है कि जब हुनर और हौसला मिलते हैं, तो हर सपने की डोर मजबूत हो जाती है. स्टॉल में विद्यालय के बच्चों द्वारा बनाई गई सुंदर राखियां, बंधन-बार, तोरण, बैग, बास्केट, नाइटी, पलाजो आदि आकर्षक वस्तुएं प्रदर्शन और बिक्री के लिए रखी गई. स्कूल की सचिव अनीता अग्रवाल ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य बच्चों की कला, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देना है. कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने बच्चों की रचनात्मकता की प्रशंसा की और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी.

## बार एसोसिएशन चुनाव : दूसरे दिन 58 उम्मीदवारों ने भरा पर्चा

- कुल 87 उम्मीदवारों ने अब तक किया नामांकन

**शुभम संदेश। धनबाद**

धनबाद बार एसोसिएशन में 16 पदों पर होने वाले चुनाव में नामांकन के दूसरे दिन 58 उम्मीदवारों ने विभिन्न पदों के लिए नामांकन दायर किया वहीं अब तक कुल 87 उम्मीदवार नामांकन दायर कर चुके हैं. नामांकन के दूसरे दिन अध्यक्ष पद के लिए कंसारी मंडल, सुरेश प्रसाद, उपाध्यक्ष पद के लिए धनेश्वर महतो ,पी के भट्टाचार्य, महासचिव के पद के लिए जितेन्द्र कुमार, मेघनाथ रवानी, दीपनारायण रंजीत कुमार साव, कोषाध्यक्ष के पद के लिए जयदेव कुम्हार, शिव कुमार प्रसाद सिंह, कृष्ण बिहारी सहाय, मुकुल तिवारी, केदारनाथ महतो गणेश नारायण पांडेय. जबकि सहायक कोषाध्यक्ष के पद के लिए राजीव कुमार, मुकुंद महतो, दिलीप कुमार प्रसाद, मनोज प्रमाणिक ने पर्चा दायर किया. वहीं संयुक्त सचिव प्रशासन के पद के लिए अमरदीप कुमार राय, गजेंद्र यादव, नंदलाल झा, जगन्नाथ महतो, अमित कुमार सिंह, गोपाल जी पाण्डेय, ब्रज किशोर, नीरज कुमार ,संयुक्त सचिव लाइब्रेरी के पद के लिए राजेंद्र गोप, अमल कुमार महतो, राणा बिक्रम कुमार सिंह ,अतीश कुमार , मोहम्मद ऐनुल हक, जयराम मिश्रा और कार्यकारिणी सदस्य के पद के लिए अनंत कुमार उपाध्याय, हीरालाल चौहान, रणधीर कुमार श्रीवास्तव, विजय पांडेय, मधुकर शर्मा, डॉ कुमारी सुप्रिया राय,दीपक कुमार रुईया, संजय कुमार मंडल, राजन पाल ,सिद्धार्थ कुमार शर्मा ,मोहम्मद शेख जावेद ,दिलीप कुमार यादव, कृष्णकांत सिंह, विश्वजीत मिश्रा, मोहम्मद कलीम, मोहम्मद जुवेद ,अंचल शर्मा ,सोहागी हांसदा, अरविंद कुमार सिन्हा, ब्रह्मदेव कुमार सिंह, रंजीत कुमार महतो, करुणा तिवारी ,सत्येंद्र कुमार राम, गौरव सुमन , पिंकी धीवर, सिद्धार्थ कुमार शर्मा ने नामांकन दायर किया.

## विधायक राज सिन्हा ने किया सड़क का शिलान्यास

**शुभम संदेश। धनबाद**

धनबाद विधायक सह विधानसभा सचेतक राज सिन्हा ने अरलगढ़िया पंचायत के अंतर्गत महत्वपूर्ण सड़कों के निर्माण कार्य का विधिवत शिलान्यास किया. जिसमें ए-टाइप सब स्टेशन से शिव शंकर नगर तालाब, प्रेम नगर कॉलोनी होते हुए पुटकी-भागा मुख्य सड़क तक और शिव शंकर नगर तालाब से मनबोध सिंह के आवास होते हुए राजपूत बस्ती तक की सड़क शामिल है. इस सड़क निर्माण परियोजना से स्थानीय लोगों को बेहतर यातायात सुविधा प्राप्त होगी, साथ ही बरसात और अन्य मौसमी परेशानियों से राहत मिलेगी. वर्षों से लंबित इस मांग के पूर्ण होने से स्थानीय लोगों में हर्ष का माहौल है. इस अवसर पर विधायक राज सिन्हा ने कहा कि जनता की सेवा और क्षेत्र का विकास हमारा संकल्प है। सड़क, बिजली, पानी और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना हमारी प्राथमिकता है. आने वाले समय में और भी विकास योजनाएं शुरू की जाएंगी. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित थे. विशेष रूप से प्रखंड अध्यक्ष मनोज सिंह, रवि सिन्हा, राजू सिंह, विकास मिश्रा, राहुल सिंह सहित कई अन्य नागरिक मौजूद रहे.

## 446 निराश्रित बच्चों को डालसा ने दिलाई पहचान

### आधार कार्ड के साथ स्कूलों में कराया नामांकन

**शुभम संदेश। धनबाद**

नालसा एवं झालसा के निर्देश पर 13 मई से शुरू किए गए निराश्रित बच्चों के लिए योजना साथी का आज समापन हुआ. इस मौके पर आयोजित प्रेस वार्ता में डालसा के सचिव सह अवर न्यायाधीश मयंक तुषार टोपनों ने बताया कि प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष डालसा वीरेंद्र कुमार तिवारी के निर्देश पर गठित साथी टीम की ओर से विशेष अभियान चलाया गया. जिसमें 18 साल तक के निराश्रित, झुग्गी-झोपड़ी, फुटपाथ अनाथालय, शेल्टर होम आदि में रह रहे बच्चों को अधिकार मित्र एवं इकाई की टीम ने धनबाद जिले के सभी प्रखंड , पंचायत , ग्रामीण इलाकों में जा जाकर डोर टू डोर एवं जागरूकता शिविरों के माध्यम से बच्चों को चिन्हित किया गया. विशेष कैंप का आयोजन कर आधार कार्ड बनवाया गया. उन्होंने बताया कि अब तक 446 बच्चों का आधार कार्ड बनवाया गया, जिसमें 135 बच्चे दिव्यांग श्रेणी से आते थे. उन सभी का इस योजना के माध्यम से आधार कार्ड बनवाकर हेल्थ चेकअप एवं दिव्यांग प्रमाण पत्र भी बनवा दिया गया, दिव्यांग पेंशन के लिए संबंधित प्रखंडों में आवेदन किया गया है. साथ ही चिन्हित बच्चों का हेल्थ चेकअप एवं जो बच्चे पढ़ाई नहीं कर रहे थे उन सभी बच्चों का नजदीकी स्कूलों में नामांकन कराया गया है.

**निराश्रित बच्चे भी अपनी पहचान और गरिमा के साथ रह सकेंगे : न्यायाधीश**

# आसनसोल

## बराकर वार्ड 67 में नई पाइप लाइन का शुभारंभ

- भेल खुलते ही आधा दर्जन मोहल्लों में पहुंचा पानी लोगों में खुशी

**शुभम संदेश। बराकर**

आसनसोल नगर निगम के कुल्टी बोरो अंतर्गत बराकर वार्ड संख्या 67 के हॉस्पिटल रोड में शुक्रवार को पार्षद निधि से 12 लाख की लागत से बिछाई गई नई पाइप लाइन का उद्घाटन किया गया. जैसे ही भेल खोला गया, आसपास के आधा दर्जन मोहल्लों में पानी की आपूर्ति शुरू हो गई, जिससे स्थानीय लोगों में उत्साह और खुशी का माहौल देखा गया.

इस अवसर पर पूर्व विधायक उज्ज्वल चटर्जी और वार्ड की वर्तमान पार्षद टुम्पा चौधरी मुख्य रूप से उपस्थित रहीं. दोनों नेताओं ने संयुक्त रूप से पाइपलाइन का भेल खोलकर पानी आपूर्ति की विधिवत शुरुआत की. पार्षद टुम्पा चौधरी ने जानकारी दी कि वर्षों से हॉस्पिटल रोड समेत आस-पास के मोहल्लों में पानी की गंभीर समस्या थी. कहीं पाइप लाइन थी, पर पानी नहीं आता था, तो कहीं पाइप लाइन ही नहीं थी. अब हॉस्पिटल रोड, नदी किनारा, दासपाड़ा, धर्मशाला के पीछे बाउरीपाड़ा और लखियाबाद स्कूल के आसपास के क्षेत्रों में 400 से 500 घरों में नियमित और सुगम पेयजल आपूर्ति शुरू हो गई है. इस दौरान वार्ड अध्यक्ष मुन्ना बारिक, पूर्व पार्षद पप्पू सिंह, दीना नाथ दास, टुन्नी लोहिया, सुब्रतो भादुरी समेत बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक मौजूद रहे.

## रामनगर कोलियरी में ठीका कर्मियों ने कराया काम बंद

### वेतन और रोजगार की उठाई मांग, प्रबंधन और यूनियन पर लगाया अनदेखी का आरोप

**शुभम संदेश। कुल्टी**

सैल आईएसपी के अधीन रामनगर कोलियरी में ठीका कर्मियों ने शुक्रवार को कार्य बंद कर प्रबंधन और यूनियनों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया. कोलियरी के कांटा के सामने आईएनटीटीयूसी समर्थित ठीका कर्मियों ने धरना देकर कार्य को पूरी तरह ठप कर दिया. प्रदर्शनकारी मजदूर देवाशीष ने बताया कि चार से पांच महीने पहले राकेश इंटरप्राइजेज ने पेटी कॉन्ट्रैक्ट के तहत मजदूरों से काम करवाया और बिना वेतन और ग्रेच्युटी चुकाए फरार हो गया. इसके बाद टाइकोन प्राइवेट लिमिटेड को नया वर्क ऑर्डर मिला, लेकिन गुरुवार को जब कंपनी की मशीनें पूजा कार्य के लिए कोलियरी पहुंचीं, तो केकेएससी यूनियन ने कार्य में बाधा पहुंचा दी, जिससे मजदूरों को दोबारा बेरोजगारी का सामना करना पड़ा. कर्मियों ने आरोप लगाया कि प्रबंधन और यूनियनों की आपसी खींचतान की वजह से उन्हें रोजी-रोटी की समस्या आन पड़ी है. केकेटीएससी अध्यक्ष बिमान मंडल ने बताया कि टाइकोन को 26 जुलाई को वर्क ऑर्डर मिला था, लेकिन 12 दिन बाद अचानक पूजा करने और उत्पादन शुरू करने की कोशिश की गई, जिससे दोनों यूनियनों में टकराव की स्थिति बन गई. उन्होंने कहा कि संयुक्त यूनियन बैठक के बाद ही सहमति से कार्य शुरू हो सकेगा, जिससे सभी मजदूरों को काम मिल सके. इस बीच कंपनी के जीएम जे. अहमद से संपर्क करने पर उन्होंने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया और टालमटोल कर निकल गए.

### ईसीएल की 50वीं वार्षिक आम बैठक संपन्न

## कोयला उत्पादन और संचालन में हुई उल्लेखनीय प्रगति

**शुभम संदेश। सांकतोड़िया**

कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषंगी और देश की प्रमुख कोयला उत्पादक कंपनी ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की 50वीं वार्षिक आम बैठक शुक्रवार को सांकतोड़िया स्थित मुख्यालय में आयोजित हुई. अधिकतम भागीदारी के लिए बैठक को हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया था. बैठक में कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष पी. एम. प्रसाद, निदेशक (वित्त) मुकेश अग्रवाल, कंपनी सचिव बी. पी. दुबे, ईसीएल के सीएमडी सतीश झा, स्वतंत्र निदेशक शिव नारायण पांडे, कोयला मंत्रालय से उप महानिदेशक डॉ. चेतना शुक्ला, निदेशक (वित्त) मो. अंजार आलम, निदेशक (तकनीकी/संचालन) नीलाद्रि रॉय, निदेशक (मानव संसाधन) गुंजन कुमार सिन्हा, निदेशक (तकनीकी/परियोजना एवं योजना) गिरीश गोपीनाथन नायर, मुख्य सतर्कता अधिकारी दीप्ति पटेल और कंपनी सचिव रामबाबू पाठक सहित मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष और क्षेत्रीय महाप्रबंधक उपस्थित रहे. सीएमडी सतीश झा ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 ईसीएल के लिए ऐतिहासिक रहा, जिसमें न केवल रिकॉर्ड कोयला उत्पादन हुआ, बल्कि संचालन, सतत विकास और कॉर्पोरेट गवर्नेंस में भी महत्वपूर्ण सुधार दर्ज किए गए.कोल इंडिया अध्यक्ष पीएम प्रसाद ने ईसीएल की उपलब्धियों की सराहना करते हुए जल्द से जल्द संचित घाटा समाप्त करने और लाभांश प्रदान करने की दिशा में कार्य करने की सलाह दी.

## तालाब का बांध टूटने से इलाका हुआ जलमग्न, बाढ़ से हालात

- दर्जनों घर जलमग्न , 50 से अधिक परिवार प्रभावित
- पार्षद ने राहत सामग्री वितरित की

**शुभम संदेश। बर्नपुर**

आसनसोल नगर निगम के वार्ड संख्या 56 अंतर्गत राधा नगर रोड स्थित खटाल इलाके में शुक्रवार को भारी बारिश के चलते हदला तालाब का बांध टूट गया, जिससे पूरा निचला इलाका जलमग्न हो गया. अचानक आए पानी से 50 से 60 घरों में घुटने भर तक पानी भर गया, जिससे दर्जनों परिवारों का सामान नष्ट हो गया. विद्युत आपूर्ति एहतियातन बंद कर दी गई है ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना न हो. लोगों के अनुसार, तालाब पहले से ही पानी से लबालब था और शुक्रवार को बारिश के कारण बांध टूटने से इलाके में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई. कुछ लोगों ने बांध को जानबूझकर तोड़े जाने की आशंका भी जताई है. सूचना मिलते ही पार्षद श्रावणी विश्वास और पूर्व पार्षद मिलन मंडल मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया. पार्षद ने बताया कि स्थिति पर नियंत्रण पाने के लिए नगर निगम सक्रिय है और मेयर की पहल पर राहत कार्य शुरू कर दिए गए हैं. प्रभावित परिवारों के बीच चावल, गेहूं और सूखा अनाज वितरित किया गया है.

## आद्रा मंडल में स्वास्थ्य जांच और स्वच्छता कार्यक्रम

**शुभम संदेश। सांकतोड़िया**

स्वच्छता ही सेवा अभियान एवं स्वतंत्रता दिवस 2025 के उपलक्ष्य में दक्षिण पूर्व रेलवे, आद्रा मंडल द्वारा विभिन्न स्वच्छता एवं जन-जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं. इसी क्रम में शुक्रवार को मंडल के विभिन्न स्टेशनों, कार्यशालाओं और स्वास्थ्य इकाइयों में व्यापक स्तर पर स्वच्छता अभियान, पौधरोपण और स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया गया. जिसमें रेलवे कर्मचारियों के साथ-साथ आउटसोर्सिंग स्टाफ ने भी भाग लिया और निःशुल्क स्वास्थ्य जांच का लाभ उठाया. इस पहल का उद्देश्य कार्यस्थल पर काम कर रहे कर्मचारियों के स्वास्थ्य कल्याण को सुनिश्चित करना और उन्हें नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए प्रेरित करना है. स्टेशनों, कार्यालय परिसरों और कार्यशालाओं में गहन सफाई अभियान चलाया गया तथा पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया. कर्मचारियों ने स्वेच्छा से इन गतिविधियों में भाग लिया, जिससे कार्यस्थल पर स्वच्छता और हरियाली का माहौल सुनिश्चित हो सका.

## रिटायर्ड कमांडेंट के घर चोरी का 18 दिन में खुलासा, दो गिरफ्तार

**शुभम संदेश। सालानपुर**

रूपनारायणपुर के शांतश्री पल्लि में 21 जुलाई को हुई सनसनीखेज चोरी की गुत्थी को पुलिस ने महज 18 दिनों में सुलझा लिया, जिससे इलाके में सुरक्षा को लेकर नया भरोसा जगा है. घटना के दिन सेवानिवृत्त कमांडेंट सतीश चंद्र शर्मा का परिवार अमरनाथ यात्रा पर था. इसी दौरान चोरों ने उनके घर का ताला तोड़कर लगभग 10 तोला सोने के गहने और 1.8 लाख नकद पर हाथ साफ कर दिया. 27 जुलाई को लौटे परिवार ने टूटा ताला और बिखरा हुआ घर देखकर हैरानी जताई और पुलिस में शिकायत दर्ज कराई. पुलिस ने इसे चुनौती मानते हुए सालानपुर थाना और रूपनारायणपुर फाड़ी की संयुक्त टीम के साथ सीसीटीवी फुटेज खंगाले, संदिग्धों से पूछताछ की और गुप्त सूचनाओं पर कार्रवाई शुरू की. नतीजतन, 8 अगस्त को रूपनारायणपुर निवासी विकी बाउरी (20) और चित्तरंजन निवासी रॉबिन बाउरी (27) को गिरफ्तार कर लिया गया. पूछताछ में विकी ने इलाके में कई अन्य चोरियों में शामिल होने की बात कबूली. पुलिस सूत्रों के मुताबिक, विकी पहले भी जेल जा चुका है. संभावना है कि गिरोह में अन्य सदस्य भी शामिल हैं, जिनकी तलाश जारी है. फॉरेंसिक टीम और कोलकाता सीआईडी ने मौके से साक्ष्य एकत्र कर जांच को मजबूती दी. आज दोनों आरोपियों को आसनसोल अदालत में पेश कर 10 दिन की पुलिस रिमांड की मांग की गई है. स्थानीय लोगों ने पुलिस की तत्परता की प्रशंसा करते हुए गश्त बढ़ाने और स्ट्रीट लाइट लगाने की मांग की है. पुलिस की इस कार्रवाई से अन्य लंबित चोरी मामलों को भी नई दिशा मिल सकती है.

## रक्षाबंधन पर लगभग दो घंटे तक रहेगा राहुकाल, क्या होगा राखी बांधने का शुभ मुहूर्त

रक्षाबंधन हिंदू धर्म का प्रमुख पर्व है, जिसे सावन महीने की पूर्णिमा तिथि पर मनाया जाता है। इस दिन बहनें भाई की कलाई पर उनकी लंबी उम्र और सुखी जीवन की कामना करते हुए राखी बांधती हैं। इसके बदले भाई अपनी बहन को जीवनभर सुरक्षा का वचन देता है। यही नहीं कुछ पैसे या उपहार भी उसे भेंट के रूप में देता है। रक्षाबंधन पर न केवल राखी का महत्व है बल्कि परिवार और रिश्तों में मिठास लाने के लिए दान-दक्षिणा, पूजा-पाठ जैसे पुण्य कार्य भी किए जाते हैं। भारत में हर साल राखी के त्योहार को भव्य आयोजन के साथ मनाया जाता है। यह लोगों में सामाजिक एकता और सद्भाव की भावना को बढ़ावा देता है। इस वर्ष 9 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन है। इस दिन कई शुभ संयोग बने हुए हैं, जो पर्व की महत्ता को कई गुना बढ़ा रहे हैं। खास बात यह है कि इस वर्ष राखी पर भद्रा का साया भी नहीं हैं। परंतु राहुकाल होने के कारण राखी बांधने का सही समय क्या है, यह सवाल बना हुआ है।

### कब समाप्त होगी भद्रा

पंचांग के मुताबिक सावन की पूर्णिमा पर भद्रा सूर्योदय से पहले समाप्त होगी। यह 8 अगस्त को दोपहर 02 बजकर 12 मिनट से शुरू होकर अगले दिन सुबह 1 बजकर 52 मिनट पर समाप्त होगी। चूंकि इस दिन सूर्योदय सुबह 5 बजकर 47 मिनट पर होगा। इसलिए रक्षाबंधन के पवित्र त्योहार पर भद्रा का साया मान्य नहीं होगा।

### राहुकाल का समय

ज्योतिषियों के मुताबिक रक्षाबंधन पर राहुकाल सुबह 9 बजकर 07 मिनट से 10 बजकर 47 मिनट तक रहने वाला है। ऐसे में आप इस अवधि में भाई को राखी बांधने से बचें। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार राहुकाल में कोई भी नया और शुभ काम नहीं करना चाहिए। यह उचित नहीं होता है।

### राखी बांधने का शुभ मुहूर्त

ज्योतिषियों की मानें तो रक्षाबंधन पर राखी बांधने का शुभ मुहूर्त सुबह 5 बजकर 47 मिनट से शुरू होगा। यह मुहूर्त इस दिन दोपहर के 1 बजकर 24 मिनट तक बना रहेगा। परंतु बीच की अवधि में सुबह 9.07-10.47 मिनट तक राहुकाल है, इसलिए आप इस समय को छोड़कर अपने भाई को राखी बांध सकती हैं।

### रक्षाबंधन पर शुभ योग

इस बार राखी पर सर्वार्थ सिद्धि योग बना हुआ है, जो सुबह 5 बजकर 47 मिनट से दोपहर 2 बजकर 23 मिनट तक रहेगा। इसके अलावा सौभाग्य योग का संयोग होने से पर्व की महत्ता अधिक बढ़ गई है। यह प्रातःकाल से लेकर 10 अगस्त को तड़के 2 बजकर 15 मिनट तक है। वहीं शोभन योग 10 अगस्त को तड़के 2 बजकर 15 मिनट तक रहेगा। ब्रह्म मुहूर्त सुबह 4 बजकर 22 मिनट से 5 बजकर 04 मिनट तक रहेगा। अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12 बजकर 17 मिनट से 12 बजकर 53 मिनट तक है।अमृतकाल पूरे दिन रहने वाला है।

### रक्षाबंधन पर चौघड़िया मुहूर्त

लाभ काल- प्रातः 10.15 से दोपहर 12.00 बजे
अमृत काल-दोपहर 1.30 से 3.00 बजे
चर काल- सायं 4.30 से 6.00 बजे

# कैसे शुरू हुई राखी बांधने के परंपरा और क्या है नियम

**देशभर में 9 अगस्त को रक्षा बंधन का पर्व मनाया जाएगा और इस दिन बहनें भाइयों के हाथ पर राखी बांधती हैं और ऊज्जवल भविष्य की कामना करती हैं। वहीं भाई बहनों को रक्षा करने का वचन और गिफ्ट देते हैं।**

09 अगस्त को रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार है। यह पर्व हर वर्ष श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। रक्षाबंधन के त्योहार को भाई-बहन के प्रेम, स्नेह और सदभाव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं और भाई की आरती उतारते हुए जीवन में सुख-समृद्धि और लंबी आयु की मंगल कामना करती हैं, जिसके बदले में भाई अपनी बहन को भेंट देता है और आजीवन उसकी रक्षा का वचन भी देता है। शास्त्रों में रक्षाबंधन पर अच्छे मुहूर्त और भद्रारहित काल में भाई की कलाई में रक्षासूत्र बांधना शुभ होता है। रक्षाबंधन का पावन पर्व इस बार पूर्ण शुभता और विशेष संयोगों के साथ 9 अगस्त शनिवार को मनाया जाएगा। इस बार रक्षाबंधन का दिन भद्रा से मुक्त रहेगा।

### राखी बांधने की विधि

भाई की सुख-समृद्धि और जीवन की मंगलकामना के लिए हर वर्ष बहनें श्रावण माह की पूर्णिमा तिथि पर रक्षा बंधन का त्योहार मनाती है। रक्षाबंधन के दिन बहनें सुबह से ही तैयारी में लग जाती हैं। रक्षाबंधन के दिन रंगोली से घर को सजाएं। पूजा के लिए एक थाली में स्वास्तिक बनाकर उसमें चंदन, रोली, अक्षत, राखी, मिठाई, और फूल के साथ एक घी का दीया रखें। दीपक प्रज्वलित कर सबसे पहले अपने ईष्टदेव को तिलक लगाकर राखी बांधें और आरती उतारकर मिठाई का भोग लगाएं। फिर भाई को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठाएं। इसके बाद उनके सिर पर रुमाल या कोई वस्त्र रखें। अब भाई के माथे पर रोली-चंदन और अक्षत का तिलक लगाकर उसके हाथ में नारियल दें। इसके बाद येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल- तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल- इस मंत्र को बोलते हुए भाई की दाहिनी कलाई पर राखी बांधें। भाई की आरती उतारकर मिठाई खिलाएं और उनके उत्तम स्वास्थ्य और उज्जवल भविष्य के लिए भगवान से प्रार्थना करें।

### ऐसे शुरू हुई राखी बांधने की परंपरा

पौराणिक कथा के अनुसार जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार के रूप में राक्षस राज बलि से तीन पग में उनका सारा राज्य मांग लिया था और उन्हें पाताल लोक में निवास करने को कहा था। तब राजा बलि ने भगवान विष्णु को अपने मेहमान के रूप में पाताल लोक चलने को कहा। जिसे विष्णुजी मना नहीं कर सके। लेकिन जब लंबे समय तक श्री हरि अपने धाम नहीं लौटे तो लक्ष्मीजी को चिंता होने लगी। तब नारद मुनि ने उन्हें राजा बलि को अपना भाई बनाने की सलाह दी।अपने पति को वापस लाने के लिए माता लक्ष्मी गरीब स्त्री का रूप धारण कर राजा बलि के पास पहुंच गईं और उन्हें अपना भाई बनाकर राखी बांध दी। इसके बदले उन्होंने भगवान विष्णु को पाताल लोक से ले जाने का वचन मांग लिया। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा थी और माना जाता है कि तभी से रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाने लगा है।

# राखी बांधते वक्त इस दिशा में मुंह करके बैठें और यह मंत्र बोलें

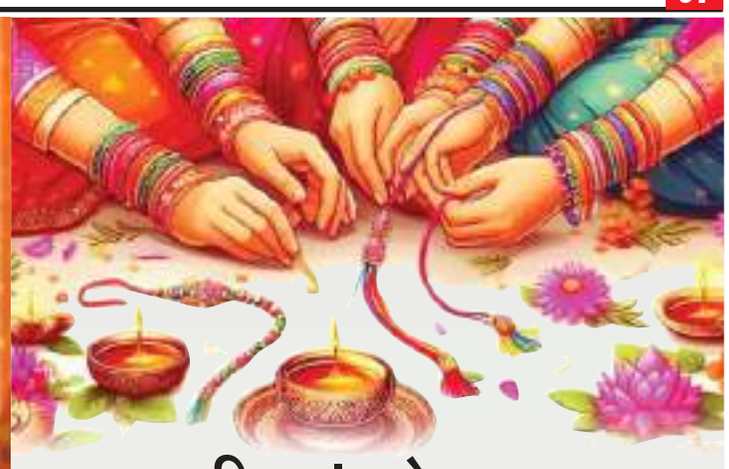

श्रावण माह की पूर्णिमा को रक्षा बंधन का त्योहार मनाया जाता है। आओ जानते हैं कि राखी बांधते वक्त किस दिशा में मुंह करके बैठना चाहिए और कौनसा मंत्र बोलना जरूरी है।

### राखी बांधते वक्त इस दिशा में रखें मुख

- यदि बहन अपने भाई को राखी बांध रही है तो बहन को पश्चिम में मुख करके भाई के ललाट पर रोली, चंदन व अक्षत का तिलक लगाते हुए उपरोक्ति मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
- भाई को पूर्वाभिमुख, पूर्व दिशा की ओर बिठाएं। बहन का मुंह पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए।
- उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनका मुख कभी भी दक्षिण दिशा की ओर न हो।
- **सिर ढकना** - अनुष्ठान करते समय भाई को अपना सिर रूमाल से ढकने की सलाह दी जाती है।

### कौन सा मंत्र बोलते हुए बांधें राखी

येन बद्धो बली राजा
दानवेन्द्रो महाबल-।
तेन त्वां अभिबन्धामि रक्षे
मा चल मा चल।।

**अर्थ**- इस मन्त्र का अर्थ है कि जो रक्षा धागा परम कृपालु राजा बलि को बाँधा गया था, वही पवित्र धागा मैं तुम्हारी कलाई पर बाँधता हूँ, जो तुम्हें सदा के लिए विपत्तियों से बचाएगा। शास्त्रों के अनुसार रक्षा सूत्र बांधे जाते समय उपरोक्त मंत्र का जाप करने से अधिक फल मिलता है। इसके बाद भाई के माथे पर टीका लगाकर दाहिने हाथ पर रक्षा सूत्र बांधे। रक्षा सूत्र बांधते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें।

यदि आप शिष्य या शिष्या अपने किसी गुरु को बांध रहे हैं रक्षा सूत्र तो उपरोक्त मंत्र है। ध्यान से देखने पर दोनों मंत्रों में अंतर नजर आएगा।

### राखी खोलने के नियम

कभी भी तुरंत या फिर रक्षाबंधन के कुछ दिन बाद ही राखी नहीं खोलनी चाहिए। राखी को कम-से-कम जन्माष्टमी तक बांधकर रखना चाहिए। राखी को उतारकर कभी भी इधर-उधर नहीं फेंकना चाहिए। आप इसे किसी बहते जल स्रोत में विसर्जित कर सकते हैं या फिर किसी पेड़-पौधे में रख सकते हैं।

# भाई-बहन के रिश्ते की पवित्रता को दर्शाता है रक्षाबंधन

**सावन माह की पूर्णिमा तिथि पर रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है। ऐसे में रक्षाबंधन 9 अगस्त को मनाया जाएगा। भाई-बहन के प्रेम वाले इस त्योहार में कई तरह के नियमों का ध्यान रखा जाना भी जरूरी है। इससे व्यक्ति को जीवन में अच्छे परिणाम देखने को मिल सकते हैं। ऐसे में आइए जानते हैं राखी से जुड़े कुछ नियम।**

रक्षाबंधन हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक माना जाता है। इस विशेष दिन पर बहनें मंगल कामना के साथ अपनी भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं। राखी बांधने के साथ-साथ राखी को उतारने के भी कई नियम हैं, जिनका ध्यान रखने पर व्यक्ति को जीवन में अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कि राखी कब और कैसे उतारनी चाहिए। रक्षा बंधन पर राखी बांधने का सबसे सही समय अपराह्न के दौरान माना जाता है।

### क्यों खास है यह पर्व

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार राजा बली ने भगवान विष्णु से यह वचन लिया कि वह उनके साथ पाताल लोक में रहें। लेकिन इसके कारण माता लक्ष्मी परेशान हो गईं। उन्होंने एक गरीब महिला का रूप धारण किया और राजा बलि के पास पहुंचकर उन्हें राखी बांधी। राखी के बदले राजा ने कुछ भी मांग लेने को कहा। इसपर माता लक्ष्मी अपने असली रूप में प्रकट हुईं और उन्होंने भगवान विष्णु को पुनः अपने धाम लौटाने का वचन मांगा। राखी का मान रखते हुए राजा ने भगवान विष्णु को मां लक्ष्मी के साथ वापस उनके धाम भेज दिया।

# रक्षाबंधन के दिन राखी बांधते समय कितनी गांठ लगानी चाहिए?

रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर रक्षासूत्र बांधकर उसकी लंबी उम्र, सुख-समृद्धि की कामना करती है और भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन देता है। इस पर्व से जुड़ी हर छोटी से छोटी बात का अपना धार्मिक एवं ज्योतिष महत्व है। इसी कड़ी में हम ज्योतिषाचार्य से जानेंगे कि जब बहन भाई को रक्षा बंधन के दिन राखी बांधती है तो कितनी गांठें धागे में लगानी चाहिए। आइये जानते हैं इस बारे में विस्तार से और साथ ही, जानेंगे इसके पीछे का तर्क।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, रक्षाबंधन पर राखी बांधते समय तीन गांठें लगाना अत्यंत शुभ माना जाता है। इन तीन गांठों का संबंध त्रिदेव यानी कि ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव से है। इन गांठों का अपना विशेष अर्थ और महत्व है जो भाई-बहन के रिश्ते को और भी मजबूत बनाता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, रक्षा बंधन पर बांधी जाने वाली राखी की **पहली गांठ** भाई की सुरक्षा और लंबी आयु के लिए बांधी जाती है। बहन भगवान से अपने भाई को सभी संकटों से बचाने, उसे स्वस्थ रखने, भाई को दीर्घायु बनाने और भाई की समृद्धि एवं खुशहाली बनाए रखने का प्रतीक है।

रक्षा बंधन पर बांधी जाने वाली राखी की **दूसरी गांठ** स्वयं बहन की लंबी उम्र और भाई-बहन के रिश्ते में प्यार, मिठास और आपसी समझ बढ़ाने के लिए लगाई जाती है। यह गांठ यह भी दर्शाती है कि भाई-बहन का रिश्ता हमेशा मजबूत रहे और उनमें सद्भाव हो। वे हमेशा एक दूसरे का साथ दें।

रक्षा बंधन पर बांधी जाने वाली राखी की **तीसरी गांठ** भाई और बहन दोनों की अपने-अपने धर्म और कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह गांठ इस बात पर जोर देती है कि भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन निभाए और बहन भी अपने भाई के प्रति अपने स्नेह और कर्तव्य का पालन करें।

रक्षा बंधन के दिन एक बात का ओर ध्यान रखें कि बहन जब भाई को राखी बांधे तो राखी को पहले गंगाजल से शुद्ध कर ले और फिर ही राखी बांधें, नहीं तो इससे दोष उत्पन्न होता है और भाई पर संकट आ सकता है। इसके अलावा, ग्रहों का दुष्प्रभाव भी पड़ सकता है और अशुभ परिणाम मिल सकते हैं।

मंथन

## ईडी पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी एक चेतावनी

सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) किसी बदमाश की तरह काम नहीं कर सकता, बल्कि उसे कानून के दायरे में ही रह कर काम करना होगा, बेहद महत्वपूर्ण और समयानुकूल है. यह वक्तव्य केवल ईडी पर नहीं, बल्कि उन तमाम संस्थाओं पर लागू होता है, जो कानून लागू करने के नाम पर अधिकारों का अतिक्रमण करती हैं. सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि कानून का पालन कराने वाली एजेंसियों और कानून तोड़ने वालों में अंतर होना चाहिए-और यह अंतर स्पष्ट दिखना भी चाहिए. ईडी की छवि पर सुप्रीम कोर्ट की चिंता, संसद में दिए गए एक मंत्री के उस बयान से और प्रबल हो जाती है, जिसमें बताया गया कि पांच हजार मामलों में से केवल 10 से भी कम में दोषसिद्धि हुई है. यह आंकड़ा दर्शाता है कि ईडी के कई मामले केवल आरोपों तक सीमित रह जाते हैं और कानूनी कसौटी पर खरे नहीं उतरते. एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू का यह तर्क कि अमीर और ताकतवर आरोपी महंगे वकीलों के सहारे मुकदमे को लंबा खींचते हैं, आंशिक रूप से सही हो सकता है, लेकिन यह किसी संस्था को मनमानी करने का लाइसेंस नहीं देता. कानून की प्रक्रिया में पारदर्शिता, जवाबदेही और संतुलन अनिवार्य है. कोर्ट के समक्ष समीक्षा याचिकाओं पर भी यह सवाल उठा कि क्या पहले की सुनवाई में तथ्यात्मक त्रुटियां थीं. सुप्रीम कोर्ट की यह चेतावनी सभी जांच एजेंसियों के लिए एक संदेश है कि वे संविधान की मर्यादा और नागरिक अधिकारों का सम्मान करते हुए अपने अधिकारों का प्रयोग करें - नहीं तो कानून उन्हें भी जवाबदेह ठहराएगा.

नजरिया

## हजारीबाग में फिल्म मेकिंग की नई आशा हुई बलवती

विनोबा भावे विश्वविद्यालय द्वारा फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कदम बढ़ाना हजारीबाग जैसे छोटे शहर के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और शैक्षणिक पहल है. 'सूरजमुखी' जैसी लघु फिल्म, जो सीमित संसाधनों में बनी है, इस बात का प्रमाण है कि प्रतिभा किसी बड़े मंच की मोहताज नहीं होती. विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा बनाई गई इस फिल्म के प्रीमियर में कुलपति की उपस्थिति और उनके प्रोत्साहन भरे शब्दों ने स्थानीय कलाकारों में एक नई ऊर्जा का संचार किया है. कुलपति डॉ. चंद्र भूषण शर्मा द्वारा अपने निजी कोष से कलाकारों को प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि संस्थागत सहयोग की एक मिसाल है. यह निर्णय फिल्म मेकिंग को शिक्षा के दायरे में लाने की दिशा में भी एक प्रेरक संकेत है. आज के डिजिटल युग में लघु फिल्में एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुकी हैं, और हजारीबाग के युवाओं ने यह दिखा दिया है कि सीमित संसाधन भी उत्कृष्ट सृजन की राह में बाधा नहीं हैं. 'कंट्री रोड्स' जैसे बैनर से जुड़े युवा निर्देशक सुमित सिन्हा ने जिस समर्पण से अब तक 20 से अधिक फिल्में बनाई हैं, वह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि यदि इन्हें सही प्लेटफॉर्म मिले, तो यह क्षेत्र रोजगार और पहचान दोनों दे सकता है. विश्वविद्यालय को चाहिए कि फिल्म मेकिंग को एक अकादमिक विकल्प के रूप में अपनाकर हजारीबाग को रचनात्मकता का केंद्र बनाए. प्रतिभा को अवसर देने से ही नए सूरजमुखी खिलेंगे.

# आदिवासी जीवन में समाहित अमूल्य अंतर्ज्ञान

डॉ मयंक मुरारी

9 अगस्त विश्व आदिवासी दिवस पर विशेष आलेख

**जनजातीय जीवन सदैव एक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि कैसे सांस्कृतिक प्रवृत्तियां अच्छे के लिए एक शक्ति हो सकती हैं, समाजों को अधिक सामंजस्यपूर्ण और सहयोगी भविष्य की ओर ले जा सकती हैं.**

वर्तमान जीवन पद्धति की एक विशेषता है. यह हमको समाज से अलग करता है. हम स्वतंत्र होना चाहते हैं. हमारी प्रवृत्ति एक अलग पहचान की खोज करती है. हम समूह में सहज भरोसा नहीं करते हैं, और साथ ही अन्य पर संशय करते है. अपनी चतुराई के कारण हम आधुनिक जीवन के साथ गतिशील होकर एक अंतहीन यात्रा और अप्राप्त लक्ष्य के लिए भटकते रहते हैं. वर्तमान समय की इस बहुआयामी समस्या में यह चिंतन करना जरूरी है कि आखिर प्रकृति आधारित आदिवासी जीवन व हमारी अबाधित परंपरा किसी प्रकार हमारे संबंध, संबंधों की भावना और समावेशी समुदाय बनाने में ज्ञान की उपयोगिता में सहयोग करती है. मानव सभ्यता के विकास की आदिवासी जीवन एक संपूर्ण किताब है, और यह हमारी चेतना का अंतर्निहित अविभाज्य हिस्सा है. हम स्वतंत्र होना चाहते हैं, लेकिन समूह पर भरोसे की खोज करते हैं. आधुनिकता में जीना चाहते है, लेकिन परंपरा का जुड़ाव और उसकी भावना को मजबूत करने का अवसर चाहते हैं. और हम स्वहित के लिए क्रियाशील होते हैं, लेकिन समावेशी समुदाय कैसे बने, इसके लिए प्रयास करते हैं. सभ्यता की विकास यात्रा में मनुष्य सबसे मजबूत जीव होने या तेज होने के कारण जीवित नहीं रहा. उसकी सबसे अनोखी बात सहयोग करने की प्रवृत्ति थी.

सहयोग के कारण ही सभ्यता फली-फूली है. शिकार खेलने में भी योजना, धीरज, सामूहिक प्रयास आदि की जरूरत होती है. शिकार के बाद चारागाह, खेती-किसानी, उद्योग के विकास तक. माइकल मॉरिस अपनी किताब में बताते हैं कि हमारी इच्छा हमसे चालाकी करने को कहती है. हम लोभ, लालच, ईर्ष्या में बह जाते हैं. यह आदिवासी चेतना से खुद को दूर करना है. आदिवासी जीवन में अनुशासन है, एक संस्कार है और संस्कार पर आधारित एक व्यवस्था है. इस कारण सामूहिकता का दायरा बढ़ता हुआ समूची सृष्टि को अपने में समाहित कर लेता है. धरती से प्रेम के कारण हम उसे मां मानते हैं. आकाश पिता है. हवा को बहन और पानी को भाई मानते हैं. पहाड़ उनका दोस्त है, जंगल और पेड़ उनका परिवार है. इसलिए धरती या प्रकृति उनके उपभोग की वस्तु नहीं है. उससे उनका अंतर्संबंध है. उनके जीवन का हिस्सा है. आदिवासी जीवन में अगर वृक्ष नहीं हैं, परिंदे का स्थान गायब है, उनकी ध्वनियां मौन है, जीवन में रंग नहीं है, तो हमारा शाश्वत अंतर्ज्ञान हमसे दूर हो जाता है. आदिवासी समाज में उनके शब्दों में गीत है तो वह स्वर उनको प्रकृति से मिलता है. उनके पैरों में नृत्य की थिरकन है तो वह प्रकृति के साथ सामंजस्य को बताता है. कहीं कोई पृथकत्व का भाव नहीं होता. शब्द, रंग, लय और गतियों में गमकता आदिवासी जीवन एक अलिखित किताब है, जिसमें कितने ही स्वर दर्ज हैं, कितनी प्रेरक कथाओं का संसार है, कितनी ही स्मृतियां इन गीत और गाथाओं में गुंजायमान होती हैं. आदिवासी जीवन में कागज की किताब नहीं रही, लेकिन उनके मन की पोथी जरूर ही इनके पूर्वजों के पास रही, जहां जीवन के हरेक जटिल समस्या का समाधान और सीख है. आदिवासी जीवन में ज्ञान परंपरा का विकास व्यक्ति के साथ सामाजिक रहा. इस समाज के पास जिंदगी की भूली-बिसरी यादों की तस्वीरें हैं, किस्सा-कहानी का संस्कार है और प्रकृति के पंचतत्वों का सच्चा और अच्छा अनुभव है. इन सबके बिना आदिवासी जीवन का आंगन सूना है.आदिवासी प्रवृत्तियां समाज को आकार देती हैं. यह अपनी क्रियाशीलता में समाज को नायक, सामूहिक विकास के लिए बेहतर सहकर्मी और परंपरा को मजबूत बनाने के लिए सदैव स्मरणीय पूर्वज के मानवीय आयामों को छूती हैं. ये प्रवृत्तियां नीति निर्माण और सांस्कृतिक परिवर्तन में आदिवासीवाद को बढ़ावा देती हैं. ये तत्व राजनीति से लेकर व्यवसाय तक जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित करते हैं. मनुष्य स्वाभाविक रूप से अपने समूह के लोगों पर भरोसा करते हैं जबकि बाहरी लोगों से सावधान रहते हैं. परंपराएं अपनेपन की भावना को मजबूत करती हैं, और इन गतिशीलता को समझने से अधिक मजबूत, अधिक समावेशी समुदाय बनाने में मदद मिल सकती है. मनुष्य व्यक्तिगत रूप से समस्याओं को हल करने की प्रवृत्ति नहीं रखता है. इसके लिए हम उन्हें जनजातीय रूप से हल करते हैं. प्रसिद्ध इतिहासकार युवाल नोहा हरारी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सेपियंस में तर्क देते हैं. यही कारण है कि होमो सेपियंस अधिक सफल रहे. होमो निएंडरथल के साथ प्रतियोगिता में होमो सेपियंस ज्यादा सक्षम रहे. यह बताती है कि आदिवासी जीवन में समाहित अंतर्दृष्टि केवल जीवित रहने के तंत्र नहीं हैं, बल्कि मानव सफलता की नींव हैं. सभ्यता के ऊषा काल में प्रारंभिक मनुष्य की सफलता में उनका सहयोगी प्रवृत्ति की अहम भूमिका रही.

जोसेफ हेनरिक एक अमेरिकी मानवविज्ञानी और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में मानव विकासवादी जीव विज्ञान के प्रोफेसर हैं. उनकी सोच है कि जनजातियां व्यक्तियों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं. यह पश्चिमी सोच के अधिकांश रूपों के विपरीत है, जो मानते हैं कि व्यक्ति समूह की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है. विश्व के पूर्वी देशों में सामूहिक सोच अधिक आम है. वहां सामूहिक और जनजातीय तरीकों को सोच में अधिक आदर्श माना जाता है. मानवशास्त्री इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिन लोगों के पास दो या अधिक भाषाएं होती हैं, वे इस प्रकार एक जनजातीय सोच से दूसरे जनजातीय सोच में अधिक तेजी से स्थानांतरित हो सकते हैं, यानी वे अधिक लचीले होते हैं. सहयोग, अनुष्ठान और कहानी कहने जैसी सांस्कृतिक प्रवृत्तियां मानवीय संबंध और सामाजिक विकास के मूल में हैं. जबकि इनका दुरूपयोग होने पर विभाजन हो सकता है, वे अधिक मजबूत, अधिक समावेशी समुदायों के निर्माण की क्षमता भी रखते हैं. जनजातीय जीवन सदैव एक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि कैसे सांस्कृतिक प्रवृत्तियां अच्छे के लिए एक शक्ति हो सकती हैं, समाजों को अधिक सामंजस्यपूर्ण और सहयोगी भविष्य की ओर ले जा सकती हैं.

## आज का इतिहास

**1173 :** इटली में विश्वप्रसिद्ध पीसा की झुकी हुई मीनार का निर्माण शुरू.
**1683 :** ब्रिटिश राजशाही ने ईस्ट इंडिया कंपनी को शांति या युद्ध करने का अधिकार दिया.
**1831 :** अमेरिका में पहली स्टीम इंजन ट्रेन चली.
**1925 :** क्रांतिकारियों ने काकोरी में एक ट्रेन लूटी. मकसद ट्रेन से सरकारी खजाना लूट कर उन पैसों से हथियार खरीदना था.
**1942 :** गांधी जी को अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया.
**1945 :** अमेरिका ने जापान के नागासाकी शहर पर परमाणु बम गिराया.
**1971 :** भारत-रूस मैत्री संधि पर हस्ताक्षर.
**1999 :** रूसी राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने पीएम सर्जेई को बर्खास्त कर ब्लादिमीर पुतिन को कार्यवाहक पीएम नियुक्त किया.
**2005 :** नासा का मानवयुक्त अंतरिक्ष यान डिस्कवरी 14 दिन की साहसिक और जोखिम भरी यात्रा के बाद कैलिफ़ोर्निया स्थित एयरबेस पर सकुशल उतरा.

## दुनिया में ऐसा कौन है, जिसके पास समस्याएं नहीं हैं

चिंतन

एक महा ज्ञानी पंडित हिमालय में कहीं रहते थे. उनकी प्रसिद्धि इतनी थी कि लोग दुर्गम पहाड़ियों में भी उनसे मिलने जाते थे.उनका कहना था कि यह विद्वान उनकी हर समस्या का समाधान कर सकता है. एक दिन कुछ लोग उनकी कुटिया तक पहुंचे. पंडित जी ने उन्हें इंतज़ार करने को कहा. तीन दिन बीत गए , अब और भी लोग वहां पहुंच गए. जब लोगों के लिए जगह कम पड़ गई, तो पंडित जी बोले, आज मैं आप के प्रश्नों का उत्तर दूंगा, पर आपको वचन देना होगा कि यहां से जाने के बाद आप किसी और से यहां के बारे में नहीं बताएंगे, ताकि मैं एकांत में साधना कर सकूं. चलिए अपनी -अपनी समस्याएं बताइए. यह सुनते ही किसी ने परेशानी बतानी शुरू की, लेकिन वह अभी बोल ही रहा था कि बीच में किसी और ने अपनी बात शुरू कर दी. सभी जानते थे कि अब उन्हें कभी पंडित जी से बात करने का मौका नहीं मिलेगा. वहां का दृश्य मछली -बाज़ार जैसा हो गया और अंततः पंडित जी को चीख कर बोलना पड़ा, कृपया शांत हो जाइए! अपनी समस्या पर्चे पे लिखकर दीजिये.सभी ने समस्याएं लिखकर आगे बढ़ा दी. पंडित जी ने सारे पर्चे लिए और टोकरी में डाल कर मिला दिया और बोले, इस टोकरी को एक-दूसरे को पास कीजिए, हर व्यक्ति एक पर्ची उठाएगा. उसे पढ़ेगा.उसके बाद उसे बताना होगा कि क्या वो अपनी समस्या को इस समस्या से बदलना चाहता है? हर व्यक्ति पर्चा उठाता, उसे पढ़ता और सहम जाता. एक -एक कर के सभी ने पर्चियां देख लीं पर कोई भी अपनी समस्या के बदले किसी और की समस्या लेने को तैयार नहीं हुआ. सबका यही सोचना था कि उसकी अपनी समस्या बाकी लोगों की समस्या जितनी गंभीर नहीं है. अब सभी अपनी पर्ची हाथ में लिए लौटने लगे, वे खुश थे कि उनकी समस्या उतनी बड़ी भी नहीं है जितना कि वे सोचते थे. दोस्तों, ऐसा कौन होगा जिसके जीवन में समस्या न हो? कोई अपनी सेहत से परेशान है तो कोई गरीबी से. हमें यह बात माननी चाहिए कि जीवन है तो समस्याएं आती ही रहेंगी, ऐसे में दुखी हो कर उसी के बारे में सोचने से अच्छा है कि हम अपना ध्यान उसके निवारण में लगाएं और अगर उसका कोई हल ही न हो तो अन्य दूसरी चीजों पर फोकस करें. और आगे बढ़ें...

## इंडिया पर ट्रेंडिंग

1. #VoteChori
2. चुनाव आयोग
3. GPT-5
4. #NationalHandloomDay
5. #TrumpTariff
6. #KalaignarForever
7. #ElectionCommissionOfIndia
8. राहुल गांधी
9. Putin
10. स्वामी प्रसाद मौर्य

# बहुरंग

## फिल्म 'जटाधारा' का टीजर रिलीज रौद्र रूप में नजर आईं सोनाक्षी

अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा को पिछली बार फिल्म 'निकिता रॉय' में देखा गया था. इस फिल्म को समीक्षकों और दर्शकों से भले ही मिली-जुली प्रतिक्रियाएं मिली हों, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर यह कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाई और औंधे मुंह गिर गई थी. हालांकि, इससे सोनाक्षी के करियर की रफ्तार धीमी नहीं हुई है. आने वाले समय में वह कई बड़े और दिलचस्प प्रोजेक्ट्स में नजर आने वाली हैं, जिनमें से एक बेहद खास फिल्म है, 'जटाधारा'. यह फिल्म उनके करियर में एक नया अध्याय जोड़ने जा रही है, क्योंकि इसके जरिए सोनाक्षी पहली बार तेलुगु सिनेमा में कदम रख रही हैं. अब मेकर्स ने 'जटाधारा' का दमदार टीजर जारी कर दिया है, जिसने रिलीज होते ही दर्शकों का ध्यान खींच लिया. करीब एक मिनट के इस वीडियो में सोनाक्षी का ऐसा रौद्र और प्रभावशाली रूप सामने आया है, जो उनके अब तक के किरदारों से बिल्कुल अलग है. गहनों से सजी, गहरी काजल लगी आंखें, माथे पर बड़ी लाल बिंदी और तिलक, चेहरे पर गंभीरता लिए सोनाक्षी एक तीखी और उग्र ऊर्जा बिखेरती नजर आ रही हैं. उनका यह लुक न केवल प्रभावशाली है, बल्कि कहानी में उनके किरदार की गहराई और शक्ति का भी संकेत देता है.

टीजर में सिर्फ सोनाक्षी ही नहीं, बल्कि सुधीर बाबू भी अपनी मजबूत स्क्रीन प्रेज़ेंस के साथ नजर आते हैं. दोनों के बीच टकराव और तीखे संवाद फिल्म में गहरे ड्रामा और एक्शन की झलक देते हैं. कई शॉट्स में सुधीर और सोनाक्षी आमने-सामने भिड़ते दिखाई देते हैं, जिससे यह साफ हो जाता है कि फिल्म का टकराव सिर्फ शारीरिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और मानसिक स्तर पर भी होगा. वेंकट कल्याण और अभिषेक जायसवाल के निर्देशन में बनी 'जटाधारा' एक्शन, सस्पेंस और इमोशन का शानदार मिश्रण पेश करने का वादा करती है. टीजर के बैकग्राउंड म्यूजिक से लेकर विजुअल टोन तक, हर चीज दर्शकों में जिज्ञासा जगाती है. यह साफ है कि फिल्म सिर्फ एक मनोरंजक अनुभव ही नहीं, बल्कि सोनाक्षी के अभिनय करियर का एक साहसिक प्रयोग भी साबित हो सकती है. अगर फिल्म अपनी झलक के मुताबिक चली, तो 'जटाधारा' सोनाक्षी के लिए न सिर्फ तेलुगु सिनेमा का सफल डेब्यू बनेगी, बल्कि उनके फिल्मी सफर में एक यादगार मील का पत्थर भी जोड़ देगी.

## राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा
मोबाइल नंबर
8210075897

**मेष :** मन प्रसन्न बना रहेगा. अचल संपति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी. परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी. आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी. भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श होगा. अपनों का सहयोग प्राप्त होगा. सभी का सहयोग मिलेगा. शुभांक-1-3-5

**वृष :** दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा. वरिष्ठ लोगों से कहासुनी के कारण तनाव पैदा हो सकता है. संयमित भाषा का इस्तेमाल करें. कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे. आवेग में आकर किये गए कार्यों का म्लान, अवसाद रहेगा. उतावलेपन से बचें. प्रेमभाव बढ़ेगा. शुभांक-3-6-9

**मिथुन :** घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी. प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा. मनोरथ सिद्धि का योग है. अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे. सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा. पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे. शुभांक-5-6-7

**कर्क :** सामाजिक कार्य संपन्न होंगे. प्रेमभाव बढ़ेगा. आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी. स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी. ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा. स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा. शुभांक-3-5-7

**सिंह :** कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे. व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है. प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा. अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे. महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा. स्वविवेक से कार्य करें. दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे. शुभांक-3-5-7

**कन्या :** आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी. आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं. कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं. कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे. सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा. धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी. स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा शुभांक-2-5-7

**तुला :** आय-व्यय समान रहेगा. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. व्यापार में स्थिति नरम रहेगी. शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे. भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है. व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए. मेल-मिलाप से कोशिश सफल होगी. शुभांक-2-4-6

**वृश्चिक :** कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा. मान-सम्मान में वृद्धि होगी. अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे. अपने हित के काम सुबह-सबेरे ही निपटा लें क्योंकि आगे कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे. स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा. शुभांक-3-6-9

**धनु :** यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा. मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे. अपने काम को प्राथमिकता से करें चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी. शुभांक-4-6-8

**मकर :** मेहमानों का आगमन होगा. राजकीय कार्यों से लाभ. पैतृक सम्पत्ति से लाभ. नैतिक दायरे में रहें. मेहमानों का आगमन होगा. पुरानी गलती का पश्चाताप होगा. विद्यार्थियों को लाभ. दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा. वाहन चालन में सावधानी बरतें. आय के अच्छे योग बनेंगे. सफलता मिलेगी. शुभांक-3-6-8

**कुंभ :** परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा. सफलता मिलेगी. शुभांक-3-6-8

**मीन :** अपनों का सहयोग प्राप्त होगा. शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है. व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी. नौकरी में पदोन्नति की संभावना है. मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है. शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें. इच्छित कार्य सफल होंगे. सुख-आनंद कारक समय है. शुभांक-2-4-6

## बॉक्स ऑफिस पर जलवा नहीं बिखेर पाई 'सन ऑफ सरदार 2'

अजय देवगन और मृणाल ठाकुर की फिल्म 'सन ऑफ सरदार 2' से भले ही निर्माताओं ने बड़ी उम्मीदें लगाई थीं, लेकिन दर्शकों ने इसे पूरी तरह खारिज कर दिया. रिलीज के पहले दिन से ही फिल्म बॉक्स ऑफिस पर दर्शकों को आकर्षित करने में नाकाम रही है. हर बीतते दिन के साथ इसकी कमाई में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है. अब सातवें दिन के आंकड़े सामने आए हैं, जो अब तक का सबसे कमजोर प्रदर्शन साबित हुए हैं.

बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के अनुसार, 'सन ऑफ सरदार 2' ने रिलीज के सातवें दिन यानी गुरुवार को 1.40 करोड़ रुपये की कमाई की. इसके साथ ही फिल्म का कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 32.89 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है. इस फिल्म का निर्देशन पंजाबी सिनेमा के मशहूर फिल्ममेकर विजय कुमार अरोड़ा ने किया है, जो 'हरजीता' और 'काली जोट्टा' जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं.

'सन ऑफ सरदार 2' में अजय देवगन के साथ मृणाल ठाकुर की जोड़ी बनाई गई है, जो फिल्म में राबिया का किरदार निभा रही हैं. अजय के साथ यह उनकी पहली ऑन-स्क्रीन साझेदारी है और दर्शकों को दोनों की केमिस्ट्री पसंद आ रही है. फिल्म में नीरू बाजवा, रोशनी वालिया, कुब्रा सैत, दीपक डोबरियाल, साहिल मेहता, चंकी पांडे और रवि किशन जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आते हैं. अजय ने इस फिल्म का निर्माण ज्योति देशपांडे के साथ मिलकर किया है.

## सलमान खान के चर्चित रियलिटी शो 'बिग बॉस 19' का ट्रेलर रिलीज

सलमान खान का चर्चित और विवादित रियलिटी शो 'बिग बॉस' हमेशा से ही दर्शकों की पसंद रहा है. अब इसके 19वें सीजन का ट्रेलर रिलीज हो गया है, जिसे देखने के बाद फैंस की उत्सुकता और भी बढ़ गई है. इस बार ट्रेलर में 'बिग बॉस' का घर संसद की तर्ज पर नजर आ रहा है, जहां कंटेस्टेंट्स पार्लियामेंट की तरह बैठे दिख रहे हैं और सलमान खान नेता की पोशाक में नजर आ रहे हैं. इस बार शो में राजनीति का जोरदार तड़का लगने वाला है, जिसे लेकर दर्शकों में जबरदस्त उत्साह है. सलमान खान ट्रेलर में कहते नजर आते हैं, ऐसा पहली बार हो रहा है इन 18-19 सालों में. इस बार 'बिग बॉस' के घर में ड्रामा नहीं, बल्कि डेमोक्रेसी होगी. हर छोटा-बड़ा फैसला अब घरवालों के हाथ में होगा. घरवालों, वही करो जो तुम्हारा दिल कहे. क्योंकि इस बार बिग बॉस के घर में बनेगी घरवालों की सरकार. सलमान का यह नया अंदाज और शो की अनोखी थीम दर्शकों को काफी पसंद आ रही है. दर्शकों को अब इस नई राजनीतिक थीम वाले सीजन का बेसब्री से इंतजार है.

## 'सैयारा' की सफलता पर भावुक हुए अहान

मोहित सूरी के निर्देशन में बनी रोमांटिक म्यूजिकल ड्रामा 'सैयारा' ने रिलीज के पहले दिन से ही बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाया हुआ है. 18 जुलाई को सिनेमाघरों में आई इस फिल्म से अनन्या पांडे के चचेरे भाई अहान पांडे ने बॉलीवुड में अपना डेब्यू किया है. महज 45 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने अब तक दुनियाभर में 500 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई कर ली है. अब फिल्म की ऐतिहासिक सफलता पर पहली बार अहान पांडे ने अपनी प्रतिक्रिया दी है. अहान पांडे ने 'सैयारा' की अपार सफलता का श्रेय अपनी दादी को देते हुए एक भावुक पोस्ट शेयर किया है. इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरों के साथ अहान ने लिखा, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे इतना प्यार मिलेगा. मेरी दादी मुझे हमेशा 'राज' कहकर बुलाती थीं. काश वो आज यहां होतीं और मुझे इस रूप में देख पातीं. मैं हमेशा भगवान से कहता था कि अगर पूरी दुनिया मुझे न भी पसंद करे, तो भी मेरी दादी, जो अब सितारों में एक रोशनी बन गई हैं, मुझे देखकर मुस्कुरा रही होंगी. यह सब आपके लिए है, दादी. फैंस के लिए भी अहान ने दिल से आभार जताया.

उन्होंने लिखा, मुझे नहीं पता आगे क्या होने वाला है, लेकिन इस पल में मैं खुद से और आप सभी से बहुत सारा प्यार महसूस कर रहा हूं. मैं वादा करता हूं कि और मेहनत करूंगा, खुद को बेहतर बनाऊंगा. ये सफर आप सबके लिए और उस बच्चे के लिए है जो कभी मंच पर जाने से डरता था, जिसे बार-बार कहा गया कि वह कुछ नहीं कर सकता. अहान पांडे ने आगे लिखा, ₹वो मासूम बच्चा हम सभी के भीतर होता है. मैं बस यही चाहता हूं कि आप अपने अंदर के उस बच्चे को खुशी दें, क्योंकि वह हर खुशी का हकदार है. इस बेइंतिहा प्यार और चमत्कार के लिए आप सभी का दिल से शुक्रिया. काश मैं आप सबको गले लगा पाता. मैं इस प्यार को हमेशा संजोकर रखूंगा. गौरतलब है कि 'सैयारा' में अहान के साथ अनीत पड्डा की जोड़ी बनी है. मोहित सूरी के निर्देशन में बनी यह रोमांटिक म्यूजिकल ड्रामा फिल्म सिनेमाघरों में शानदार प्रदर्शन कर रही है और जल्द ही इसका प्रीमियर नेटफ्लिक्स पर भी होने जा रहा है.

## ब्रीफ न्यूज

### पिता-पुत्र पर जानलेवा हमला, बेटे की मौत

**कटिहार।** कदवा थाना क्षेत्र के ग्राम कचौरी में बीती देर रात्रि एक दर्दनाक हादसा हुआ, जब एक घर में चौकी पर सोए हुए पिता राम कल्याण मंडल (45) और उनके बेटे सुनील कुमार मंडल (12) को आग लगा दी गई. दोनों को गंभीर हालत में भागलपुर अस्पताल भेजा गया, जहां इलाज के दौरान सुनील कुमार मंडल की मौत हो गई. राम कल्याण मंडल का इलाज अभी भी जारी है. इस घटना के बाद कदवा पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए एक व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है.घटना को लेकर परिजन ने बताया कि राम कल्याण मंडल और उनके बेटे सुनील कुमार मंडल घर की चौकी पर सोए हुए थे.

### घर में फंदे पर लटके मिले दारोगा, फैली सनसनी

**गयाजी।** गयाजी जिले में शुक्रवार सुबह सनसनी फैल गई, जानकारी के अनुसार एक दरोगा की लाश उनके किराए के मकान में फंदे से लटकती हुई मिली. मृतक दरोगा सहरसा जिले के बनगांव का रहने वाले थे और एसएसपी कोठी के पास रहते थे. घटना की सूचना मिलते ही रामपुर थाना पुलिस और वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे. पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया. घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया और आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई. पुलिस मृतक के परिजनों के पहुंचने का इंतजार कर रही है और मामले की जांच में जुट गई है.

### पेड़ों में रक्षा सूत्र बांध कर दिया जागरूकता का संदेश

**अररिया।** रबिसगंज के कटहरा स्थित सुलोचना देवी डीएल दास सरस्वती शिशु विद्या मंदिर की बच्चियों ने शुक्रवार को पेड़ों में रक्षा सूत्र बांधकर रक्षा बंधन का पर्व मनाते हुए पर्यावरण जागरूकता का संदेश दिया. मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य सुदर्शन कुमार ने कहा कि कोविड 19 की दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन की कमी को देखते हुए पेड़ को लगाने और पेड़ की रक्षा का शपथ लिया गया था. जिसको लेकर आज भी विद्या भारती के आचार्यगण और भैया बहन संकल्पित हैं.उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन का त्योहार सिर्फ भाई बहन की रक्षा और उनके अटूट संबंध का नहीं होता,

## रक्षाबंधन पर महिलाओं को नीतीश का तोहफा

# आज बस यात्रा मुफ्त

संवाददाता। पटना

**पटना ।** नीतीश सरकार ने रक्षाबंधन के पावन अवसर पर महिलाओं के लिए बड़ी सौगात की घोषणा की है. 9 अगस्त को रक्षाबंधन के दिन बीएसआरटीसी यानी बिहार राज्य पथ परिवहन निगम की सभी बसों में महिलाएं मुफ्त यात्रा कर सकेंगी. इस योजना के तहत महिलाएं बिना किसी शुल्क के अपने मायके जाकर भाइयों को राखी बांध सकेंगी.

यह सुविधा साधारण, डीलक्स और वोल्वो सभी श्रेणी की बसों में लागू होगी. बीएसआरटीसी के प्रशासक अतुल कुमार वर्मा ने आदेश जारी करते हुए कहा कि इस पहल का उद्देश्य भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को सम्मान देना और महिलाओं को त्योहार के दौरान सुविधा प्रदान करना है.

उन्होंने बताया कि इस योजना से बहनें अपने भाइयों तक आसानी से पहुंच सकेंगी और रक्षाबंधन को हर्षोल्लास के साथ मना सकेंगी. विशेष रूप से राजधानी पटना में संचालित पिंक बस सेवा में भी महिलाओं को मुफ्त यात्रा की सुविधा मिलेगी.
ये बसें सगुना मोड़ से गांधी मैदान और गांधी मैदान से एम्स के बीच चलती हैं. भीड़ को देखते हुए निगम ने अतिरिक्त बसों के संचालन का भी निर्णय लिया है. बीएसआरटीसी ने सभी बस चालकों और परिचालकों को निर्देश दिया है कि वे महिलाओं की यात्रा के दौरान विशेष सावधानी बरतें और योजना का कड़ाई से पालन करें. निगम ने यात्रियों से अपील की है कि वे इस सुविधा का लाभ उठाकर रक्षाबंधन को सुरक्षित और यादगार बनाएं.

## डीएसपी के पास 1.52 करोड़ की अवैध संपत्ति, 3 जिलों में छापेमारी

शुभम संदेश। पटना

**पटना।** बिहार में भ्रष्टाचार के खिलाफ निगरानी इकाई (एसवीयू) ने शुक्रवार को बड़ी कार्रवाई की. जहानाबाद में तैनात डीएसपी संजीव कुमार पर आय से 1.52 करोड़ रुपये अधिक संपत्ति रखने का आरोप है. इस मामले में पटना, जहानाबाद और खगड़िया में एक साथ छापेमारी की गई, जिससे पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया.
**पहले से थे पुख्ता सबूत :** सूत्रों के मुताबिक, DSP संजीव कुमार ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए करोड़ों की अवैध कमाई की. निगरानी इकाई ने पहले से जुटाए सबूतों के आधार पर यह कार्रवाई की है. फिलहाल बरामद दस्तावेजों और संपत्तियों की जांच जारी है.
**खुद एसवीयू ने दर्ज किया केस :** इस मामले में पटना निगरानी थाना में एसवीयू ने खुद केस दर्ज किया है. छापेमारी की संवेदनशीलता को देखते हुए फिलहाल कोई अधिकारी आधिकारिक बयान देने से बच रहा है.
**डीएसपी रैंक पर सबसे बड़ी छापेमारी :** बताया जा रहा है कि यह किसी डीएसपी रैंक के अधिकारी पर अब तक की सबसे बड़ी छापेमारी है. जांच एजेंसी अब डीएसपी की बैंक डिटेल्स, जमीन-जायदाद और निवेश की जांच कर रही है. एसवीयू ने कहा है कि छापेमारी पूरी होने के बाद बरामद संपत्ति और दस्तावेजों की पूरी जानकारी सार्वजनिक की जाएगी.

## रक्सौल में निर्माणाधीन पुल में गिरने से एक की मौत,एक गंभीर

शुभम संदेश । पूर्वी चंपारण

जिले में रक्सौल स्थित कोईरिया टोला अंबेडकर चौक स्थित नहर पर बन रहे पुल में गिरने एक युवक की मौत हो गई. घटना बीती रात करीब एक बजे की बताई जा रही है.मिली जानकारी के अनुसार दोनो युवक एक ही बाइक पर सवार होकर बेतिया से आ रहे थे. दोनों युवक इस बात से अनजान थे कि यहां पुल निर्माणाधीन है. वे अंधेरे में शहर में प्रवेश के लिए बाइक को मोड़ रहे थे,इसी दौरान बाईक सीधे नहर में जा गिरा. जिसमें बाइक चालक कालीबाग बेतिया निवासी दानिश जावेद की मौत हो गई, जबकि पीछे सवार बेतिया के हॉस्पिटल रोड निवासी अमन कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया.स्थानीय लोगो ने बताया कि निर्माणाधीन पुल पर गिरने से दानिश के सिर पर गंभीर चोट आई और उसकी मौके पर ही मौत हो गई. जबकि अमन नहर में कराहता रहा, जिसकी चीख सुनने के बाद स्थानीय लोग जुटे और पुलिस को सूचना दी.जिसके बाद रेस्क्यू शुरू किया गया. मौके पर पहुंचे रक्सौल थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर विजय कुमार व पुलिस बल में शामिल पुलिस सब-इंस्पेक्टर रवि कुमार ने वर्दी उतारकर खुद नहर में छलांग लगाई. इसके साथ ही स्वच्छ रक्सौल टीम के रणजीत सिंह सहित कई युवकों ने भी बचाव कार्य में मदद की.दोनों को एसआरपी हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डाक्टरो ने दानिश को मृत घोषित कर दिया. वही अभी घायल अमन की हालत नाजुक बनी हुई है. घटना को लेकर रक्सौल वासियो में आक्रोश व्याप्त है, लोगों ने घटना के लिए पुल निर्माण एजेंसी और प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया है. स्वच्छ रक्सौल अध्यक्ष रणजीत सिंह ने इसे 'नर बलि' करार देते हुए कहा कि बिना वैकल्पिक व्यवस्था के मजबूत पुल तोड़ दिया गया, न ही मजबूत डायवर्सन बनाया गया और न ही हादसे से बचाव के लिए बैरिकेडिंग की गई. उन्होंने सरकार से पीड़ित परिवार को न्याय व मुआवजा देने, दोषियों पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है.

## विदेशी महिला से रेप केस में दो अपराधी गिरफ्तार

शुभम संदेश। पटना

पटना में प्राइवेट बस में विदेशी महिला से रेप केस में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस ने बताया कि घटना के बाद दोनों आरोपी पटना छोड़कर फरार हो गए थे. दोनों को अलग अलग जगह से गिरफ्तार किया गया है. पुलिस ने दोनों आरोपियों की पहचान कार्तिक राय और सुनील कुमार के रूप में की है. मामले में जानकारी देते हुए पटना सेंट्रल एसपी ने बताया कि घटना को अंजाम देने के बाद बिहार छोड़कर पश्चिम बंगाल भागने के फिराक में था. वहीं पकड़े जाने के दोनों अलग अलग जगह फरार हो गए. जहां सुनील कुमार औरंगाबाद भाग गया.

वहीं कार्तिक राय ट्रेन से पश्चिम बंगालभागने की फिराक में था. इसी दौरान पुलिस ने उसे बरौनी के पास ट्रेन से गिरफ्तार कर लिया. आरोपी कार्तिक राय के पास से महिला का आइकार्ड, नेपाली सिम, वगैरह महिला के बरामद किए गए हैं.उन्होंने बताया कि देर रात को बस के अंदर सफाई करने के बाद सीधे कोलकाता भाग गया था. लड़की का सामान वहां बेच दिया. फिर वापस मुजफ्फरपुर आया था. इसके बाद दोबारा कोलकाता जा रहा था. सुनील औरंगाबाद से पहले पकड़ा गया. इसी की निशानदेही पर कार्तिक को पकड़ा गया. वहीं बस को भी जब्त कर लिया गया है.

पुलिस ने बताया कि कार्तिक शादी शुदा है. एक बेटा है. सुनील शादी शुदा है. कार्तिक बस ड्राइवर है और वो मुजफ्फरपुर का रहने वाला है. बताया जाता है कि उसे नेपाली भाषा भी बोलने आती है. इसी का फायदा उठाकर उसने लड़की को अपने जाल में फंसा लिया. एफआईआर के मुताबिक, कार्तिक जवानों को बीएमपी 1 से गांधी मैदान रोज छोड़ने और लाने जाता था. जब उसे जवानों को ले जाना या लाना रहता तब वो पीड़िता गांधी को मैदान के बाहर गेट नंबर 5 के आसपास वेट करने को कहता था. उसके मोबाइल, रुपए वगैरह सब अपने पास रख लेता था. इसी दौरान मंगलवार के दिन भी ऐसा ही हुआ था. युवती बैठकर गेट नंबर 5 के पास रो रही थी.

इसी बीच वहां के दुकानदारों और परेड के लिए गांधी मैदान आए गोरखा रेजिमेंट के जवानों ने लड़की को देखा. इसके बाद इसकी जानकारी गोरखा समाज समिति के अध्यक्ष सूरज थापा को सूचना दी गई. सूरज थापा ओला बुक कर के आए और युवती को अपने साथ लेकर कौशल नगर चले गए. जिसके बाद वह पुलिस के पास पहुंची.

## न्यूज अपडेट

### एसवीयू ने डीएसपी के तीन ठिकानों पर की छापेमारी

**पटना।** बिहार में भ्रष्टाचार के खिलाफ विशेष सतर्कता इकाई-स्पेशल विजिलेंस यूनिट (एसवीयू) ने शुक्रवार सुबह जहानाबाद में पदस्थापित डीएसपी संजीव कुमार के तीन ठिकानों पटना, खगड़िया और जहानाबाद में एक साथ छापेमारी की है . यह कार्रवाई आय से अधिक संपत्ति के गंभीर आरोपों के तहत की जा रही है.एसवीयू ने संजीव कुमार के खिलाफ मामला दर्ज किया है, जिसमें उन पर 1 करोड़ 52 लाख 42 हज़ार 469 रुपये की अवैध संपत्ति अर्जित करने का आरोप है. यह संपत्ति कथित तौर पर उनकी ज्ञात कानूनी आय के स्रोतों से कई गुना अधिक है. मामला भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 (संशोधित 2018) और बीएनएस 2023 की धारा 61(2)(ए) के तहत दर्ज किया गया है.एसवीयू के अनुसार डीएसपी के ठिकानों पर छापेमारी के लिए विशेष न्यायाधीश सतर्कता, पटना की अदालत से तलाशी वारंट जारी कराया गया था. इसके बाद सुबह-सुबह तीनों जिलों में अलग-अलग टीमों ने एक साथ दबिश दी. छापेमारी की अगुवाई खुद वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व में की जा रही है.

### गला रेतकर युवक की हत्या, तफ्तीश में जुटी पुलिस

**भागलपुर।** पुलिस जिला नवगछिया के रंगरा थाना क्षेत्र के मदरौनी पंचायत के सोहड़ा गांव के समीप शुक्रवार को एक युवक का शव बरामद किया गया है. मरने वाले की पहचान मदरौनी के रहने वाले छोटू रजक (27) के तौर पर हुई है. उसका शव इलाके के महंत बाबा स्थान के पास पड़ा हुआ था. शव को गमछी से ढक दिया गया था. जब पूजा करने के लिए आज लोग मंदिर पहुंचे तो उनका शव देखा. फिर लोग वहां जमा हो गए. गमछी हटाया तो शव लहूलुहान स्थिति में था. गला रेता हुआ था. इसके बाद इलाके में घटना की जानकारी आग की तरफ फैल गई. लोगों ने पुलिस को घटना की सूचना दी. जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी है. बताया जा रहा है कि मृतक शराब का सेवन प्रत्येक दिन करता था. बीती रात अपने दोस्तों के संग पार्टी करने के लिए निकला था. हालांकि पार्टी किस दोस्तों के साथ करने के लिए निकला था,

### रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय के दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी की हुई मौत

**बेतिया।** बेतिया के प्रतिष्ठित रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय (आरएलएसवाई कॉलेज) में उस वक्त हड़कंप मच गया जब दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी धरमेंद्र यादव उर्फ भोला की मौत के बाद उनका शव कॉलेज परिसर में रखकर अन्य कर्मचारी धरने पर बैठ गए. धरना पिछले कई दिनों से वेतन भुगतान को लेकर चल रहा था, लेकिन अब स्थिति और गंभीर हो गई है. धरना पर बैठे कर्मचारियों का आरोप है कि प्रभारी प्राचार्य डॉ. अभय कुमार की लापरवाही और उदासीनता के कारण पिछले 9 महीनों से वेतन का भुगतान नहीं किया गया. इसी आर्थिक तंगी के चलते धर्मेंद्र यादव उचित इलाज नहीं करा सके और उनकी मौत हो गई. कर्मचारियों ने बताया कि मौत की सूचना के बाद भी कॉलेज प्रशासन या जिला प्रशासन का कोई अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचा. सिर्फ 112 की पुलिस टीम थोड़ी देर के लिए पहुंची थी, लेकिन वे भी वापस लौट गई. धरना पर बैठे कर्मचारियो ने प्राचार्य पर गंभीर आरोप लगाया.

### राजद की 'क्षत्रिय सम्मान यात्रा' से बिहार की सियासत में हलचल तेज, एनडीए को चुनौती देने की कोशिश

**सासाराम।** बिहार की सियासत में एक नई हलचल तब मची जब राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने 'क्षत्रिय सम्मान यात्रा' की शुरुआत की. यह यात्रा सासाराम से शुरू हुई और डेहरी ऑन सोन तक पहुंची, जिसका नेतृत्व पार्टी नेता आशुतोष सिंह कर रहे हैं. इस पहल का उद्देश्य स्पष्ट है — क्षत्रिय समाज को साधना और उन्हें यह संदेश देना कि मौजूदा सरकार में उनकी उपेक्षा हो रही है. आशुतोष सिंह ने अपने बयान में कहा कि वर्तमान सरकार ने लगातार क्षत्रिय समाज की अनदेखी की है, जिसे अब और बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. उन्होंने दावा किया कि क्षत्रिय समाज अब बड़ी संख्या में राजद की ओर आकर्षित हो रहा है, क्योंकि सिर्फ राजद ही उनके हितों की सच्ची रक्षा कर सकती है. यह यात्रा खास इसलिए भी मानी जा रही है क्योंकि राजद पारंपरिक रूप से मुस्लिम-यादव (एम-वाई) समीकरण पर निर्भर रही है. लेकिन अब पार्टी अपने दायरे को बढ़ाते हुए सवर्ण समुदायों को भी साधने की रणनीति अपना रही है.

## कारोबार

### ट्रंप ने मृत अर्थव्यवस्था से 10 वर्षों में कमाए 1800 करोड़

**नई दिल्ली.** डोनाल्ड ट्रंप की ट्रंप ऑर्गनाइजेशन ने भारत में बिना प्रत्यक्ष निर्माण किए ब्रांडिंग और लाइसेंसिंग के जरिये पिछले 10 वर्षों में लगभग 1,800 करोड़ रुपये की कमाई की है. कंपनी ने 2014 के बाद मुंबई, पुणे, गुरुग्राम और कोलकाता में ट्रंप टावर प्रोजेक्ट्स के माध्यम से भारतीय रियल एस्टेट में कदम रखा. मुंबई में लोढ़ा ग्रुप से 225 करोड़, पुणे में पंचशील रियल्टी से 120 करोड़, कोलकाता में यूनिमार्क से 105 करोड़ और गुरुग्राम में एम3एम इंडिया से 180 करोड़ रुपये की रॉयल्टी कमाई. वैश्विक स्तर पर ट्रंप ऑर्गनाइजेशन की सालाना राजस्व क्षमता लगभग 25,000 करोड़ रुपये आंकी गई है.

### हादसे में मारे गए परिजनों को 27.17 लाख मुआवजा

**नई दिल्ली.** महाराष्ट्र के ठाणे में मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण ने 2018 की दुर्घटना में मारे गए बापू रावूल के परिजनों को 27.17 लाख मुआवजा देने का आदेश दिया. एफआईआर में मृतक को दोषी ठहराया गया था, लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों के बयान के आधार पर न्यायाधिकरण ने मुआवजा स्वीकृत किया. अगस्ता वेस्टलैंड केस में कोर्ट ने क्रिश्चियन मिशेल की रिहाई याचिका खारिज की. वहीं, एनटीपीसी ग्रीन और एनएचपीसी नवीकरणीय ऊर्जा निवेश के लिए बॉन्ड जारी करेंगी. जून तिमाही में मोबाइल फोन के दम पर इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 47% बढ़कर 12.4 अरब डॉलर हो गया. दूसरी ओर, जुलाई में वाहनों की बिक्री 4% घटी, पर ट्रैक्टर बिक्री 11% बढ़ी. ग्रामीण मांग ने बिक्री को सहारा दिया, जबकि शहरी क्षेत्र में मांग धीमी रही. त्योहारों के मौसम में बिक्री सुधार की उम्मीद है.प्रतिक्रिया:यह रिपोर्ट न्याय, आर्थिक प्रगति और बाज़ार प्रवृत्तियों के संतुलन को दर्शाती है. सकारात्मक पहलुओं के साथ कुछ चुनौतियाँ भी स्पष्ट हैं.

## फ्लाईएसबीएस एविएशन का धमाकेदार डेब्यू पहले ही दिन निवेशकों का पैसा लगभग दोगुना

एजेंसी। नई दिल्ली

प्राइवेट जेट सेवा देने वाली कंपनी फ्लाईएसबीएस एविएशन ने आज एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर शानदार लिस्टिंग की. कंपनी के शेयर आईपीओ में 225 रुपये प्रति शेयर के भाव पर जारी हुए थे, लेकिन पहले ही दिन 90% प्रीमियम के साथ 427.50 रुपये पर लिस्ट हुए. इसके बाद थोड़ी ही देर में शेयर 448.85 रुपये के अपर सर्किट पर पहुंच गया. इस तरह पहले दिन ही निवेशकों को लगभग 99.5% का लाभ हुआ.कंपनी का 102.53 करोड़ रुपये का आईपीओ 1 से 5 अगस्त तक खुला था, जिसे निवेशकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली. यह आईपीओ कुल 318.68 गुना सब्सक्राइब हुआ, जिसमें क्यूआईबी श्रेणी 191.93 गुना, एनआईआई श्रेणी 563.64 गुना और रिटेल श्रेणी 286.06 गुना सब्सक्राइब हुई.आईपीओ से जुटाई गई राशि का उपयोग कंपनी छह नए विमान लीज पर लेने, पुराने कर्ज चुकाने, और अन्य कॉरपोरेट उद्देश्यों में करेगी. वित्तीय प्रदर्शन की बात करें तो कंपनी ने FY 2022-23 में 3.44 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया था, जो FY 2023-24 में बढ़कर 11.25 करोड़ और FY 2024-25 में 28.41 करोड़ रुपये पहुंच गया. कुल आय भी इसी अवधि में 34.68 करोड़ से बढ़कर 195.38 करोड़ रुपये हो गई.हालांकि, कंपनी का कर्ज भी बढ़ा है, जो FY 2024-25 के अंत तक 17.93 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है. निवेशकों को अब कंपनी की आगे की ग्रोथ और फंड के उपयोग पर नजर रखनी होगी.

### एलआईसी के शेयरों में मजबूती, आया उछाल

**नई दिल्ली।** भारतीय जीवन बीमा निगम के शेयरों में शुक्रवार को तेज़ी देखी गई, जब कंपनी ने वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में मजबूत वित्तीय प्रदर्शन की जानकारी दी. बीएसई पर एलआईसी का शेयर 4.69% बढ़कर 927 और एनएसई पर 4.75% चढ़कर 927.10 पर बंद हुआ. कंपनी ने 10,461 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 10,987 करोड़ था, यानी 5% की वृद्धि. एलआईसी की आय 2,22,864 करोड़ रही, जो पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ी हुई है. प्रथम वर्ष का प्रीमियम भी बढ़कर 7,525 करोड़ हो गया. कंपनी के सीईओ आर. दोरईस्वामी ने कहा कि एलआईसी मुनाफे में वृद्धि की दिशा में काम कर रही है.

### आरबीआई का सर्वे : महंगाई को लेकर उम्मीदें घटीं

**नई दिल्ली।** आरबीआई के जुलाई 2025 सर्वे के अनुसार, शहरी परिवारों की महंगाई की धारणा में गिरावट आई है। जुलाई में मुद्रास्फीति की औसत धारणा 7.2% रही, जो मई में 7.7% थी। आगामी तीन और 12 महीनों के लिए महंगाई उम्मीदें क्रमशः 8.3% और 9.0% रहीं। भोपाल में एक साल बाद महंगाई की सबसे अधिक 11.2% और अहमदाबाद में सबसे कम 5.4% उम्मीद जताई गई।सेवानिवृत्त लोगों ने 9.6% मुद्रास्फीति की आशंका जताई.

## सोना-चांदी की कीमतों में जबरदस्त उछाल

एजेंसी । नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में सोना और चांदी की कीमतों में लगातार चौथे दिन तेजी देखने को मिली है. आज 24 कैरेट सोना 200 से 220 रुपये प्रति 10 ग्राम महंगा होकर 1,02,560 से 1,02,710 रुपये के बीच बिक रहा है, जबकि 22 कैरेट सोना 94,010 से 94,160 रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच गया है.चांदी की कीमत में भी बड़ी उछाल दर्ज की गई है. आज दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी 1,000 रुपये महंगी होकर 1,17,100 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है.दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, पटना, जयपुर समेत बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर जैसे शहरों में भी आज सोने के दामों में तेजी दर्ज की गई. ज्यादातर बाजारों में 24 कैरेट सोना 1,02,560 से 1,02,710 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 94,010 से 94,160 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहा है.विशेषज्ञों के अनुसार, वैश्विक बाजार में कीमती धातुओं की मांग में वृद्धि और डॉलर के कमजोर होने के कारण सोने-चांदी की कीमतों में तेजी बनी हुई है.

### नीतिगत दरों को स्थिर रखना तकनीकी कदम

**नई दिल्ली।** भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने रेपो दर को 5.5% पर स्थिर बनाए रखा है, जिसे एक तकनीकी और संतुलित कदम के रूप में देखा जा रहा है. यह निर्णय मुद्रास्फीति के अनुमान और आर्थिक विकास की गति को ध्यान में रखकर लिया गया है. आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2026 की तीसरी तिमाही तक मुद्रास्फीति दर 3% से नीचे रहने की संभावना है, जबकि वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही में यह बढ़कर 4.9% तक पहुंच सकती है.

**टैरिफ** भारत पर अमेरिकी टैरिफ का निराशाजनक असर सामने

## निर्यात और रोजगार पर बड़ा संकट दिख रहा

एजेंसी। नयी दिल्ली



अमेरिका द्वारा भारतीय वस्त्र और रत्न-आभूषण उत्पादों पर अतिरिक्त 25% टैरिफ लगाने से भारत की जीडीपी में 0.4% की गिरावट का अनुमान है. बैंकिंग विशेषज्ञ अजय बग्गा के अनुसार, इतना ऊंचा टैरिफ व्यापार को असंभव बना देता है, जिससे निर्यातकों को भारी नुकसान हो रहा है. क्रिसमस के ऑर्डर और शिपमेंट तैयार होने के बावजूद खरीदार ऑर्डर रद्द कर रहे हैं. फियो ने बताया कि इससे भारत के 55% निर्यात प्रभावित होंगे और 30-35% प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान होगा. रत्न एवं आभूषण उद्योग में निर्यात 75% तक घट सकता है, जिससे 1.25 लाख नौकरियों पर संकट है. वस्त्र उद्योग में भी अमेरिकी बाजार पर निर्भर छोटी कंपनियों के लिए यह हालात बेहद गंभीर हैं. एईपीसी के अनुसार, यह सूक्ष्म और श्रम-प्रधान उद्यमों के लिए ₹मौत की घंटी₹ जैसी स्थिति है. विशेषज्ञों का मानना है कि इस संकट का समाधान बातचीत और संतुलित रणनीति से किया जाना चाहिए. भारत सरकार से उम्मीद है कि वह अमेरिका से वार्ता के जरिये समाधान निकालेगी और प्रभावित उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान करेगी.

### टैरिफ बम से गिरा बाजार

**नयी दिल्ली ।** शेयर बाजार में शुक्रवार को गिरावट दर्ज की गई, जहां विदेशी पूंजी की लगातार निकासी और भारत-अमेरिका के बीच टैरिफ अनिश्चितताओं ने निवेशकों की चिंता बढ़ा दी. बीएसई सेंसेक्स 242 अंक गिरकर 80,381 पर और निफ्टी 55 अंक फिसलकर 24,541 पर आ गया. भारती एयरटेल, इंफोसिस और एचडीएफसी बैंक जैसे दिग्गज शेयरों में गिरावट आई, जबकि टाइटन और बजाज फाइनेंस जैसे शेयरों ने मजबूती दिखाई. एफआईआई ने 4,997 करोड़ के शेयर बेचे, वहीं डीआईआई ने 10,864 करोड़ की खरीदारी की. विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार में कमजोरी बनी रह सकती है, हालांकि घरेलू निवेशकों की स क्रियता राहत दे रही है.

## पेज एक का शेष

### याद रहे आदिवासियत से ही बचेगी ...

आज देश की अधिकांश खनिज संपदा, जल संसाधन और वन क्षेत्र उन्हीं इलाकों में स्थित हैं जहां आदिवासी निवास करते हैं—छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, मध्यप्रदेश, नगालैंड, मिज़ोरम, त्रिपुरा आदि. यह संयोग नहीं, बल्कि इतिहास की विडंबना है कि इन क्षेत्रों में सबसे अधिक खनन परियोजनाएं, बड़े बांध, औद्योगिक कॉरिडोर और सड़कों की परियोजनाएं प्रस्तावित हैं. इन तथाकथित 'विकास' योजनाओं की कीमत पर न केवल आदिवासी अपनी जमीन और जंगल से बेदखल हो रहे हैं, बल्कि उनके विश्वास, परंपराएं, समाज संरचना और राजनीतिक स्वायत्तता भी नष्ट हो रही है.
1950 से अब तक लगभग 5 करोड़ लोग विकास परियोजनाओं के कारण विस्थापित हुए हैं, जिनमें 40% से अधिक आदिवासी हैं. केवल झारखंड में पिछले दो दशकों में 12 लाख से अधिक लोग अपनी जमीन से बेदखल हुए. 2006 में बने वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) के तहत जिन अधिकारों को मान्यता दी गई, उनकी 70% से अधिक दावेदारियां अभी तक लंबित हैं या खारिज कर दी गई हैं.

**जंगलों के प्रहरी: पर्यावरण की अंतिम उम्मीद**

एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की 80% जैवविविधता उन क्षेत्रों में संरक्षित है, जहां आदिवासी समुदाय रहते हैं. ये समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान, अनुष्ठानों और सामूहिक निर्णय प्रणाली के माध्यम से: वनस्पतियों की प्रजातियों की रक्षा करते हैं, नदियों और जलस्त्रोतों का संरक्षण करते हैं,और औषधीय ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं. जब यूरोपीय देश 'क्लाइमेट टेक' और 'ग्रीन एनर्जी' की बात कर रहे हैं, एक आदिवासी महिला अपने गांव के पास छोटे-से कुंआ को स्वच्छ रखकर सौ परिवारों का जल जीवन चला रही होती है.

**आदिवासी ज्ञान: विज्ञान से कम नहीं**

बहुत लोग आदिवासी ज्ञान को 'अंधविश्वास' समझते हैं, जबकि यह स्थानीय विज्ञान का सर्वोत्तम रूप है. उदाहरण के लिए झारखंड के हो जनजाति में यह परंपरा है कि पेड़ को केवल तब काटा जाए जब उसके पास कम से कम पांच नए पेड़ रोपे गए हों. ओडिशा के कोंध आदिवासी हर वर्ष 'मेरिया पर्व' मनाते हैं जिसमें वे जंगलों को दान देते हैं, न कि उनसे मांगते हैं. मध्य भारत की बैगा जनजाति, कभी हल नहीं चलाते क्योंकि उनका मानना है कि धरती मां की छाती को नहीं चीरना चाहिए. ये सब सिर्फ 'संस्कृति' नहीं, सतत विकास की वैकल्पिक दृष्टि हैं.

**पेसा और वनाधिकार की महत्ता**

भारतीय संविधान ने भी आदिवासियत की महत्ता को मान्यता दी है—विशेषकर दो ऐतिहासिक कानूनों के ज़रिए. पेसा 1996, अनुसूचित क्षेत्रों में ग्रामसभा को स्थानीय संसाधनों, खनन, जल-जंगल-जमीन और परंपरागत संस्थाओं पर निर्णय लेने का अधिकार देता है. वनाधिकार कानून 2006, उन समुदायों को जंगलों पर अधिकार देता है जो पीढ़ियों से वहां रह रहे हैं. लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि इन कानूनों का पूरी तरह से कार्यान्वयन नहीं हो पाया, और आदिवासी समुदाय आज भी अपनी जमीन के लिए, अपने जंगल के लिए, अपनी भाषा और संस्कृति के लिए संघर्ष कर रहा है.

**क्या दुनिया आदिवासियों से कुछ सीख सकती है**

बिल्कुल. और सीखना अब विकल्प नहीं, आवश्यकता है. आदिवासी हमें सिखाते हैं कि 'कम में भी जीवन संभव है.' वे हमें दिखाते हैं कि 'प्रकृति के साथ लड़ो नहीं, उसके साथ जियो.' वे हमें याद दिलाते हैं कि 'विकास का अर्थ विनाश नहीं है.' अगर आज की शिक्षा व्यवस्था, विकास नीति और राजनीति—आदिवासी सोच को केंद्र में रखकर पुनः गढ़ी जाए, तो हम सिर्फ समाज नहीं, भविष्य को भी बचा सकते हैं.

**आदिवासियत: भविष्य का दर्शन**

आदिवासियत कोई बीती हुई संस्कृति नहीं, बल्कि आने वाले समय की सबसे प्रासंगिक जीवनशैली है. जब सांस लेने लायक हवा कम पड़ रही है, जब धरती की छाती जल रही है, जब समाज बंट रहा है और संबंध टूट रहे हैं—तब एक आदिवासी विचार ही है जो कहता है: "पृथ्वी को मत जीतो, उससे प्रेम करो." "अगर पृथ्वी को बचाना है, तो उसे वही लोग बचाएंगे जिनका जीवन धरती के साथ बंधा हुआ है, न कि उससे अलग." इसलिए जब हम 9 अगस्त को 'विश्व आदिवासी दिवस' मनाएं, तो केवल तालियां न बजाएं, बल्कि अपनी नीतियों, दृष्टिकोण और जीवनशैली में थोड़ी सी आदिवासियत को जगह दें. क्योंकि वाकई... आदिवासियत से ही बचेगी दुनिया.

# भारत के 7 सबसे अमीर क्रिकेटर्स कौन हैं? टॉप पर हैं ये खिलाड़ी

शुभम संदेश डेस्क

भारत में क्रिकेट से जुड़ी लोकप्रियता और स्टारडम ने कई खिलाड़ियों को करोड़ों की कमाई का जरिया दिया है. आईपीएल कॉन्ट्रेक्ट, ब्रांड एंडोर्समेंट, बिजनेस और निवेश के माध्यम से इन खिलाड़ियों ने अपनी संपत्ति को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है. आइए जानते हैं द क्रिकेट पांडा की रिपोर्ट के अनुसार भारत के 7 सबसे अमीर क्रिकेटरों के बारे में.

**सचिन तेंदुलकर :** क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर भारत ही नहीं, दुनिया के सबसे अमीर क्रिकेटर माने जाते हैं. उनके करियर की कमाई सिर्फ मैदान तक सीमित नहीं रही, बल्कि एडिडॉस, कोका कोला जैसे ब्रांड्स के साथ लंबे समय तक जुड़ाव, खुद की कपड़ों की लाइन 'ट्रू ब्लू' और एसआरटी स्पोर्ट्स मैनेजमेंट जैसे बिजनेस से उनकी नेट वर्थ करीब 1,416 करोड़ रुपये (170 मिलियन डॉलर) पहुंच चुकी है. रिटायरमेंट के बाद भी उनकी ब्रांड वैल्यू और कमाई में कोई कमी नहीं आई है.

**महेंद्र सिंह धोनी :** महेन्द्र सिंह धोनी ने कमाई के मामले में भी खुद को बेजोड़ साबित किया है. चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान के रूप में उनकी आईपीएल कमाई करोड़ों में रही है. इसके अलावा रीबॉक, गल्फ ऑयल, और सोनाटा जैसे ब्रांड्स के साथ उनकी ब्रांड डील्स, और चेन्नइयन एफसी फुटबॉल टीम व स्पोर्ट्स फिट फिटनेस चेन जैसे निवेश ने उनकी कुल संपत्ति 917 करोड़ रुपये के पार पहुंचा दी है.

**विराट कोहली :** भारतीय क्रिकेट के मौजूदा सुपरस्टार विराट कोहली मैदान पर आक्रामक खेल और ब्रांडिंग में स्मार्ट सोच के लिए जाने जाते हैं. प्यूमा, ऑडी, एमआरएफ जैसे ब्रांड्स से उनकी करोड़ों की डील्स हैं, वहीं आरसीबी के साथ उनका आईपीएल कॉन्ट्रेक्ट भी सबसे महंगे खिलाड़ियों में गिना जाता है. उन्होंने चीजेल जिम चेन और रेगॉन जैसी कपड़ो की ब्रांड में भी निवेश किया है. उनकी कुल अनुमानित संपत्ति 834 करोड़ रुपये (100 मिलियन डॉलर) मानी जाती है.

**सौरव गांगुली :** टीम इंडिया को जीत की मानसिकता देने वाले पूर्व कप्तान और पूर्व बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने मैदान के साथ-साथ ऑफ द फील्ड भी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है. पेप्सी, प्यूमा, और टाटा जैसी कंपनियों के साथ एंडोर्समेंट और प्रशासनिक भूमिकाओं ने उनकी कमाई को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है. उनकी कुल संपत्ति लगभग 667 करोड़ रुपये आंकी गई है.

**वीरेंद्र सहवाग :** अपनी तूफानी बल्लेबाजी के लिए मशहूर वीरेंद्र सहवाग ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के बाद कमेंट्री, कोचिंग और ब्रांड प्रचार के जरिए भी अच्छी खासी कमाई की है. एडिडॉस और बूस्ट जैसे ब्रांड्स से उनका जुड़ाव लंबे समय तक रहा है. आज उनकी अनुमानित संपत्ति 334 करोड़ रुपये के आसपास है.

**युवराज सिंह :** युवराज सिंह ने सिर्फ क्रिकेट से ही नहीं, बल्कि अपनी बिजनेस समझ से भी काफी कमाई की है. उन्होंने प्यूमा, पेप्सी और रेविटॉल जैसे ब्रांड्स के साथ काम किया और अपने स्टार्टअप फंड 'यूकैन वैंचर्स' के जरिए कई नई कंपनियों में निवेश किया. आज उनकी संपत्ति 292 करोड़ रुपये मानी जाती है.

**सुनील गावस्कर :** भारतीय क्रिकेट के पहले सुपरस्टार माने जाने वाले सुनील गावस्कर ने कमेंट्री और मीडिया में लंबा सफर तय किया है. थम्स अप और दिनेश जैसे ब्रांड्स के साथ उनके पुराने जुड़ाव और लगातार टीवी अपीयरेंस से उनकी पहचान और कमाई दोनों बरकरार हैं. 74 वर्ष की उम्र में भी उनकी संपत्ति 262 करोड़ रुपये के आसपास बनी हुई है.

## इंडियन सुपर लीग से पहले अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ कराएगा सुपर कप

एजेंसियां। नयी दिल्ली

अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने सुपर कप को सितंबर-दिसंबर की अवधि में आयोजित करने का फैसला किया है, क्योंकि इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) का भविष्य अनिश्चित बना हुआ है. आईएसएल के शुरुआती दौर के लिए आरक्षित स्थान अब खाली होने के कारण सुपर कप टूर्नामेंट उसकी जगह लेगा. एआईएफएफ अध्यक्ष ने हाल ही में आईएसएल क्लब प्रमुखों के साथ बैठक की और टूर्नामेंट की योजनाओं को अंतिम रूप दिया, जिसके विजेता को एएफसी चैंपियंस लीग टू के प्रारंभिक दौर में जगह मिलेगी. एआईएफएफ अध्यक्ष कल्याण चौबे ने एक बयान में कहा, ₹हमें उम्मीद है कि सुपर कप सितंबर के दूसरे या तीसरे हफ्ते में होगा. कुछ टीमों को तैयारी पूरी करने और खिलाड़ियों को वापस लाने के लिए 6-8 हफ्ते का समय चाहिए.

अगली बैठक में हम शुरुआत की तारीख की घोषणा करेंगे. चौबे ने कहा, ₹अपने खिलाड़ियों या कर्मचारियों को भुगतान करना क्लब का अपना निर्णय है. हम इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते, सभी शीर्ष लीग इसी तरह काम करती हैं. भारत की शीर्ष पुरुष फुटबॉल लीग आईएसएल का आयोजन फुटबॉल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट लिमिटेड (एफएसडीएल) द्वारा एआईएफएफ के साथ एक मास्टर राइट्स एग्रीमेंट (एमआरए) के तहत किया जाता है. एमआरए की अवधि दिसंबर में समाप्त हो रही है तथा सुप्रीम कोर्ट ने एआईएफएफ संविधान पर निर्णय आने तक आगे की बातचीत पर रोक लगा दी है, जिसके कारण नए समझौते पर बातचीत रुक गई है.

### भारतीय दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया ए टीम का ऐलान

## सैम कॉन्स्टास को मिला मौका

एजेंसियां। नयी दिल्ली

खराब फॉर्म से जूझ रहे ऑस्ट्रेलिया के युवा ओपनर सैम कॉन्स्टास को भारत दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया ए टीम में शामिल किया गया है. 19 वर्षीय कॉन्स्टास को अगले महीने भारत में खेले जाने वाले दो चार दिवसीय मैचों के लिए टीम में चुना गया है. मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बैली ने इस अनुभव को खिलाड़ियों के लिए ₹अमूल्य₹ बताया है.

वेस्टइंडीज दौरे पर खराब प्रदर्शन के बावजूद कॉन्स्टास को भारत दौरे के लिए मौका दिया गया है. वह चार दिवसीय टीम में शामिल होने वाले एकमात्र वर्तमान टेस्ट खिलाड़ी हैं. इसके अलावा टेस्ट कैप प्राप्त कूपर कॉनॉली, टॉड मर्फी और नाथन मैकस्वीनी भी 14 सदस्यीय टीम का हिस्सा हैं. तीन एकदिवसीय मैचों के लिए अलग ऑस्ट्रेलिया ए टीम की भी घोषणा की गई है. बैली ने कहा, "उपमहाद्वीप की परिस्थितियां विशेष होती हैं और यहां खेलने से खिलाड़ी अपने खेल को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं. बार-बार इन हालातों में खेलने से भविष्य के दौरों के लिए खिलाड़ियों को तैयार किया जा सकता है." कॉन्स्टास ने पिछले साल बॉक्सिंग डे टेस्ट में भारत के खिलाफ 60 रनों की धमाकेदार पारी खेली थी, लेकिन उसके बाद वो लगातार संघर्ष कर रहे हैं. वेस्ट इंडीज के खिलाफ हाल ही में हुई सीरीज में उन्होंने छह पारियों में 25 रन भी पार नहीं किए थे.

ऑस्ट्रेलिया ए चार दिवसीय टीमः ज़ेवियर बार्टलेट, कूपर कॉनॉली, जैक एडवर्ड्स, एरोन हार्डी, कैंपबेल केलावे, सैम कॉन्स्टास, नाथन मैकस्वीनी, लांस मॉरिस, टॉड मर्फी, फर्गस ओ'नील, ओलिवर पीक, जोश फिलिप, कोरी रोचिचियॉली, लियाम स्कॉट

**ऑस्ट्रेलिया ए एकदिवसीय टीम :** कूपर कॉनॉली, हैरी डिक्सन, जैक एडवर्ड्स, सैम एलियट, जेक फ्रेजर-मकगर्क, एरोन हार्डी, मैकेंजी हार्वे, टॉड मर्फी, तनवीर सांघा, लियाम स्कॉट, लैकी शॉ, टॉम स्ट्रेकर, विल सदरलैंड, कैलम विडलर

ऑस्ट्रेलिया ए बनाम इंडिया ए मैच **शेड्यूलः 16-19 सितंबरः** पहला चार दिवसीय मैच – लखनऊ

23-26 सितंबरः दूसरा चार दिवसीय मैच – लखनऊ

30 सितंबरः पहला वनडे – कानपुर

3 अक्टूबरः दूसरा वनडे – कानपुर

5 अक्टूबरः तीसरा वनडे – कानपुर

## दुष्कर्म के आरोप में पाकिस्तानी क्रिकेटर मैनचेस्टर में गिरफ्तार

### जमानत पर रिहा किया गया

एजेंसियां। इस्लामाबाद

पाकिस्तान क्रिकेट एक नए निम्न स्तर पर पहुंच गया है. पड़ोसी मुल्क का एक युवा खिलाड़ी, हैदर अली, जो देश की 'ए' टीम 'पाकिस्तान शाहीन' के साथ यूनाइटेड किंगडम के दौरे पर था, उसे ग्रेटर मैनचेस्टर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया.

एक लड़की द्वारा बलात्कार का आरोप लगाए जाने की शिकायत के बाद उन्हें गिरफ्तार किया गया. पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने हैदर अली को अस्थाई तौर पर निलंबित कर दिया है. टेलीकॉम एशिया स्पोर्ट्स की रिपोर्ट के मुताबिक, हैदर को ग्रेटर मैनचेस्टर पुलिस ने बेकनहम मैदान से गिरफ्तार किया, जहां पाकिस्तान शाहीन एमसीएसएसी के खिलाफ तीन अगस्त को मैच खेल रहे थे. रिपोर्ट में एक सूत्र के हवाले से कहा गया, 'यह पाकिस्तानी मूल की लड़की के खिलाफ बलात्कार का मामला है.'

जानकारी के मुताबिक, ग्रेटर मैनचेस्टर पुलिस ने हैदर का पासपोर्ट जब्त कर लिया था, लेकिन उसे बाद में जमानत पर रिहा कर दिया गया. पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने कहा कि वह जांच में सहयोग करेगा और हैदर को यह मामला लड़ने में समर्थन देगा. इस बीच पीसीबी ने हैदर अली को तब तक के लिए निलंबित कर दिया है, जब तक कि उनका नाम पाक साफ नहीं हो जाता. पीसीबी प्रवक्ता ने टेलिकॉम एशिया.नेट से कहा, 'हमें इस मामले और जांच के बारे में बताया गया था. हमने जांच पूरी होने तक हैदर को निलंबित कर दिया है और हम ब्रिटेन में अपनी जांच करेंगे.'

**रोने लगे हैदर! खुद को बेकसूर बताया :** जानकारी के मुताबिक, 'मैदान से गिरफ्तार किए जाने के बाद हैदर की आंखों में आंसू थे और जांच के दौरान उन्होंने खुद को बेकसूर बताया.' पाकिस्तान शाहीन की टीम 17 जुलाई से छह अगस्त तक यूके के दौरे पर थी और उन्होंने दो तीन दिवसीय मैच खेले और दोनों मैट ड्रॉ रहे. इसके बाद तीन मैचों की एक दिवसीय सीरीज में उन्होंने 2-1 से जीत हासिल की.

## वन-डे क्रिकेट में कौन-कौन सी टीमों ने किया सीरीज में 'व्हाइटवॉश'

एजेंसियां। नयी दिल्ली

वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में जब कोई टीम किसी द्विपक्षीय सीरीज में हर मुकाबला जीतती है, तो उसे 'व्हाइटवॉश' कहा जाता है. यह किसी भी टीम के लिए पूरी तरह से दबदबा दिखाने वाला होता है. इतिहास में कुछ ऐसी यादगार सीरीज रही हैं, जहां टीमों ने अपने विरोधियों को कोई भी मौका नहीं दिया और हर मुकाबला जीतकर सीरीज को पूरी तरह से अपने नाम किया. आइए नजर डालते हैं वनडे व्हाइटवॉश सीरीज पर, जिसने क्रिकेट इतिहास में खास जगह बनाई है.

**वेस्टइंडीज बनाम इंग्लैंड (1976, इंग्लैंड में) :** प्रुडेंशियल ट्रॉफी के तहत वेस्टइंडीज ने इंग्लैंड जैसी मजबूत टीम को 3 मैचों की सीरीज में 3-0 से हराया था. यह उस समय की सबसे शक्तिशाली वेस्टइंडीज टीमों में से एक थी, जिसमें विवियन रिचर्ड्स और माइकल होल्डिंग जैसे खिलाड़ी शामिल थे. इस सीरीज ने वेस्टइंडीज की बादशाहत को और मजबूत किया था.

**वेस्टइंडीज बनाम पाकिस्तान (1980–81, पाकिस्तान में) :** वेस्टइंडीज की टीम ने साल 1980-81 में पाकिस्तान की धरती पर एक और क्लीन स्वीप किया था. इस बार भी सीरीज 3-0 से उनके नाम रही थी. पाकिस्तान जैसी मजबूत घरेलू टीम को हराना यह दिखाता है कि वेस्टइंडीज का उस दौर में क्या दबदबा था.

**भारत बनाम श्रीलंका (1982–83, भारत में) :** भारत ने भी 1982–83 में श्रीलंका के खिलाफ घरेलू सरजमी पर शानदार प्रदर्शन किया था और तीनों मुकाबले जीतकर सीरीज अपने नाम की थी. यह सीरीज भारत के लिए खासतौर पर इसलिए भी अहम थी क्योंकि इसके कुछ महीनों बाद भारतीय टीम ने पहली बार 1983 विश्व कप भी जीता था. इस क्लीन स्वीप ने टीम को आत्मविश्वास से भर दिया था.

**न्यूजीलैंड बनाम इंग्लैंड (1982–83, न्यूजीलैंड में) :** इस सीरीज में न्यूजीलैंड ने इंग्लैंड की टीम को 3-0 से मात दी थी. घरेलू हालात का फायदा उठाते हुए कीवी टीम ने पूरे टूर्नामेंट में इंग्लैंड की टीम को वापसी का कोई मौका नहीं दिया था.

**न्यूजीलैंड बनाम श्रीलंका (1982–83, न्यूजीलैंड में) :** उसी साल, फिर से न्यूजीलैंड की टीम ने श्रीलंका को भी 3-0 से हराकर अपने नाम एक और व्हाइटवॉश दर्ज किया था. लगातार दो सीरीज में क्लीन स्वीप करना किसी भी टीम के लिए बड़ी उपलब्धि होती है.

## एशिया कप से पहले घरेलू क्रिकेट खेलेंगे शुभमन गिल

- दलीप ट्रॉफी में नॉर्थ जोन टीम का करेंगे नेतृत्व

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारत के टेस्ट टीम के कप्तान शुभमन गिल दलीप ट्रॉफी 2025 में नॉर्थ जोन टीम का नेतृत्व करेंगे. इस टीम में अर्शदीप सिंह और हर्षित राणा को भी शामिल किया गया है. तीनों 28 अगस्त से ईस्ट जोन के खिलाफ शुरू होने वाले दलीप ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल मुकाबले में खेलते नजर आएंगे. बता दें कि, एशिया कप का आयोजन 9-28 सितंबर के बीच होना है. अगर तीनों खिलाड़ियों को भारतीय टीम में चुना जाता है तो उन्हें नॉर्थ जोन के स्क्वॉड से रिलीज कर दिया जाएगा.

**गिल-अर्शदीप और हर्षित को रिप्लेस करेंगे ये खिलाड़ी :** गिल के नेतृत्व में हाल ही में भारतीय टेस्ट टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली थी। 2-2 पर समाप्त हुई इस सीरीज में युवा बल्लेबाज ने शानदार प्रदर्शन किया और सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे. अब वह घरेलू क्रिकेट में अपना दम खम दिखाने के लिए तैयार हैं. अगर गिल को एशिया कप के लिए भारतीय टीम में चुना जाता है तो शुभम रोहिल्ला उन्हें रिप्लेस करेंगे. वहीं, अर्शदीप सिंह की जगह गुरनूर बरार को मौका मिलेगा जबकि हर्षित राणा की जगह अनुज ठकराल लेंगे.

**दलीप ट्रॉफी के लिए नॉर्थ जोन की टीम :** शुभमन गिल (कप्तान), शुभम खजूरिया, अंकित कुमार (उपकप्तान), आयुष बडोनी, यश ढुल, अंकित कलसी, निशांत सिंधु, साहिल लोत्रा, मयंक डागर, युद्धवीर सिंह चरक, अर्शदीप सिंह, हर्षित राणा, अंशुल कंबोज, आकिब नबी, कन्हैया वाधवन (विकेटकीपर).

**रिजर्व खिलाड़ी :** शुभम अरोड़ा (विकेटकीपर), जसकरनवीर सिंह पॉल, रवि चौहान, आबिद मुश्ताक, निशंक बिड़ला, उमर नजीर, दिवेश शर्मा.

## रद्द हो जाएगा भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाला एशिया कप मैच

एजेंसियां। नयी दिल्ली

### अमीरात बोर्ड के अधिकारी ने दिया जवाब

भारत और पाकिस्तान के बीच खेले जाने वाले एशिया कप के मुकाबले को लेकर कयासों का दौर जारी है. भारतीय प्रशंसकों की मांग है कि टीम इंडिया को पाकिस्तान के खिलाफ नहीं खेलना चाहिए. हालांकि, अमीरात क्रिकेट बोर्ड के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर (सीओओ) का मानना है कि एशिया कप में ऐसी स्थिति उत्पन्न होने की संभावना नहीं है. हाल ही में भारत चैंपियंस ने पाकिस्तान के खिलाफ विश्व चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स 2025 का मुकाबला खेलने से इनकार कर दिया था. टीम ने पहले लीग राउंड में पाकिस्तान के खिलाफ खेलने से इनकार किया था. इसके बाद युवराज सिंह के नेतृत्व वाली टीम ने अपने फैसले पर अडिग रहते हुए पाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल मैच का बहिष्कार कर दिया था.

**प्रशंसकों की मांग- पाकिस्तान से नहीं खेले भारत :** ऐसी ही स्थिति एशिया कप में भी बनती दिख रही है. नौ सितंबर से शुरू होने वाले इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम अपने यूएई के खिलाफ मुकाबले से करेगी. इसके बाद टीम का सामना पाकिस्तान से 14 सितंबर को दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम पर होना है जबकि तीसरा मुकाबला ओमान से 19 सितंबर को अबु धाबी में खेला जाएगा. भारतीय प्रशंसकों की मांग है कि भारतीय टीम को पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबले से इनकार कर देना चाहिए.

**अमीरात क्रिकेट बोर्ड के अधिकारी का जवाब :** इस बीच अमीरात क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर (सीओओ) सुभान अहमद ने द नेशनल से बात करते हुए कहा कि भारत-पाकिस्तान मैच के रद्द होने की कोई गारंटी नहीं दे सकते, लेकिन एशिया कप की तुलना डब्ल्यूसीएल जैसे निजी आयोजन से करना ठीक नहीं है. जब एशिया कप में खेलने का फैसला लिया जाता है, तो पहले से सरकारी अनुमति ली जाती है.

**तीन बार भिड़ सकते हैं भारत और पाकिस्तान :** एशिया कप में भारत और पाकिस्तान को एक ही ग्रुप में रखा जाएगा, जहां दोनों एक बार भिड़ेंगी. इसके बाद सुपर फोर चरण में एक-दूसरे के खिलाफ एक और मुकाबला खेलने का मौका मिलेगा. अगर दोनों टीमें फाइनल में पहुंचती हैं तो उनके बीच तीसरी मुकाबला भी खेला जा सकता है.

**फुटबॉल** | मेसी और रोनाल्डो को लगातार दूसरे साल जगह नहीं

## बैलोन डी ओर के लिए सभी दावेदारों की लिस्ट जारी

एजेंसियां। नयी दिल्ली

बैलोन डी ओर को फुटबॉल का सबसे प्रतिष्ठित अवॉर्ड माना जाता है. साल 2025 के बैलोन डी ओर के लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों की शॉर्टलिस्ट की आधिकारिक घोषणा हो गई है. फ्रांस फुटबॉल इस अवॉर्ड को देते है. इसमें बेस्ट महिला और पुरुष फुटबॉलर के साथ कई और अवॉर्ड दिए जाते हैं. जिसमें बेस्ट गोलकीपर, बेस्ट यंग प्लेयर, बेस्ट क्लब और बेस्ट कोच शामिल हैं.

**30 में 9 खिलाड़ी पीएसजी के :** 30 पुरुष नामांकितों में स्पेन के लामिन यमाल, फ्रांसीसी फॉरवर्ड ओस्मान डेम्बेले, इंग्लैंड के स्टार हैरी केन, जूड बेलिंगहैम, डेक्लान राइस, कोल पामर और स्कॉटलैंड के स्कॉट मैकटोमिने शामिल हैं. फ्रांस के काइलियन एम्बाप्पे और नॉर्वे के एर्लिंग हालैंड भी दौड़ में सबसे आगे हैं. सबसे ज्यादा 9 खिलाड़ी चैंपियंस लीग की विजेता पीएसजी के हैं. डेम्बेले के अलावा जियानलुइगी डोनारुम्मा, डिजायर डू, अचरफ हकीमी, खिवचा क्वारत्सखेलिया, नूनो मेंडेस, जोआओ नेव्स, फैबियन रुइज और वितिन्हा शामिल हैं. बैलोन डी ओर को सबसे ज्यादा 8 बार अर्जेंटीना के लियोनेल मेसी ने जीता है. 5 अवॉर्ड के साथ क्रिस्टियानो रोनाल्डो दूसरे नंबर पर हैं. रोनाल्डो सबसे ज्यादा 18 बार नॉमिनेट हुए हैं. लेकिन अब लगातार दूसरे साल मेसी और रोनाल्डो में किसी को भी नॉमिनेट नहीं किया गया है. मेसी अमेरिका के क्लब इंटर मियामी के लिए खेलते हैं. वहीं रोनाल्डो सउदी अरब के अल निसर का हिस्सा हैं.

**बैलोन डी ओर के लिए नॉमिनेट :** पुरुषः जूड बेलिंगहैम, ओस्मान डेम्बेले, जियानलुइगी डोनारुम्मा, डिजायर डू, डेन्जेल डमफ्रीज, सेरहौ गुइरासी, विक्टर ग्योकेरेस, एर्लिंग हैलैंड, अचरफ हकीमी, हैरी केन, खिवचा क्वारत्सखेलिया, रॉबर्ट लेवांडोव्स्की, एलेक्सिस मैक एलिस्टर, लुटारो मार्टिनेज, किलियन एमबीप्पे, स्कॉट मैकटोमिने, नूनो मेंडेस, जोआओ नेव्स, माइकल ओलिसे, कोल पामर, पेड्री, रफिन्हा, डेक्लान राइस, फैबियन रुइज़, मोहम्मद सलाह, वर्जिल वैन डिज्क, विनीसियस जूनियर, विटिन्हा, फ्लोरियन विर्ट्ज़, लामिन यमाल.

**महिला :** सैंडी बाल्टीमोर, बारबरा बांदा, ऐटाना बोनमती, लुसी ब्रॉन्ज, क्लारा ब्यूहल, मैरियोना कैल्डेंटी, सोफिया कैंटोर, स्टीफ कैटली, टेम्वा चाविंगा, मेल्ची डुमोर्ने, एमिली फॉक्स, क्रिस्टियाना गिरेली, एस्थर गोंजालेज, कैरोलिन ग्राहम हैनसेन, हन्ना हैम्पटन, पर्निल हार्डर, पैट्री गुइजारो, अमांडा गुटिएरेस, लिंडसे हीप्स, क्लो केली, फ्रिडा लियोनहार्डसन-मानुम, मार्टा, क्लारा माटेओ, इवा पाजोर, क्लाउडिया पिना, एलेक्सिया पुटेलस, एलेसिया रूसो, जोहाना राइटिंग कनेरीड, कैरोलिन वियर, लीह विलियमसन.

**पुरुष कोच ऑफ द ईयरः** एंटोनियो कोंटे, लुइस एनरिक, हेंसी फ्लिक, एंजो मारेस्का, आर्ने स्लॉट.

**महिला कोच ऑफ द ईयर :** सोनिया बोम्पास्टोर, आर्थर एलियास, जस्टिन मदुगु, रेनी स्लेगर्स, सरीना विगमैन.

**पुरुष क्लब ऑफ द ईयरः** बार्सिलोना, बोटाफोगो, चेल्सी, लिवरपूल, पेरिस सेंट जर्मेन.

**महिला क्लब ऑफ द ईयरः** आर्सेनल, बार्सिलोना, चेल्सी, ओएल लियोन्स, ऑरलैंडो प्राइड.

**यशिन ट्रॉफी पुरुष :** एलिसन बेकर, यासीन बौनौ, लुकास शेवेलियर, थिबाउट कोर्टोइस, जियानलुइगी डोनारुम्मा, एमी मार्टिनेज, जान ओब्लाक, डेविड राया, मैट्ज़ सेल्स, यान सोमर.

**यशिन ट्रॉफी महिला :** एन-कैटरीन बर्जर, कैटा कोल, हन्ना हैम्पटन, चियामाका ननाडोजी, डैफने वैन डोम्सेलार.

**पुरुषों की कोपा ट्रॉफी :** अय्यूब बोअद्दी, पाउ कुबारसी, डिजायर डू, एस्टेवाओ, डीन हुइजसेन, माइल्स लुईस-स्केली, रोड्रिगो मोरा, जोआओ नेव्स, लामिन यमाल, केनान यिल्डिज.

महिला कोपा ट्रॉफीः मिशेल अग्येमांग, लिंडा कैसेडो, विके कप्टेन, विक्की लोपेज, क्लाउडिया मार्टिनेज ओवांडो.

## प्लेइंग 11 में मौका नहीं मिला, तो परेशान खिलाड़ी को गौतम गंभीर ने किया शांत

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम का इंग्लैंड दौरा खत्म हो चुका है. 5 मैचों की टेस्ट सीरीज में एक नई नवेली भारतीय टीम अंग्रेजों के खिलाफ उन्हीं के घर में 2-2 से सीरीज बराबर करने में कामयाब रही थी. इस लंबी सीरीज के दौरान कई बार ऐसे मौके भी आए जब टीम इंडिया के कई खिलाड़ी चोटिल भी हुए. लेकिन इसके बावजूद एक भी मैच में अभिमन्यू ईश्वरन को प्लेइंग 11 का हिस्सा नहीं बनाया गया. उन्होंने इंडिया ए के लिए खेलते हुए अच्छा प्रदर्शन किया था. लेकिन इसके बावजूद उन्हें टीम में जगह नहीं मिली.

**ईश्वरन के पिता का बड़ा बयान :** ओवल पर खेले गए आखिरी टेस्ट मैच से पहले भारतीय टीम के कुछ खिलाड़ियों को चोट लग गई थी. ऐसे में ईश्वरन को उम्मीद थी कि उन्हें ओवल में मौका मिल सकता है. टीम मैनेजमेंट प्लेइंग 11 के लिए अलग-अलग विकल्पों पर विचार कर रहा था. लेकिन ईश्वरन को फिर से निराशा हाथ लगी. उनके पिता रंगनाथन परमेश्वरन ईश्वरन ने एक इंटरव्यू में बताया कि इससे वह बहुत परेशान हो गए थे.

**बेटे को पिता ने समझाया :** रंगनाथन ने बताया कि आखिरी टेस्ट में सिलेक्शन न होने के बाद उनकी बेटे से फोन पर बात हुई. रंगनाथन ने कहा, 'मेरा बेटा दलीप ट्रॉफी की तैयारी के लिए बेंगलुरु जाएगा। वह वहां 10-12 दिन रहेगा. फिर कुछ दिनों के लिए देहरादून लौटेगा और फिर वापस बेंगलुरु जाएगा. पांचवें टेस्ट के लिए नहीं चुने जाने पर वह परेशान था। उसे उम्मीद थी कि उसे कॉल आएगा. मैंने उससे कहा, 'बेटा, तुमने अपना सपना जी लिया है.' उसने जवाब दिया, 'मैं समझता हूं. मैंने 23 साल तक अपना सपना जीया है. एक या दो मैचों में नहीं चुने जाने से वह सपना नहीं टूटेगा.' रंगनाथन ने आगे बताया, 'वह इसलिए परेशान था क्योंकि उसे चुना नहीं गया था. जब मैंने उसे फोन किया, तो उसने कहा, 'पिताजी, मुझे अभी भी जगह नहीं मिली है.' इसका मतलब है कि वह निराश था क्योंकि उसे अभी तक टीम में खेलने का मौका नहीं मिला था.

**गौतम गंभीर ने दिलाया भरोसा :** रंगनाथन ने यह भी बताया कि इंग्लैंड में सिलेक्शन न होने के बावजूद उनके बेटे को गौतम गंभीर से बात करने से प्रेरणा मिली. गौतम गंभीर ने उन्हें भारतीय टीम में मौका मिलने का भरोसा दिलाया है. उन्होंने यह भी कहा कि जब वह डेब्यू करेंगे तो उन्हें लंबा मौका मिलेगा. उन्हें सिर्फ 1-2 मैचों के आधार पर नहीं आंका जाएगा.

## ब्रीफ न्यूज

### धनबाद सांसद ढुलू महतो ने संसद में उठाए औद्योगिक विकास से जुड़े मुद्दे

**नई दिल्ली/धनबाद।** संसद के मानसून सत्र में धनबाद के सांसद ढुलू महतो ने क्षेत्र और राज्य से जुड़े तीन अहम मुद्दों—कोयला कर्मियों के कल्याण, नक्सलवाद में कमी और औद्योगिक कॉरिडोर—पर केंद्र सरकार का ध्यान आकर्षित किया. कोयला कर्मियों के हितों की बात करते हुए सांसद महतो ने सी-केयर्स 2.0 पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से सीएमपीएफओ की डिजिटल सेवाओं को सराहा. उन्होंने कहा कि इन सुविधाओं से पेंशन, प्रोविडेंट फंड और शिकायत निवारण की प्रक्रिया पारदर्शी और तेज़ हुई है. उन्होंने बताया कि धनबाद जैसे खनन क्षेत्र में डिजिटल उपायों से सुरक्षा मानकों में सुधार और अवैध खनन पर नियंत्रण संभव हुआ है. नक्सलवाद पर, सांसद ने गृहमंत्रालय के आंकड़ों के आधार पर बताया कि झारखंड में नक्सली घटनाओं में 2009 की तुलना में 92% की कमी आई है. वर्ष 2024-25 में 103 घटनाएं हुईं, जिसमें 25 नक्सली मारे गए, 276 गिरफ्तार और 32 ने आत्मसमर्पण किया. उन्होंने सड़क, संचार, शिक्षा, बैंकिंग जैसी योजनाओं के प्रभाव को सकारात्मक बताया.
धनबाद-बोकारो औद्योगिक कॉरिडोर के निर्माण की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि एकेआईसी (अमृतसर–कोलकाता औद्योगिक कॉरिडोर) के तहत झारखंड को जोड़ना बेहद जरूरी है. इसके लिए राज्य सरकार से भूमि की पुष्टि और केंद्र सरकार की त्वरित पहल की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि इससे स्थानीय युवाओं को रोजगार और क्षेत्र को औद्योगिक शक्ति केंद्र बनाने का रास्ता खुलेगा.

### विधायक प्रदीप प्रसाद ने 500 पौधे वितरित किए

**हजारीबाग।** सदर प्रखंड के नगवां में विधायक प्रदीप प्रसाद के नेतृत्व में पौधा वितरण और पेड़ लगाव अभियान का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया. इस दौरान 500 पौधे ग्रामीणों में वितरित किए गए. विधायक ने कहा कि केवल पौधे लगाना ही नहीं, उनकी देखभाल भी आवश्यक है ताकि पर्यावरण संतुलित और हरा-भरा बना रहे. इस वर्ष 1,51,000 पौधे लगाने के लक्ष्य के साथ शुरू हुए अभियान में अब तक 62,500 पौधे वितरित और रोपे जा चुके हैं. उन्होंने ग्रामीणों से पौधों की नियमित देखभाल का आग्रह किया ताकि ये बड़े होकर पर्यावरण को स्वच्छ हवा और छाया प्रदान करें. कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, समाजसेवी और ग्रामीणों ने अभियान की सराहना की. यह अभियान हजारीबाग के विभिन्न क्षेत्रों में लगातार जारी है और आने वाले दिनों में अन्य पंचायतों में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे.

### सांसद ने ओएनजीसी चेयरमैन से की मुलाकात

**हजारीबाग।** हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल ने दिल्ली में ओएनजीसी के चेयरमैन अरुण कुमार सिंह से मुलाकात कर बड़कागांव प्रखंड के 56 लंबित गैस कुओं को पुनः चालू करने का आग्रह किया. उन्होंने बताया कि बड़कागांव के अंगो, तलस्वार, बलिया, नापो, हरली, चंदोल और सांढ गाँवों में कुल 63 गैस कुएँ खोदे गए थे, जिनमें से केवल 7 से ही उत्पादन हो रहा है. 56 कुएँ बंद पड़े हैं, जो ₹ऊर्जा गंगा पाइपलाइन₹ परियोजना से जुड़े हैं, लेकिन इसका काम अभी तक शुरू नहीं हुआ है. सांसद ने चेयरमैन से इन कुओं को शीघ्र चालू करने की अपील की ताकि क्षेत्र की ऊर्जा क्षमता का उपयोग हो और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिलें.

### केंद्रीय ऊर्जा मंत्री से की मुआवजे की मांग

**हजारीबाग।** सांसद मनीष जायसवाल ने हजारीबाग के एनटीपीसी कोयला परियोजनाओं से प्रभावित विस्थापित परिवारों के लिए केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर से मुलाकात की. उन्होंने विस्थापितों को उचित मुआवजा और पुनर्वास दिलाने की मांग की. जायसवाल ने भूमि अधिग्रहण मुआवजे को 40 लाख प्रति एकड़ तक बढ़ाने और पुनर्वास राशि को 15 लाख करने का सुझाव दिया. उन्होंने 'कट-ऑफ डेट' नियम से होने वाले वंचितों की समस्या भी उठाई और कहा कि लाभार्थी वास्तविक अधिग्रहण तिथि के आधार पर तय किए जाएं. सांसद ने विस्थापित परिवारों को पूरा हक़ और सम्मान दिए जाने पर जोर देते हुए कहा कि विकास कार्यों में किसी के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए.

### जनता से लूट बर्दाश्त नहीं : विधायक अमित यादव

**जयनगर (कोडरमा)।** प्रखंड मुख्यालय सभागार में शुक्रवार को आयोजित पंचायत समिति बैठक में विधायक अमित कुमार यादव ने भ्रष्टाचार और अवैध वसूली पर कड़ी नाराजगी जताई. बैठक में दाखिल-खारिज, आवास सर्वे, बिजली-पानी आपूर्ति की अनियमितता, अतिक्रमण और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को पंचायत सदस्यों ने प्रमुखता से उठाया. विधायक ने स्पष्ट कहा कि जनता से अवैध वसूली किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं की जाएगी. अगर किसी कर्मी को वेतन नहीं मिल रहा तो वे मदद करेंगे, लेकिन लापरवाही और मनमानी बर्दाश्त नहीं की जाएगी. उन्होंने सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी. बैठक में प्रमुख अंजू देवी, उप प्रमुख राजनारायण सिंह, बीडीओ गौतम कुमार, थाना प्रभारी बब्लू कुमार सिंह समेत कई पदाधिकारी मौजूद थे.

### आईसेक्ट विश्वविद्यालय को मिला सातवां स्थान

**हजारीबाग।** आईसेक्ट विश्वविद्यालय को 'द वीक - हंसा रिसर्च बेस्ट यूनिवर्सिटीज सर्वे 2025' में पूर्वी क्षेत्र के निजी एवं डीम्ड विश्वविद्यालयों की श्रेणी में देशभर में सातवां स्थान प्राप्त हुआ है. यह सम्मान कुलपति प्रो. पी.के. नायक ने नई दिल्ली में आयोजित एजुकेशन कॉनक्लेव 2025 में ग्रहण किया. प्रो. नायक ने इसे झारखंड की शिक्षा व्यवस्था की उपलब्धि बताया. कुलसचिव डॉ. मुनीष गोविंद ने इसे संकाय, छात्रों व कर्मचारियों की सामूहिक मेहनत का परिणाम कहा. प्रो वाइस चांसलर डॉ. गौरव शुक्ला ने विश्वविद्यालय की नवाचार, इंडस्ट्री कनेक्ट और बहुविषयक शिक्षा प्रणाली को इस सफलता का आधार बताया. इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय परिसर में खुशी की लहर दौड़ गई और सभी ने जश्न मनाया.

### ग्रिज़ली विद्यालय में मनाया गया रक्षा बंधन उत्सव

**कोडरमा (तिलैया डैम)।** ग्रिज़ली विद्यालय में भाई-बहन के प्रेम और स्नेह का पर्व रक्षा बंधन हर्षोल्लास व पारंपरिक श्रद्धा के साथ मनाया गया. कार्यक्रम की शुरुआत ईश्वर की पूजा और श्वेता प्रकाश की गणेश वंदना से हुई. प्रीति जगनानी ने स्वागत भाषण दिया, जबकि कक्षा 2 की दिव्या यादव ने प्रभावशाली अंग्रेज़ी भाषण प्रस्तुत किया. सिया रानी व समूह ने मनमोहक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया. सीनियर छात्राओं ने छात्रों को तिलक कर राखी बांधी, मिठाई खिलाई और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की. पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए विद्यार्थियों ने वृक्षों को राखी बांधी. छात्रा लाहिरी ने पेड़ों के महत्व पर प्रकाश डाला और वृक्षारोपण का आह्वान किया.

### विभावि में जनजातीय दिवस समारोह सम्पन्न

**हजारीबाग।** विनोबा भावे विश्वविद्यालय के मानवविज्ञान विभाग द्वारा जनजातीय दिवस के अवसर पर आर्यभट्ट सभागार में समापन समारोह आयोजित किया गया. मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. चंद्र भूषण शर्मा ने कहा कि आदिवासी जीवन दर्शन और परंपराएं मानवता के मूल मूल्य हैं, जिनसे हमें बहुत कुछ सीखने की जरूरत है. उन्होंने जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया. कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद रंजन ने की. पेंटिंग प्रतियोगिता में अंशुश्री हेसा प्रथम रहीं, जबकि भाषण प्रतियोगिता में मैन्युअल हेंब्रम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया. पौधारोपण कार्यक्रम रोटरी क्लब हजारीबाग के सहयोग से हुआ.

### जनता दरबार में डीसी ने सुनीं जनता की फरियादें

**चतरा।** समाहरणालय परिसर में आयोजित जनता दरबार में डीसी कीर्तिश्री ने जिले के विभिन्न प्रखंडों से आए लोगों की समस्याएं सुनीं. दरबार में भूमि विवाद, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, आवास योजनाओं और अन्य विभागीय शिकायतें प्रमुख रहीं. डीसी ने सभी मामलों की गंभीरता से सुनवाई कर संबंधित अधिकारियों को त्वरित व पारदर्शी कार्रवाई का निर्देश दिया. हर मंगलवार और शुक्रवार को सुबह 11:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक जनता दरबार का आयोजन होता है, जिसमें विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहते हैं. विशेष रूप से भूमि विवादों की संख्या लगातार बनी रहती है, जिससे यह सवाल उठता है कि आखिर इन विवादों की जड़ में कौन है और गरीब कब तक फरियाद करते रहेंगे.

### डीएवी रजरप्पा में श्रावण महोत्सव की धूम

**रामगढ़।** डीएवी पब्लिक स्कूल रजरप्पा के जूनियर विंग में 6 से 8 अगस्त 2025 तक श्रावण महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया. इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में प्री-नर्सरी से कक्षा 1 तक के छात्रों ने रंगारंग प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया. छोटे बच्चों ने भगवान शिव, माता पार्वती व हनुमान की भूमिका निभाकर माहौल को भक्तिमय बना दिया.

## हजारीबाग के कोर्रा में सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति का चुनाव संपन्न

# कुमुद अध्यक्ष व मोहित बने उपाध्यक्ष

**शुभम संदेश। हजारीबाग**



कोर्रा में स्थित प्रसिद्ध सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति का चुनाव हाल ही में संपन्न हुआ. यह समिति वर्ष 1949 से लगातार धार्मिक परंपराओं और भव्य दुर्गा पूजा आयोजन के लिए क्षेत्र में पहचानी जाती है. पिछले सात दशकों से यह समिति धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का मजबूत आधार रही है. इस बार भी समिति ने अपने संचालन को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से नए सदस्यों का चुनाव किया है. चुनाव में सर्वसम्मति से कुमुद गुप्ता को अध्यक्ष पद के लिए नामित किया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर अध्यक्ष पद ग्रहण किया. अध्यक्ष बनने के बाद कुमुद गुप्ता ने समिति के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श कर नए पदाधिकारियों का चयन किया. उपाध्यक्ष के रूप में मोहित कुमार गुप्ता और मिलन मुंडा, सचिव पद पर रोहित पासवान, विवेक पासवान और शुभम गुप्ता, तथा कोषाध्यक्ष पद पर संतोष कुमार, विशाल गुप्ता और अमन गुप्ता को चुना गया. साथ ही संयोजक के रूप में चीतु गुप्ता, पप्पू टाइगर, अमित गुप्ता, पप्पन मुंडा, सचिन पासवान, सुनील गुप्ता और टिंकू गुप्ता को जिम्मेदारी सौंपी गई. पूजा प्रभारी के रूप में लल्लन गुप्ता, निक्कू पासवान, रूँनू गुप्ता, आर्यन गुप्ता और नीतीश मंडल चुने गए, जबकि मीडिया प्रभारी की भूमिका धर्म यादव, देवेन्द्र गुप्ता, राहुल गुप्ता, विनय गुप्ता और कुलदीप मंडल निभाएंगे.

समिति के व्यवस्थापक के रूप में डॉ. सुधीर कुमार, शंभू गुप्ता, जोगी गुप्ता, राजा पासवान, धीरज मुंडा, पिंकू मुंडा, छोटू मुंडा, राज गुप्ता, मंजीत गुप्ता, सत्यम श्याम, राज कमल गुप्ता, मिथुन नायक, विशु नायक, करण नायक और रंजीत राम को भी शामिल किया गया है. अध्यक्ष कुमुद गुप्ता ने अपने पदभार ग्रहण के बाद सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया और कहा कि समिति का उद्देश्य केवल दुर्गा पूजा आयोजन तक सीमित नहीं रहेगा. बल्कि समिति धार्मिक सद्भाव, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण को भी बढ़ावा देगी. उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि समिति के सभी सदस्य मिलकर कोर्रा क्षेत्र की इस ऐतिहासिक और गौरवशाली परंपरा को आने वाले वर्षों में और अधिक भव्य रूप देंगे. यह चुनाव और नया समिति गठन कोर्रा क्षेत्र में धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करेगा. इससे न केवल दुर्गा पूजा का आयोजन और बेहतर होगा, बल्कि स्थानीय समाज में एकता और भाईचारे की भावना भी मजबूत होगी. कोर्रा की पहचान बनी इस परंपरा को सदैव संरक्षित और आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता समिति ने जाहिर की है. यहाँ के लोगों ने इस चुनाव को लेकर खुशी और उत्साह व्यक्त किया है, साथ ही उम्मीद जताई है कि नई समिति अपने कर्तव्यों का समर्पण और जोश के साथ निर्वहन करेगी.

## दो श्रमिक सहकारी समितियों को मिला निबंधन प्रमाण-पत्र

# डीवीसी में मिलेगा काम का अवसर

**शुभम संदेश। कोडरमा**



कोडरमा अंचल के सहायक निबंधक, सहयोग समितियां कार्यालय द्वारा शुक्रवार को जिले की दो श्रमिक सहकारी समितियों की निबंधन प्रक्रिया पूरी कर उन्हें विधिवत प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया. यह प्रमाण-पत्र उपायुक्त श्री ऋतुराज के द्वारा दोनों समितियों को सौंपा गया. इस अवसर पर उपायुक्त ने समितियों के सदस्यों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की. उपायुक्त ने जानकारी दी कि इन श्रमिक सहकारी समितियों को दामोदर वैली कारपोरेशन (डीवीसी) द्वारा संचालित सिविल व अन्य निर्माण कार्यों में प्राथमिकता दी जाएगी. इससे स्थानीय श्रमिकों और कारीगरों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य करने का बेहतर अवसर मिलेगा. साथ ही, यह कदम जिले में रोजगार सृजन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगा. उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय युवाओं को उनके कौशल के अनुसार रोजगार देने में सहकारी समितियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं. इससे न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिलेगी, बल्कि स्थानीय संसाधनों का सही उपयोग भी सुनिश्चित हो सकेगा. इस मौके पर संबंधित विभागों के अधिकारी, सहकारी समितियों के प्रतिनिधि और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे. सभी ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे जिले के विकास की दिशा में एक सकारात्मक कदम बताया. प्रशासन की यह पहल स्थानीय स्तर पर श्रमिकों को सशक्त बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकती है.

### डोमचांच में अंचल-सह-थाना दिवस का आयोजन

**कोडरमा।** उपायुक्त के निर्देशानुसार जिले में भूमि संबंधी विवादों के त्वरित एवं समन्वित समाधान के उद्देश्य से ₹अंचल–सह–थाना दिवस₹ का आयोजन किया गया. यह विशेष जन–सुनवाई कार्यक्रम डोमचांच और मरकच्चो अंचलों में आयोजित हुआ, जिसमें अंचलाधिकारी एवं थाना प्रभारी स्तर के पदाधिकारी संयुक्त रूप से उपस्थित रहे और आम जनता की शिकायतों की सुनवाई कर निष्पादन किया. मरकच्चो अंचल में आयोजित अंचल–सह–थाना दिवस के दौरान कुल 13 भू–विवाद संबंधित आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 06 मामलों का तत्काल निष्पादन किया गया, जबकि शेष 07 आवेदन प्रक्रियाधीन हैं जिन पर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है. वहीं, डोमचांच अंचल के तहत आयोजित कार्यक्रम में कुल 10 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 08 का समाधान कर दिया गया, जबकि 02 आवेदन अभी प्रक्रियाधीन हैं. इस पहल का उद्देश्य भूमि विवादों का त्वरित समाधान कर नागरिकों को न्याय दिलाना है. जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि इस तरह के कार्यक्रम भविष्य में भी आयोजित किए जाएंगे, ताकि आम नागरिकों को समयबद्ध राहत मिल सके. इस पहल से आमजन में प्रशासन के प्रति विश्वास भी बढ़ा है और विवादों के समाधान में पारदर्शिता सुनिश्चित हो रही है.

### रजरप्पाः सरस्वती विद्या मंदिर में मेहंदी लगाओ प्रतियोगिता का आयोजन

**रामगढ़ (रजरप्पा)।** सरस्वती विद्या मंदिर, रजरप्पा कोयलांचल में रक्षाबंधन के पूर्व कन्या भारती के तत्वावधान में ₹मेहंदी लगाओ, राखी बनाओ₹ प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया. यह कार्यक्रम बालिका व्यक्तित्व विकास के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं की बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया. मेहंदी प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपने हाथों पर पारंपरिक एवं आधुनिक डिजाइनों की सुंदर कलाकृतियाँ रचीं. वहीं, राखी निर्माण प्रतियोगिता में बहनों ने रंग-बिरंगे धागों, मोतियों एवं अन्य सजावटी सामग्रियों से रक्षासूत्रों का सुंदर निर्माण कर भाई-बहन के पावन प्रेम को सजीव किया. कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में भारतीय संस्कृति, परंपरा और त्योहारों के प्रति जागरूकता एवं आत्मीयता को विकसित करना था. विद्यालय के प्राचार्य उमेश प्रसाद ने प्रतिभागियों की रचनात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में सृजनात्मकता, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं. उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं. प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को मूल्यांकन के आधार पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा. कार्यक्रम के सफल संचालन में कन्या भारती प्रमुख डॉ. गायत्री कुमारी सहित ललिता गिरि, ममता कुमारी, पूनम सिंह, श्वेता पंडा, ज्योति कुमारी एवं समस्त विद्यालय परिवार का सराहनीय योगदान रहा.

### सड़क पर धान रोपाई कर ग्रामीणों ने जताया विरोध

**चतरा।** लावालौंग प्रखंड के लावालौंग-पांकी मुख्य सड़क की बदहाल स्थिति को लेकर ग्रामीणों का गुस्सा अब फूट पड़ा है. वर्षों से इस सड़क की मरम्मती नहीं होने और लगातार बढ़ती कीचड़ व जर्जरता से तंग आकर शुक्रवार को सैकड़ों ग्रामीणों ने सड़क पर ही धान की रोपाई कर अनोखे ढंग से विरोध दर्ज कराया. कर्बला के समीप कीचड़ में तब्दील सड़क पर ग्रामीणों ने धरना देकर वन विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की. ग्रामीणों का कहना था कि वन विभाग की लापरवाही और अड़चनों की वजह से क्षेत्र के कई विकास कार्य वर्षों से रुके हुए हैं. आक्रोशित ग्रामीण जागेश्वर महतो और सुबोध कुमार ने कहा कि यदि वन विभाग को लगता है कि लावालौंग जंगलों में अब भी जंगली जानवर बचे हैं तो सर्वे कराकर इलाके को पूरी तरह से पर्यटन क्षेत्र घोषित किया जाए. लेकिन यदि ऐसा कुछ नहीं है तो विकास कार्यों में अड़चन डालना बंद किया जाए. रिमी मुखिया के पुत्र विकास कुमार ने आरोप लगाया कि मोरम की जगह मिट्टी डालकर सड़क को और अधिक खराब कर दिया गया है.

### सीमित संसाधनों के बीच शिवम ने पायी सफलता

**चतरा।** टंडवा प्रखंड के शिवम कुमार ने सीमित संसाधनों के बावजूद कड़ी मेहनत और लगन से एक मिसाल कायम की है. उनका चयन उड़ीसा के हीराकुंड स्थित आदित्य कैप्टिव पावर प्लांट में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर हुआ है. इस सफलता से न केवल उनके परिवार में बल्कि पूरे गांव में खुशी का माहौल है. शिवम की प्रारंभिक शिक्षा हजारीबाग स्थित विवेकानंद स्कूल से हुई. इसके बाद उन्होंने बीआईटी मेसरा, रांची से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की. पढ़ाई के दौरान उन्होंने एनटीपीसी टंडवा में इंटर्नशिप कर व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया, जिसका लाभ उन्हें नौकरी पाने में मिला. शिवम की सफलता पर स्थानीय सांसद, विधायक, पूर्व विधायक किशुन दास, भाजपा नेता ईश्वर दयाल पांडेय, झामुमो जिला अध्यक्ष निलेश ज्ञासेन, सहायक अध्यापक संघ के प्रखंड अध्यक्ष सुमन भारतीय सहित कई गणमान्य लोगों ने उन्हें बधाई दी है. सभी ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है. शिवम की यह उपलब्धि क्षेत्र के अन्य युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है.

## चितरपुर | प्रखंड संसाधन केंद्र में बच्चों के लिए लगा नेत्र जांच शिविर

# 5 से 14 वर्ष के बच्चों की आंखों की हुई जांच

**शुभम संदेश। रामगढ़**



राष्ट्रीय अंधापन नियंत्रण कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को चितरपुर प्रखंड संसाधन केंद्र में एक दिवसीय नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया. इस शिविर में 5 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सैकड़ों स्कूली बच्चों की आंखों की जांच की गई. शिविर के आयोजन से एक माह पूर्व प्रखंड के सभी प्राथमिक व मध्य विद्यालयों के शिक्षकों को प्रारंभिक नेत्र परीक्षण का प्रशिक्षण दिया गया था. इन प्रशिक्षित शिक्षकों ने विद्यालय स्तर पर बच्चों की स्क्रीनिंग की और नेत्र दोष से ग्रसित विद्यार्थियों की पहचान की. विशेषज्ञों का मानना है कि दृष्टि दोष बच्चों की पढ़ाई पर प्रतिकूल असर डालता है, जिससे वे अपनी पूरी क्षमता से सीख नहीं पाते. शिविर का उद्देश्य ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें समय रहते उचित उपचार उपलब्ध कराना था. चिन्हित बच्चों को आगे चलकर स्वास्थ्य विभाग की ओर से निःशुल्क चश्मे भी प्रदान किए जाएंगे, ताकि वे सामान्य बच्चों की तरह शिक्षा प्राप्त कर सकें. शिविर में डॉ. कंचन अग्रवाल द्वारा बच्चों की सूक्ष्म जांच की गई. शिविर के सफल संचालन में प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी मो. इंशा अल्लाह की प्रमुख भूमिका रही. इस अवसर पर बुनियादी विद्यालय चितरपुर, पीएम श्री उच्च विद्यालय रजरप्पा, उच्च विद्यालय सूकरीगढ़ा, लारी, मारंगमरचा, पटेलनगर, पत्थलगढ़वा, चौधरी टोला, बोरोबिंग व बेदिया टोला सहित कई स्कूलों के छात्र उपस्थित थे. कार्यक्रम में पॉवेल कुमार, राजेंद्र कुमार, नसीमा प्रवीन, सुनीता कुमारी, सुनील प्रसाद, प्रिया कुमारी, मनोज महतो समेत कई शिक्षक व स्थानीय लोग मौजूद रहे.

### डीएवी रजरप्पा में प्रा चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर

**रामगढ़।** डीएवी पब्लिक स्कूल, सीसीएल रजरप्पा प्रोजेक्ट में शुक्रवार को प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. यह कार्यक्रम कार्यालय प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, रामगढ़ के सौजन्य से आयोजित हुआ, जिसमें 100 से अधिक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने सक्रिय भागीदारी की. कार्यक्रम का शुभारंभ डीएवी झारखंड जोन–डी के एआरओ सह प्राचार्य डॉ. एस.के. शर्मा ने किया. प्रशिक्षण हेतु 9 सदस्यीय चिकित्सकीय दल विद्यालय पहुंचा, जिसमें डॉ. मिहिर कुमार झा, सलोमी कुजूर, पूनम कुमारी, बालो लकड़ा, शबनम खातून, लक्ष्मी कुमारी, अरविंद कुमार, मिथिला देवी एवं सुनीता देवी शामिल थीं.

## एक नजर

### धनबाद स्टेशन पर चला मजिस्ट्रेट टिकट चेकिंग अभियान

**धनबाद।** धनबाद मंडल में बड़े पैमाना पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है. इसी क्रम में सुनियोजित कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को सुबह 08:00 बजे से 11:00 बजे तक धनबाद रेलवे मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में धनबाद स्टेशन पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया. इस जांच अभियान के परिणामस्वरूप 57 यात्रियों को पकड़ा गया जिसमें बिना टिकट यात्रा कर रहे यात्री, बिना उचित प्राधिकार के यात्रा करने वाले यात्री, बिना बुक किए गए सामान के साथ यात्रा कर रहे यात्रीगण शामिल थे. इस दौरान उनसे 16,220 रूपए जुर्माने के रूप में राशि वसूल की गई तथा पकड़े गए यात्रियों को उचित टिकट के साथ यात्रा करने की कड़ी हिदायत दी गई. धनबाद मंडल द्वारा निरंतर टिकट जांच किया जा रहा है तथा भविष्य में भी यह जारी रहेगा. टिकट जांच अभियान के दौरान स्टेशनों के अनारक्षित टिकट काउंटर पर यात्रियों की काफी भीड़ देखी गई.

### धनबाद विधायक ने किया सड़कों के निर्माण कार्य का शिलान्यास

**धनबाद।** शुक्रवार को धनबाद विधायक राज सिन्हा ने अरलगढ़िया पंचायत अंतर्गत बहुप्रतीक्षित सड़क निर्माण कार्य का विधिवत शिलान्यास किया. यह सड़कें ए टाइप सब स्टेशन से शिव शंकर नगर तालाब होते हुए प्रेम नगर कॉलोनी और पुटकी भागा मुख्य सड़क तक तथा शिव शंकर नगर तालाब से मनबोध सिंह के आवास होते हुए राजपूत बस्ती तक बनाई जाएंगी. इस सड़क निर्माण परियोजना से स्थानीय निवासियों को बेहतर यातायात सुविधा मिलेगी. बरसात एवं अन्य मौसम में होने वाली दिक्कतों से भी अब राहत मिलेगी. लंबे समय से क्षेत्रवासी इस सड़क निर्माण की मांग कर रहे थे, जो अब पूरी होने जा रही है. इससे आम जनता में हर्ष और उत्साह का माहौल है. शिलान्यास कार्यक्रम के अवसर पर विधायक श्री राज सिन्हा ने कहा कि जनता की सेवा और क्षेत्र का समग्र विकास ही हमारा संकल्प है. सड़क, बिजली, पानी और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं हर व्यक्ति तक पहुंचाना हमारी प्राथमिकता है. आने वाले समय में और भी विकास योजनाएं शुरू की जाएंगी. मौके पर भाजपा प्रखंड अध्यक्ष मनोज सिंह, रवि सिन्हा, विकास मिश्रा, राजू सिंह, सदानंद बर्नवाल, रूपेश पासवान, विकास चौधरी, शिवनंदन पासवान, राहुल सिंह सहित कई सामाजिक कार्यकर्ता और गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

### कोल इंडिया ही भुगतान करे आउटसोर्सिंग मजदूरों का वेतनः सिद्धार्थ गौतम

**निरसा बाजार।** जनता मजदूर संघ के महामंत्री सिद्धार्थ गौतम ने शुक्रवार को खुदिया कोलियरी में आयोजित मिलन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आउटसोर्सिंग कंपनियों द्वारा मजदूरों को हाई पावर कमेटी का वेतनमान नहीं दिया जा रहा है, जबकि यूनियन लगातार कोल इंडिया प्रबंधन के साथ बैठक कर मजदूरों के हक में कानून बनाने की दिशा में प्रयासरत है.
उन्होंने मांग की कि जिस प्रकार कोलियरी प्रबंधन अपने मजदूरों को वेतन का भुगतान करता है, उसी प्रकार आउटसोर्सिंग कंपनियों में कार्यरत मजदूरों को भी उपस्थिति के आधार पर उचित वेतन दिया जाए. इससे सभी श्रमिकों को हाई पावर कमेटी के अनुसार वेतनमान मिल सकेगा. इस अवसर पर यूनियन में शामिल हुए लगभग 100 मजदूरों का क्षेत्रीय सचिव मनोज सिंह के नेतृत्व में स्वागत किया गया. मनोज सिंह ने कहा कि जनता मजदूर संघ पर मजदूरों का जो विश्वास बढ़ा है, उस पर संगठन पूरी तरह खरा उतरेगा और प्रबंधन की मनमानी के खिलाफ हर लड़ाई लड़ी जाएगी. पूर्व विधायक एवं यूनियन की केंद्रीय उपाध्यक्ष अपर्णा सेनगुप्ता ने कहा कि जनता मजदूर संघ मजदूरों के हितों के लिए कभी समझौता नहीं करती, इसलिए मजदूर आज तेजी से संगठन से जुड़ रहे हैं. उन्होंने अन्य यूनियनों पर मजदूरों को गुमराह करने का आरोप भी लगाया. मिलन समारोह को कमल बनर्जी, नंदलाल चौहान, कुंजल चौहान, पहलाद चौहान, राम लखन चौहान, अमरजीत चौहान, अभिषेक कुमार, अनुराग कुमार, कार्तिक भुइंया, पंकज महतो, हरिओम महतो, दयामय उपाध्याय, धर्मेंद्र यादव, बजरंग सिंह और रामपाल ने भी संबोधित किया. कार्यक्रम में मजदूरों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही.

### मदनपुर गोलीकांडः फरार आरोपियों के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

**निरसा।** एमपीएल ओपी अंतर्गत मदनपुर गांव में 26 मई को हुए गोलीकांड के फरार आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने शिकंजा कसना शुरू कर दिया है. शुक्रवार को एमपीएल ओपी प्रभारी सुमन कुमारी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने फरार आरोपियों शेख इसरायल, शेख अब्दुल्ला और शेख शहीबुल के घरों पर इश्तेहार चिपकाया. मौके पर बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी मौजूद थे. पुलिस की ओर से जारी नोटिस में कहा गया है कि आरोपित तय समयसीमा के भीतर अगर आत्मसमर्पण नहीं करते हैं, तो उनकी संपत्ति की कुर्की की प्रक्रिया शुरू की जाएगी. प्राप्त जानकारी के अनुसार, इस गोलीकांड में शेख इस्माइल, शेख मोनिबुल, मनीरा बीबी समेत एक अन्य को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है. अब पुलिस की नजर बाकी फरार चल रहे आरोपियों पर है, जिनकी गिरफ्तारी के लिए यह इश्तेहार जारी किया गया है.

### धकोकसं की सदस्यता शुल्क कटौती निरस्तीकरण के खिलाफ जोरदार विरोध

**तेतुलमारी।** एकेडब्ल्यूएमसी के खान प्रबंधक द्वारा धकोकसं के यूनियन सदस्यता शुल्क की कटौती को अन्य संगठनों के दबाव में निरस्त कर दिए जाने पर शुक्रवार को संगठन के सैकड़ों पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने कार्यालय परिसर में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया. संघ के केंद्रीय पदाधिकारियों, शाखा एवं क्षेत्रीय प्रतिनिधियों ने प्रबंधन के इस फैसले को गैरलोकतांत्रिक और असंवैधानिक बताया. विरोध के दौरान प्रबंधक बैकफुट पर आ गए और स्वीकार किया कि उन्होंने किसी संगठन के कहने पर सदस्यता पत्र निरस्त करने का निर्णय लिया, जो कि नियमों के खिलाफ है. इसके बाद उन्होंने तत्काल निरस्तीकरण आदेश पर रोक लगाते हुए नया पत्र जारी किया, जिससे कर्मचारियों में राहत की भावना देखी गई. कार्यकर्ताओं ने कहा कि कुछ अन्य संगठन कर्मचारियों को भ्रमित करने और धकोकसं की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया जा रहा है. प्रमुख उपस्थित नेताओं में महासंघ के मंत्री के.के. सिंह, झारखंड प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुशील सिंह, केंद्रीय उपाध्यक्ष मंतोष तिवारी, संयुक्त महामंत्री नवनीत कुमार सिंह, मंत्री प्रसांत नियोगी, कोषाध्यक्ष राघवेंद्र नारायण पांडेय, क्षेत्रीय अध्यक्ष रामजीत महतो, सचिव शिवशंकर गुप्ता, संगठन मंत्री दिलीप सिन्हा समेत कई वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल थे.

## पेज तीन का शेषांश

### नीरज सिंह हत्याकांड में पूर्व विधायक संजीव ....

इसके बाद चिरकुंडा थाना प्रभारी निरंजन कुमार तिवारी को जांचकर्ता नियुक्त किया गया. इस प्रकार, एक साथ दो अनुसंधानकर्ता जांच कर रहे थे. फिर, तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास के आदेश पर एसआईटी का गठन किया गया, जिसकी अगुवाई एडीजी सीआईडी अजय कुमार सिंह कर रहे थे. इन सभी के बावजूद, सीआईडी के किसी भी अधिकारी को चार्जशीट का गवाह नहीं बनाया गया. कई महत्वपूर्ण तथ्यों को अदालत से छुपा लिया गया, जबकि सीआईडी ने संदिग्धों के स्केच भी जारी किए थे. आरोप पत्र में संजीव सिंह को घटनास्थल पर नहीं, बल्कि षड्यंत्रकारी के रूप में पेश किया गया. यह सवाल उठता है कि पुलिस ने आरोप पत्र में अभियुक्तों के स्वीकारोक्ति बयान को किस आधार पर शामिल किया, जबकि किसी गवाह ने न तो पुलिस के सामने और न ही अदालत में ऐसा कोई बयान दिया था, जैसा कि अनुसंधानकर्ताओं ने चार्जशीट में लिखा.

### धनबाद जिले के 130 शराब दुकानों के लिए...

**लॉटरी और शुल्क विवरण :** ई-लॉटरी का आयोजन 22 अगस्त 2025 को सुबह 11:00 बजे से कंप्यूटर रैंडमाइजेशन के ज़रिए किया जाएगा. इसका सीधा प्रसारण जिला समाहरणालय और विभागीय वेबसाइट पर देखा जा सकेगा. नगर निगम क्षेत्र की दुकानों के लिए आवेदन शुल्क 25,000 रुपए और ग्रामीण इलाकों के लिए 15,000 रुपए निर्धारित है. देसी शराब की दुकानों के लिए यह शुल्क 12,000 रुपए होगा. आवेदन के साथ दो प्रतिशत ईएमडी राशि का भुगतान भी करना होगा. यह राशि केवल तभी वापस होगी जब लॉटरी नहीं निकलेगी. दुकान आवंटित होने पर, आवेदक को तीन प्रतिशत अतिरिक्त ईएमडी और सात प्रतिशत उत्पाद शुल्क का भुगतान करना होगा.

**हेल्प डेस्क की सुविधा :** आवेदन प्रक्रिया में सहायता के लिए जिला स्तर पर एक हेल्प डेस्क स्थापित किया गया है. यह सुबह 10:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक उपलब्ध रहेगा. संपर्क के लिए मोबाइल नंबर 9431561988 (कॉल) और 9123286432 (व्हाट्सएप) पर संपर्क किया जा सकता है.

## न्यूज अपडेट

### नेपाल पुलिस ने किया किडनी तस्कर के अंतर्देशीय गिरोह का भंडाफोड़

**काठमांडू ।** नेपाली युवकों को भारत के नौकरी का झांसा देकर ले जाने तथा उनकी किडनी निकल कर बेचने वाले एक गिरोह का भंडाफोड़ किया किया है. इस मामले में पुलिस ने कुछ लोगों की गिरफ्तारी भी की है. प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि इस संगठित और सीमा पार मानव अंग तस्करी अपराध में नेपाल के तीन व्यक्तियों की संलिप्तता थी जो कि काभ्रेपलाञ्चोक और नुवाकोट जिले के रहने वाला बताया गया है. नेपाल पुलिस के एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग ब्यूरो के अनुसार, गिरफ्तार किए गए संदिग्धों में 35 वर्षीय राजकुमार परियार, 24 वर्षीय समीर नेपाली और 47 वर्षीय राकेश नेपाली शामिल हैं.

### यूपी में चलती रोडवेज बस पर गिरा पेड़, पांच की मौत व चार गंभीर

**बाराबंकी ।** उत्तर प्रदेश के जनपद बाराबंकी में शुक्रवार को चलती राडेवज बस पर एक पेड़ गिर गया. हादसे में बस चालक समेत पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य लोग गंभीर रूप से घायल है. घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है. घटना पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी शोक संवेदना व्यक्त की हैं. प्रारंभिक जानकारी के अनुसार परिवहन विभाग की एक बस सवारियों को लेकर बाराबंकी से हैदरगढ़ जा रही थी. जैदपुर थाना क्षेत्र के ग्राम हरख स्थित राजा बाजार के पास बस पहुंचते ही एक विशालकाय पेड़ अचानक बस पर गिर गया. हादसा इतना जबरदस्त था कि चीख-पुकार मच गया. स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी और राहत बचाव कार्य शुरू कर दिया. इस दौरान जैदपुर और सतरिख थाना की पुलिस पहुंच गई.

### कोलंबिया के पूर्व राष्ट्रपति उरीबे 12 साल तक रहेंगे नजरबंद

**बोगोटा (कोलंबिया) ।** देश के पूर्व राष्ट्रपति अल्वारो उरीबे को शुक्रवार को धोखाधड़ी और गवाहों को रिश्वत के केस में 12 साल तक नजरबंद रखने की सजा सुनाई गई. उरीबे ने खुद को निर्दोष बताया है. बचाव पक्ष के वकील ने बोगोटा के 44वें आपराधिक न्यायालय की न्यायाधीश सैंड्रा हेरेडिया के फैसले के खिलाफ अपील दायर करने की घोषणा की है. सीएनएन चैनल की खबर के अनुसार, 73 वर्षीय उरीबे को न्यायाधीश सैंड्रा हेरेडिया ने चार दिन पहले इस केस में दोषी ठहराते हुए एक अभियोजक को कथित तौर पर रिश्वत देने के एक अन्य आरोप से बरी कर दिया था. उरीबे 2002 से 2010 तक कोलंबिया के राष्ट्रपति रहे हैं. वह देश के पहले ऐसे पूर्व राष्ट्रपति हैं जिन्हें आपराधिक रूप से दोषी ठहराया गया है.

### दिल्ली एयरपोर्ट से 40 महिलाओं को डिपोर्ट करके वापस भेजा गया

**काठमांडू ।** नई दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 40 नेपाली महिलाओं के एक समूह को उस समय डिपोर्ट किया गया, जब वो बिना उचित अनुमति यात्रा वीजा पर विभिन्न खाड़ी देशों में रोजगार के लिए जाने वाली थी. इन महिलाओं के पास विदेश में नौकरी के लिए नेपाली दूतावास के नाम का फर्जी अनिवार्य अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मिला है, इसलिए इन्हें नई दिल्ली में नेपाली दूतावास के समन्वय से हिरासत में ले लिया गया. नेपाली दूतावास के उपनियोग प्रमुख डॉ. सुरेन्द्र थापा ने बताया कि सामान्य पूछताछ के बाद इन सभी महिलाओं को सड़क मार्ग से वापस नेपाल भेजने की तैयारी की जा रही है.

### नेतन्याहू की गाजा में पूर्ण कब्जे की योजना के विरोध में इजराइल में प्रदर्शन

**तेल अवीव ।** इजराइल में सुरक्षा मंत्रिमंडल की कई घंटे तक चली बैठक के दौरान देशभर में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए . सुरक्षा मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के गाजा पर पूर्ण कब्जे के प्रस्ताव को अपनी मंजूरी दी है. यह बैठक देररात खत्म हुई. शुक्रवार सुबह प्रधानमंत्री कार्यालय ने जानकारी दी कि बैठक में गाजा पर पूर्ण कब्जे को मंजूरी दी गई. सीएनएन चैनल के अनुसार, गाजा में हमास की कैद में रह रहे 50 बंधकों में से कुछ के परिवारों ने गुरुवार को विरोध प्रदर्शन कर सरकार से इस योजना को वापस लेने की गुहार लगाई. बंधक और लापता परिवार मंच ने जारी विज्ञप्ति में कहा, गाजा पर पूर्ण कब्जे का फैसला बंधकों को बलिदान करने जैसा है. फैसला लेते समय हमारी आंखों में झांकते.

### राष्ट्रपति मादुरो की गिरफ्तारी पर अमेरिका ने इनाम घोषित किया

**वॉशिंगटन ।** अमेरिका ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी पर इनाम की राशि को दोगुना करते हुए इसे 50 मिलियन डॉलर कर दिया है. मादुरो की गिरफ्तारी पर इनाम की यह राशि, अमेरिका की तरफ से आतंकी संगठन अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन को पकड़ने के लिए घोषित की गई इनाम की राशि से दोगुनी है. अमेरिका की अटॉर्नी जनरल पैम बॉन्डी ने गुरुवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स वीडियो जारी कर इसकी जानकारी देते हुए कहा है कि अमेरिका ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति की गिरफ्तारी में मदद करने वाले को 50 मिलियन डॉलर का इनाम देने की घोषणा की है. वीडिया संदेश में पैम बॉन्डी ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप की अगुवाई में मादुरो बच नहीं पाएंगे.

# धराली आपदा : चौथे दिन 80 लोगों को आईटीबीपी मातली हेलीपैड पहुंचाया गया

एजेंसी । उत्तरकाशी

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद के धराली आपदा के चौथे दिन शुक्रवार सुबह कुल 80 लोगों को प्रभावित क्षेत्रों से आईटीबीपी मातली हेलीपैड पर पहुंचाया गया. जहां से सभी लोगों को उनके गंतव्य तक सुविधानुसार भेजा जा रहा है. मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ग्राउंड जीरो पर राहत और बचाव दलों के साथ मौजूद हैं. उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से बताया गया कि शुक्रवार सुबह से यूकाडा के हेलीकॉप्टर फंसे हुए लोगों को निकालने के अलावा उपकरणों और खाद्य सामग्री को प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचाने में जुटे हैं. सुबह साढ़े नौ बजे यूकाडा के 39 हेलीकॉप्टरों की सार्टी हुई, जिसमें 33 लोगों को मातली से हर्षिल पहुंचाया गया, जिसमें 03 स्नाइफर डॉग्स और खाद्य सामग्री भेजी गई.

वहीं, हर्षिल से कुल 67 लोगों को मातली लाया गया. मातली से नेलांग खाद्य सामग्री भेजी गई है. एसडीआरएफ की ओर से उत्तरकाशी जनपद के हर्षिल एवं धराली आपदा क्षेत्र की ड्रोन विशेषज्ञ टीम ने हवाई निरीक्षण किया. इसके अतिरिक्त धराली के आपदा प्रभावित क्षेत्र का भी ड्रोन से हवाई सर्वेक्षण किया गया. यह सर्वेक्षण उन दुर्गम क्षेत्रों में किया गया जहां भूस्खलन व मलबा आने के कारण जमीनी पहुंच अत्यंत कठिन है. प्रभावित क्षेत्र में किसी व्यक्ति के फंसे होने अथवा लापता व्यक्तियों की मौजूदगी की संभावना के दृष्टिगत एसडीआरएफ टीम ड्रोन कैमरों की सहायता से क्षेत्र की सर्चिंग की.

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ग्राउंड जीरो पर राहत और बचाव दलों के साथ मौजूद हैं. उन्होंने राहत एवं बचाव कार्य को लेकर आज डीजी आईटीबीपी, डीजी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, भारत एवं डीजीपी उत्तराखंड पुलिस के साथ उच्च स्तरीय बैठक की. इस दौरान रेस्क्यू अभियान की प्रगति, ज़मीनी चुनौतियों और आपसी समन्वय को और मज़बूत बनाने पर चर्चा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए. मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री रमेश कुमार सुधांशु, सचिव गृह शैलेश बगौली राज्य आपातकालीन परिचालन केन्द्र में राहत एवं बचाव कार्य की निगरानी और समन्वय कर रहे हैं.

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रशासन आनंद स्वरूप, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रियान्वयन डीआईजी राजकुमार नेगी के साथ उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के विभिन्न विशेषज्ञ उपस्थित हैं. सचिव, नागरिक उड्डयन सचिन कुर्वे की ओर से सहस्त्रधसारा हैलीपैड से हेली आपरेशन के लिए यूकाडा और एयरफोर्स से समन्वय के साथ ही हेली आपरेशंस में आने वाली समस्याओं का समाधान किया जा रहा है.

## हिमाचल के चम्बा में खाई में गिरी कार, 6 की मौत, मृतकों में एक ही परिवार के चार सदस्य

एजेंसी । शिमला

हिमाचल प्रदेश के चंबा जिला के भंजराडू शहवा-भड़कवास मार्ग पर बीती देर रात एक कार गहरी खाई में गिरने से एक ही परिवार के चार सदस्यों सहित कुल छह लोगों की मौके पर ही मौत हो गई. हादसा इतना भयंकर था कि कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार किसी को भी बचाया नहीं जा सका. जानकारी के अनुसार यह कार चंबा जिला मुख्यालय से लौट रही थी. देर रात पधरी के पास पहुंचते ही चालक का वाहन पर नियंत्रण खो गया और कार अनियंत्रित होकर गहरी खाई में जा गिरी. हादसे में पति-पत्नी, उनके दो बच्चे और दो अन्य लोगों की मौके पर ही मौत हो गई. मृतकों की पहचान राजेश कुमार (40) पुत्र नरेन सिंह, उनकी पत्नी हंसो (36), बेटी आरती (17), बेटा दीपक (15), राकेश कुमार (44) पुत्र हरि सिंह और हेम पाल (37) पुत्र इंदर सिंह के रूप में हुई है. इनमें राजेश कुमार का परिवार गांव बुलवास, डाकघर जुंगरा का निवासी था, जबकि हेमपाल गांव सलांचा, डाकघर भंजराडू के रहने वाले थे. पुलिस दल ने मौके पर पहुंच कर स्थानीय लोगों की मदद से राहत व बचाव कार्य शुरू किया. शवों को खाई से निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा गया. चम्बा पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि मामला दर्ज कर हादसे के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है. प्रारंभिक जांच में यह आशंका जताई जा रही है कि अंधेरा होने के कारण चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख पाया. हादसे की खबर मिलते ही पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई. मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने इस हादसे पर गहरा दुख जताया है. हिमाचल प्रदेश में मॉनसून ने 20 जून को दस्तक दी थी. तब से प्रदेश में सड़क हादसों में 100 लोगों की जान गई है.

### पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में बम विस्फोट, चार की मौत

**इस्लामाबाद।** पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के दक्षिण वजीरिस्तान कबायली जिले के एक व्यस्त बाजार में गुरुवार को एक पुलिस वाहन पर बम विस्फोट किया गया, जिसमें कम से कम चार नागरिकों की मौत हो गई और दो पुलिसकर्मियों सहित 14 अन्य घायल हो गए. अभी तक किसी ने भी बम विस्फोट की जिम्मेदारी नहीं ली है. द एक्सप्रेस ट्रिब्यून अखबार की खबर के अनुसार पुलिस ने बताया कि बम विस्फोट में पुलिस वाहन आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुआ है.

मृतकों में राहगीर और दुकानदार हैं. यह विस्फोट वाना बाजार में मुख्य टैक्सी स्टैंड के पास भीड़भाड़ वाले समय में हुआ. विस्फोट होते ही बाजार में अफरा-तफरी मच गई. प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि पुलिस वाहन के टैक्सी स्टैंड के पास रुकने के कुछ ही देर बाद बम विस्फोट हुआ. इससे कई दुकानों के शीशे टूट गए और भगदड़ मच गई. घायलों को जिला मुख्यालय अस्पताल पहुंचाया गया. अस्पताल के चिकित्सकों ने पुष्टि की कि चार नागरिकों की मौत हो गई, जबकि दो घायलों की हालत भी गंभीर है. घायलों में दो पुलिसकर्मी भी शामिल हैं. वाना के डीएसपी शकीरुल्लाह ने बताया कि यह विस्फोट इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) से किया गया. दक्षिण वजीरिस्तान लोअर के उपायुक्त ने घटना की गहन जांच के आदेश दिए हैं. हालांकि, पूर्व में ऐसे हमले प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) ने किए हैं, लेकिन अधिकारियों का दावा है कि टीटीपी सीमा पार अफगानिस्तान में अपने सुरक्षित ठिकानों से पाकिस्तान में आतंकी गतिविधियों को अंजाम दे रहा है.

### पुतिन-ट्रंप के बीच जल्द होगी बैठक यूक्रेन युद्ध का निकलेगा समाधान

**मॉस्को ।** रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच जल्द ही आमने-सामने की बैठक के लिए दोनों देश सहमत हो गए हैं. पुतिन ने संयुक्त अरब अमीरात में इस शिखर सम्मेलन के आयोजन का संकेत दिया है. 2021 के बाद राष्ट्रपति पुतिन के साथ किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की आमने-सामने यह पहली बैठक होगी जब पुतिन ने यूक्रेन सीमा के पास सैन्य जमावड़े को लेकर जिनेवा में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन से मुलाकात की थी. दी मॉस्को टाइम्स के मुताबिक क्रेमलिन के अधिकारियों ने गुरुवार को घोषणा करते हुए कहा है कि व्लादिमीर पुतिन और डोनाल्ड ट्रंप के बीच आने वाले दिनों में एक बैठक पर सहमति बन गई है. क्रेमलिन के विदेश नीति सलाहकार यूरी उशाकोव ने रूसी सरकारी मीडिया को बताया कि अमेरिकी पक्ष के सुझाव पर आने वाले दिनों में एक द्विपक्षीय उच्च-स्तरीय बैठक आयोजित करने के लिए प्रारंभिक सहमति बनी है. राष्ट्रपति पुतिन ने संवाददाताओं के सवालों का जवाब देते हुए संकेत दिया कि ट्रंप के साथ यह शिखर सम्मेलन संयुक्त अरब अमीरात में हो सकता है. हालांकि पुतिन ने उनके यूक्रेनी समकक्ष के साथ बैठक की संभावनाओं को लेकर पूछे गए सवाल को दूर की बात कहते हुए टाल दिया. गौरतलब है कि पुतिन और ट्रंप के बीच बैठक को लेकर सहमति की खबर तब सामने आई है जब अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ ने हाल ही में मास्को में पुतिन से मुलाकात की है. रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त कराने की कोशिशों के रूप में पुतिन-ट्रंप की बातचीत अहम साबित हो सकती है. खास बात यह है कि ट्रंप ने 8 अगस्त तक रूस को शांति वार्ता की मोहलत दी है जिसके लिए राजी नहीं होने पर रूस पर भारी-भरकम टैरिफ की धमकी दी गई है.

### पश्चिम बंगाल विस में नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी का आरोप

## ममता सरकार के कामकाज में दखल दे रही है आई-पैक

- राज्य सरकार की एक परियोजना 'आमादेर पाड़ा, आमादेर समाधान' से जुड़े प्रमुख डिजाइन संसाधनों के ड्राइव लिंक दिए गए थे

एजेंसी । कोलकाता

पश्चिम बंगाल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया है कि 2021 के विधानसभा चुनाव से अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (तृणमूल कांग्रेस) के लिए जनसंपर्क रणनीति बनाने वाली एजेंसी 'आई-पैक' अब राज्य सरकार के प्रशासनिक कामकाज में भी हस्तक्षेप कर रही है. भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता ने शुक्रवार सुबह सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक ईमेल का स्क्रीनशॉट साझा किया, जो कथित तौर पर आई-पैक के प्रतिनिधि आवेश सिंह ने राज्य सूचना एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के निदेशक और अतिरिक्त सचिव को भेजा था.

इस ई-मेल में राज्य सरकार की एक परियोजना 'आमादेर पाड़ा, आमादेर समाधान' से जुड़े प्रमुख डिजाइन संसाधनों के ड्राइव लिंक दिए गए थे. अधिकारी का दावा है कि यह सीधा प्रशासनिक दखल है. हालांकि इस स्क्रीनशॉट की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है. शुभेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पहले बांग्लादेशी मुस्लिम प्रवासियों को बसाने की अनुमति दे चुकी हैं और अब उन्होंने आई-पैक के लोगों को राज्य सरकार की प्रशासनिक सीमाएं लांघने की छूट दे दी है. उन्होंने सवाल उठाया कि एक निजी कंपनी का कर्मचारी किस तरह एक डब्ल्यूबीसीएस अधिकारी को, जो निदेशक स्तर के पद पर है, निर्देश दे सकता है.

### मीर यार ने ट्रंप को पत्र लिखा, कहा-बलूचिस्तान गणराज्य को मान्यता दें

**क्वेटा (बलूचिस्तान)।** बलूचिस्तान आंदोलन के सदस्य और मानवाधिकार रक्षक मीर यार बलूच ने अमेरिका से बलूचिस्तान गणराज्य को मान्यता और समर्थन देने का आग्रह किया है. मीर यार ने संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप को सात अगस्त को लिखे पत्र में कहा कि बलूचिस्तान गणराज्य पाकिस्तान और ईरान के अवैध कब्जे वाला प्राचीन और संप्रभु राष्ट्र है. दुर्लभ खनिज, तेल, गैस, हवाई अड्डों और समुद्री बंदरगाहों से समृद्ध होने के बावजूद यहां के लोगों का दमन हो रहा है. मीर यार बलूच ने इस पत्र को अपने एक्स हैंडल पर भी साझा किया है. बलूच ने लिखा, "पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल असीम मुनीर से आगामी यात्रा के दौरान पूछा जाना चाहिए कि पाकिस्तान किस कानून और नैतिक आधार पर बलूचिस्तान की प्राकृतिक संपदा पर अपना दावा करता है? मीर बलूच ने कहा कि मुनीर ऐसी संस्था का नेतृत्व करते हैं, जो बलूचिस्तान में आतंक फैलाते हैं.

## एसआईआर पर विपक्ष के हंगामे के बाद रास की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित

एजेंसी । नई दिल्ली

बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण और कांग्रेस के 'वोट चोरी' आरोपों सहित विभिन्न मुद्दों पर शुक्रवार को विपक्षी सदस्यों ने हंगामा किया, जिसके बाद राज्यसभा की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई.

राज्य सभा की कार्यवाही शुरू करते ही उपसभापति हरिवंश ने आवश्यक कागजात और रिपोर्ट्स सदन की पटल पर रखवाए. उसके बाद हरिवंश ने कहा कि आज उन्हें नियम 267 के तहत 20 नोटिस मिले हैं. आज के नोटिस में पांच अलग-अलग मुद्दे शामिल हैं, जिन पर सदस्यों ने कार्य स्थगन की मांग की है. ऐसा प्रतीत होता है कि नियम 267 के तहत नोटिसों का इस्तेमाल सदन में अव्यवस्था फैलाने के लिए किया जा रहा है. इसके बाद फिर हंगामा शुरू हो गया. तृणमूल कांग्रेस के नेता डेरेक ओ'ब्रायन ने कहा कि अगले सोमवार से विपक्ष द्वारा दिए जाने वाले सभी नोटिस एसआईआर मुद्दे पर होंगे.सीपीआई(एम) के जॉन ब्रिटास ने कहा कि नियम 267 को समाप्त कर दिया जाना चाहिए, जबकि कांग्रेस के प्रमोद तिवारी ने कहा कि विपक्ष चाहता है कि सदन चले और एसआईआर मुद्दे पर चर्चा हो. डीएमके के तिरुचि शिवा ने कहा कि नियम केवल कागज़ों पर ही नहीं, बल्कि व्यवहार में भी होने चाहिए. इस हंगामे को देखते हुए सभापति ने सभी से सदन चलने देने की अपील की. उन्होंने कहा कि अब तक सदन का 56 घंटे और 49 मिनट का समय बर्बाद हो चुका है. सत्र में अब तक केवल 13 तारांकित प्रश्न, पांच शून्यकाल प्रस्तुतियां और 17 विशेष उल्लेख ही लिए गए हैं. इसके कारण विपक्षी सदस्यों में हंगामा मच गया और सांसद नारे भी लगाने लगे. इसके बाद उपसभापति ने सदन की कार्यवाही दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी.

**मिला साथ** अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के आदेश के खिलाफ भारत को मिला चीन का साथ

# ट्रंप के घोषित टैरिफ का गलत इस्तेमाल हो रहा

- अमेरिका ने चीन पर लगाए गए 145 प्रतिशत टैरिफ को फिलहाल 90 दिनों के लिए स्थगित किया हुआ है.

एजेंसी । नयी दिल्ली

टैरिफ के मुद्दे पर अमेरिकी मनमानी के खिलाफ भारत को चीन का साथ मिला है. चीन ने कहा है कि अमेरिकी सरकार द्वारा टैरिफ का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है और हमारा इसके प्रति विरोध साफ है. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस से तेल खरीदने के लिए भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने संबंधी कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर कर दिए हैं. जिसके बाद अमेरिका द्वारा भारत पर लगाया गया कुल टैरिफ बढ़कर 50 प्रतिशत हो गया है. जब इसे लेकर चीन से प्रतिक्रिया मांगी गई तो चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने कहा कि 'टैरिफ के दुरुपयोग के प्रति चीन का विरोध सही और स्पष्ट है.'

**भारत ने अपनाया कड़ा रुख :** अमेरिका के टैरिफ लगाने के फैसले पर भारत ने कड़ी आपत्ति जताई. भारत ने आधिकारिक बयान में कहा कि अमेरिका का यह कदम अनुचित, अन्यायपूर्ण और गैरवाजिब है. भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि 'यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अमेरिका ने भारत पर ऐसे कदमों के लिए अतिरिक्त शुल्क लगाने का निर्णय लिया है जब कई अन्य देश भी अपने राष्ट्रीय हित में ऐसे कदम उठा रहे हैं. हम दोहराते हैं कि ये कदम अनुचित, अन्यायपूर्ण और अविवेकपूर्ण हैं. भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएगा.'

**चीन पर नरमी बरत रहे ट्रंप :** गौरतलब है कि अमेरिका ने रूस से कच्चा तेल खरीदने के चलते भारत पर टैरिफ लगाने का एलान किया है, लेकिन चीन भी बड़े पैमाने पर रूस से कच्चा तेल खरीदता है, लेकिन चीन के मुद्दे पर अमेरिकी राष्ट्रपति ने चुप्पी साधी हुई है.

अमेरिका और चीन के बीच व्यापार समझौते को लेकर बातचीत भी चल रही है. हाल ही में स्टॉकहोम में दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच व्यापार समझौते पर बातचीत भी हुई. अमेरिका ने चीन पर लगाए गए 145 प्रतिशत टैरिफ को फिलहाल 90 दिनों के लिए स्थगित किया हुआ है.

## दुष्कर्म के दोषी ऑस्ट्रेलियाई सांसद ने दिया इस्तीफा,दो युवकों से किया था दुष्कर्म

एजेंसी । नयी दिल्ली

ऑस्ट्रेलिया के एक राज्य सांसद ने शुक्रवार को इस्तीफा दे दिया. सांसद को दो युवकों से दुष्कर्म का दोषी पाया गया है और फिलहाल वह जेल में बंद हैं. दोषी सांसद को पद से हटाने के लिए सदन में शुक्रवार को मतदान होना था, लेकिन मतदान से कुछ क्षण पहले ही सांसद ने खुद इस्तीफा दे दिया. न्यू साउथ वेल्स राज्य के निर्दलीय सांसद गैरेथ वार्ड को जुलाई में दो युवकों के खिलाफ यौन अपराधों के लिए दोषी ठहराया गया था. हालांकि दोषी ठहराए जाने के बावजूद वार्ड ने अपनी सीट से इस्तीफा देने से इनकार कर दिया था.

**मतदान से कुछ समय पहले ही छोड़ा पद :** शुक्रवार को जब सांसद को पद से हटाने के लिए असेंबली में मतदान होना था तो वार्ड ने कानूनी दांवपेंच से इसे रोकने की कोशिश की, लेकिन जब यह कोशिश असफल रही तो वार्ड ने खुद ही इस्तीफा देने का फैसला किया. 44 वर्षीय वार्ड पर साल 2015 में एक संसदीय कार्यक्रम के बाद एक युवक का यौन उत्पीड़न किया था. वार्ड पर साल 2013 में भी यौन दुर्व्यवहार का आरोप लगा. बिना सहमति के यौन संबंध बनाने के एक मामले और अश्लील हरकतें करने के तीन मामलों में गैरेथ वार्ड को सितंबर में दोषी ठहराया गया है. पिछले हफ्ते वार्ड की जमानत रद्द हो गई थी, जिससे उन्हें जेल जाना पड़ा. हालांकि उन्होंने जेल में भी न्यू साउथ वेल्स सीट से इस्तीफा देने से इनकार कर दिया. वार्ड के इस कदम की खूब आलोचना हुई.

### चीन में बारिश के बाद बाढ़ में 10 लोगों की मौत

**नयी दिल्ली ।** चीन के उत्तर-पश्चिमी गांसू प्रांत के युजोंग काउंटी में आई अचानक बाढ़ में 10 लोगों की मौत हो गई है और 33 लोग लापता हैं. गुरुवार से हो रही तेज बारिश के कारण लान्झो शहर के पास पहाड़ी इलाकों में अचानक बाढ़ और एक भूस्खलन की घटना हुई है. यह जानकारी चीन के सरकारी मीडिया ने दी है. भारी बारिश के कारण शिंगलोंग पर्वतीय क्षेत्र में बिजली और दूरसंचार सेवाएं ठप हो गईं, जिससे चार गांवों में रहने वाले 4,000 से अधिक लोग फंस गए हैं.


स्वत्वाधिकारी लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप कुमार सिंह, क्वार्टर नंबर सी-90, पोस्ट-नावागढ़, थाना-बरोरा, हरिणा कॉलोनी, धनबाद-828306, झारखंड द्वारा फ्लैट नंबर 2ए, सेकेंड फ्लोर, सिंगारो मेनन अपार्टमेंट,चूना भट्ठा, एचबी रोड कोकर, नियर डिस्टिलरी पुल, बिरसा समाधि स्थल) रांची-834001, झारखंड से प्रकाशित और शिवसाईं पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, रातू, काठीटांड़, टेंडर बगीचा रातू, रांची - 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित. **संपादक : संजय कुमार सिंह.*** फोन नंबर 0651-2913385, 9142897989 (***पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार**).

आरएनआई नं : JHAHIN/2023/84487, ई-मेलः shubhamsandeshnews@gmail.com धनबाद ब्यूरो : ओजोन सेंटर,थर्ड फ्लोर, कमरा नं-306 अशोकनगर, बैंक मोड़, धनबाद-828106. फोन नं – 9431145133.ई मेल-sandeshsubham23@gmail.com.